Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओ३म्

जन ज्ञान

[मासिक]

अप्रेल १९८१
वैशाख १०[illegible]८

राजस्थान प्रदेशीय हिन्दू रक्षा सम्मेलन अजमेर में अध्यक्ष पद से भाषण देते हुए स्वामी जगदीश्वरानन्द ने कहा कि "भूखे मर जाओ पर ओ३म् का झंडा झुकने न दो।"

विशाल जन समूह को संम्बोधित करते हुए आप ने कहा कि हिन्दू की रक्षा मानवता की रक्षा है। इसलिए हिन्दू जागें और ईसालैंड व दारुल इस्लाम के स्वप्न को मिट्टी में मिला दें -

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्योतिर्मय व्यक्तित्व

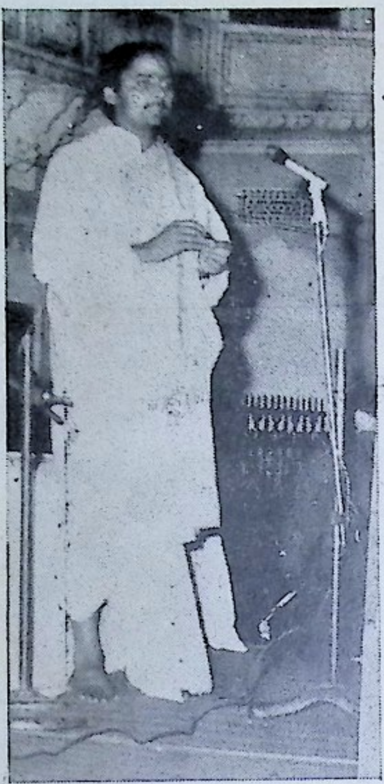

अजमेर में आयोजित हिन्दू रक्षा सम्मेलन, संयोजक युवा विद्वान प्रो० धर्मवीर, सम्मेलन आशा से अधिक सफलता से आरम्भ! परिचय व उद्देश्य बताने के लिए खड़े हुए धर्मवीर! श्रोता मंत्रमुग्ध, लगा सरस्वती का वरद पुत्र वीणा बजाकर सभी को जगा रहा है। १० मिनट में ही उन की भाषण कला ने सभी को प्रभावित किया।

सर्वोत्तम कोटि के वक्ता के रूप में, एक शांत, सुलझे उत्साही कर्मठ कार्यकर्ता के रूप में, निष्कपट त्यागी सेवक के रूप में, प्रो० धर्मवीर पर सभी भारतीय गर्व कर सकते हैं।

मुसलिम तीर्थ अजमेर में ३३ वर्षों में प्रथम बार हिन्दू का सिंहनाद धर्मवीर के ही अनुरूप था। बड़े-बड़े धर्मध्वजी नेता जब कायरों की भांति बगलें झांक रहे थे, यह युवक अपनी स्वास्थ्य चिन्ता से मुक्त निस्पृह भाव से दिन रात कार्य में जुटा था।

संस्कृत, साहित्य, व्याकरण, आयुर्वेद के आचार्य प्रो० धर्मवीर दयानन्द कालिज अजमेर में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष हैं। देश को उनसे भारी आशा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज न - ज्ञा न (मासिक)
सम्पादक
राकेशरानी

दूरभाष : ५६२६३६
५६६८६१
८०१२११
पता :
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग
करौलबाग, नई दिल्ली-११०००५
वार्षिक शुल्क : २० रुपये
विदेश में ६ पौंड : विमान से
३ पौंड : समुद्री डाक से
आजीवन : ३०१ रुपये
यह प्रति : २ रुपये
वैशाख संवत् २०३८
वर्ष १३ : अंक १२

शाश्वत सत्य और मानवता की रक्षा के लिए हिन्दू का संरक्षण आवश्यक

"हिन्दू" शब्द आज के परिवेश में उन सब बातों का प्रतीक बन गया है, जिनकी कल्पना वैदिक विचारधारा का चिन्तन करते हुए स्वयं हमारे ऋषि-मुनियों ने की थी।
२०० करोड़ वर्ष के पश्चात् कुछ असंगतियों के दर्शन उसमें आप को भले ही हों, किन्तु महान् संस्कृति के खंडहर रूप में 'हिन्दू' ही प्रभु की राह का साधक बन गया है।

आर्यावर्त्त देश की गरिमा न यवन समझता है न ईसाई। उसके गीतों का गायक तो 'हिन्दू' ही है। जन-जन में देश के प्रति भक्ति का स्रोत प्रवाहित करने का आधार, दर्शन-उपनिषद् का प्रसारक, वेद की ऋचाओं का गायक "हिन्दू" ही तो है। इस महान् शक्ति को संगठित कर हमें उस आसुरी लहर से टक्कर लेनी है, जिसने मतवाद और स्वार्थ को जन्म देकर पशुता की भावना को उभारा है।

जीवन की प्रबुद्ध भावना को जगाना, भारत मां के कण-कण के प्रति सर्वस्व समर्पण की भावना, गो-गंगा-गायत्री के गौरव पर अभिमान करने की साधना करने वालों को हम नमन करें। सत्य और अध्यात्म की लहरों की वन्दना करें। यह आज की मांग है।

आज आवश्यकता है कि हिन्दू को अजेय बनाकर हम धरती पर वैदिक संस्कृति के साम्राज्य का स्वप्न देखें। आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य का स्वप्न साकार करने संकल्प लेकर हम उभरें और काम करें।

राम-कृष्ण-शंकर-शिवा-प्रताप-दयानन्द की पावन स्मृतियां हमारी प्रेरणा हैं। विजय हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। इसलिए हम अजेय हैं। हम जीतेंगे, सच जीतेगा। रामराज्य का सपना साकार होगा और जो असुर दल हिन्दू को नष्ट करने की चाह लेकर भारत आए हैं, उनकी आसुरी भावना नष्ट कर वैदिक विचार गंगा से उन्हें पूत पावन बना हम नये ऐसे भारत का निर्माण करेंगे, जिसमें न चोर होंगे, न व्यभिचारी, न कोई भूखा सोएगा, न नंगा! सबकी समानता, सबका उत्कर्ष, सबकी कल्याण कामना लेकर बलि पथ पर हम चल रहे हैं।

—राकेशरानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुसलमानों द्वारा होमलैंड की मांग करने पर भी आप की नींद नहीं खुलेगी ?

मैं हवन मन्दिर से लिख रहा हूँ ~

हमें मृत्यु स्वीकार है—इसलिए कि धर्म, आप और मानवता जीवित रह सकें

किसी की मृत्यु ही किसी के जन्म का कारण बनती है। बातों-नारों-प्रस्तावों से कोई युद्ध कभी नहीं जीत जा सकता। इसलिए आज की स्थिति में विजय-वरण के लिए कुछ ऐसे पुण्यात्मा चाहिएं जो मरने को तैयार हों, इसलिए कि देश-धर्म-मानवता विजयी हो !

परिस्थितियां तीव्रता से बदल रही हैं। मूक दर्शक बनकर देखने वाले व्यक्ति कुछ न कर सकेंगे, अब तो 'करो या मरो' की आवाज़ हमारे कानों में गूंज रही है। चारों ओर से शत्रु-सेनाएं अपने व्यूह बनाकर बढ़ रही हैं। स्थान-स्थान पर केन्द्र बनाकर 'हिन्दू' को आत्मसात् करने के लिए 'वे' कार्य में लगे हैं और देश के ६० करोड़ हिन्दू सो रहे हैं।

१—बिहार और उत्तरप्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा पद पर प्रतिष्ठित कर दिया गया है।

२—हैदराबाद में विशाल इस्लामी सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसमें समस्त पिछड़े वग को मुसलमान बनाने की योजनाएं बनीं।

३—अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में राष्ट्रगान पर आपत्ति उठाई गई।

४—हिमाचल को ईसालैंड बनाने के लिए हजारों पादरी पहुंच गये।

५—अल्पसंख्यक आयोग ने सेना व पुलिस में आरक्षण देने का प्रस्ताव किया।

६—स्थान-स्थान पर मुस्लिम मदरसे खुल रहे हैं।

ये कुछ सूचनाएं है जिन्हें पढ़कर आप कुछ सोचें या न सोचें लेकिन हमारी आंखों की नींद और मन का चैन समाप्त हो चुका है।

षड्यन्त्रों की बाढ़, शासन की उपेक्षा और बंटवारे की नीति हमारी स्वतन्त्रता, एकता और राष्ट्रीय भावना के लिए एक प्रबल चुनौती बन गयी है। सारा भारत ज्वालामुखी के मुख पर बैठा है। अभी कल ही एक समाचार दक्षिण से आया कि १००० हिन्दू मुसलमान बन रहें हैं। दौड़ो, उन्हें बचाओ।

आप से ही पूछता हूं कि बताओ हम क्या करें ? आप को तो आराम चाहिए, धन संग्रह चाहिए। स्वार्थपूर्ति चाहिए ! फिर कौन बचाएगा सर्वस्व ? किसे प्यार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है भारत मां से ? कहां है वे लौह लाड़ले, जिन्होंने आजादी के लिए फांसी के फन्दे चूमे थे···आज आज़ादी की रक्षा के लिए क्यों नहीं हम आगे आते ?

हम सारे भारत के नागरिकों के लिए समानता की बात करते हैं, तो हम अपराधी हैं और वे जो कुर्सी पर बैठे हुए कुर्सी के लिए विघटन की आग भड़काते हैं, देशभक्त हैं ? कैसी विडम्बना है यह !

सबको कुर्सी प्यारी है। पार्टी, दल, पहले—देश बाद में, व्यामोह है यह, कैसी हवा चल रही है आज, हम सोच रहे हैं और रो रहे हैं। शायद ही हमारा रुदन भी कोई सुन पाएगा। मरने पर कफ़न डालने वाले भी नहीं मिलेंगे, क्योंकि हम आज के युग में उल्टी बातें करने वाले पागल जो हैं।

आप पढ़ेंगे इन पंक्तियों को, पर क्या करेंगे आप ? कब जागेंगे आप ? कब उठेंगे आप ? कब टूटेंगी बंधी लकीरें ? कब बजेगा, शंख ? संघर्ष का निमंत्रण कौन स्वीकार करेगा ?

बहुत कुछ करने को मन करता है, पर कौन साथी है। क्रांति की मशाल थमाने वाले हाथ इतने कोमल हो चुके हैं कि वे क्रांति शब्द सुनकर चक्कर खा जाते हैं। बड़े-बड़े पहलवान नेता बगले झांक रहे हैं या मंत्री पद के लिए मां को दांव पर लगा रहे हैं।

हम चिल्ला सकते हैं, रो सकते हैं, पुकार सकते हैं पर आप के मन को तो नहीं बदल सकते ? अधिक से अधिक हम अपना जीवन ही तो दे सकते हैं। पर फिर भी क्या आपकी नींद खुलेगी ?

नींद न टूटी तो फिर क्या बचेगा, मेरे भाई ! सोचो और जागो ! स्वयं सिंह बनकर उठो और उस चुनौती को स्वीकार करो जो आज विदेशी धन के बल पर हमें मिटाने के लिए दी गयी है।

आप जहां भी हों, जैसे भी हों, जितनी भी आपकी शक्ति हो, उस के अनुसार कार्य में लग जाएं। विजय आपको मिलेगी, यह विश्वास मन में धारण कर आगे आइए। यह मेरी प्रार्थना है।

मेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं। जो कुछ प्रतिबंधित था, सब तोड़ दिया। अब जीने की चाह नहीं। मृत्यु को निमंत्रण देकर दिन-रात अलख जगा रहा हूं। सोचता हूं शायद मेरी आहुति ही यज्ञ की सफलता का साधन बन सके।

अजमेर सम्मेलन

१४ मार्च को अजमेर नगरी में राजस्थान प्रदेशीय हिन्दू रक्षा सम्मेलन सम्पन्न हुआ। वयोवृद्ध हिन्दू नेता प्रो० रामसिंह ८६ वर्ष की आयु में भी दो बार अजमेर गए। मैं उनका अत्यन्त आभारी हूं।

सम्मेलन की सफलता का अधिकांश श्रेय प्रिय शशिकान्त आर्य को जाता है। आपने निरंतर एक माह तक अनवरत कार्य कर सम्मेलन को सफल बनाया। यदि ऐसे २-४ युवक कअपना जीवन राष्ट्र को अर्पित कर दें, तो देश का कायाकल्प हो सकता है।

दयानन्द कालिज संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो० धर्मवीर सम्मेलन के संयोजक थे। उनकी सतत साधना और व्यक्तित्व ने सम्मेलन को गरिमा प्रदान की।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनकी वाणी में सरस्वती और हृदय में भावनाओं का जो सतत प्रवाह है उस पर जितना भी गर्व किया जाए, थोड़ा है।

श्री प्रो० देवशर्मा, श्री मुनीश्वर और श्री मंजुनाथ शास्त्री का श्रम-सहयोग भी अभिनन्दनीय था। डा० सूर्यदेव शर्मा का आशीर्वाद और मार्गदर्शन भी सम्मेलन को मिलता रहा।

माननीय श्री दत्तात्रेय वाव्ले ने हमारे विचारों से पूर्णतया सहमत न होते हुए भी सम्मेलन में पधारने वालों के आतिथ्य का प्रबन्ध किया। उनके बिना भी सफलता सम्भव न थी।

श्रीमती ज्योत्स्ना जी ने १०-१५ दिन तक अभ्यागतों के निवास-भोजन की जो सुन्दर व्यवस्था की, वह स्मरणीय रहेगी। सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष डा० श्री-गोपाल बाहेती ठीक समय पर पार्टी से भय खाकर घर बैठ गए। हम उनके भी आभारी हैं। विशेषत: उनके भी जो हिन्दू नेता का स्वांग भरकर वर्षों से जनता को बहकाते रहे हैं, पर ठीक समय पर सभा स्थल पर आने में जिन्हें मूर्छा-सी आने लगी।

न्याय व नवज्योति दोनों दैनिक पत्रों ने प्रचार में जो सहयोग दिया, उसके लिए उनके संचालकों, और सम्पादकीय विभाग का धन्यवाद। वस्तुत: सम्मेलन का प्रचार-प्रसार उनके द्वारा ही सम्भव हुआ। सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी जगदीश्वरानन्द जी, प्रमुख वक्ता श्रीइन्द्रसेन जी—सभी ने हमारी प्रार्थना स्वीकार की। हार्दिक आभार!

हम देश की जनता का मानस टटोल रहे हैं। ८० प्रतिशत जन हमारे साथ हैं। हमारी मांगों का स्टेज पर विरोध जनसमूह में करना आज संभव नहीं। जन-जन का आशीर्वाद मिल रहा है, मिलेगा, यह विश्वास हमने राजस्थान से पाया और यही इस सम्मेलन की महान् उपलब्धि है।

हिन्दू रक्षा सम्मेलन आयोजित करें

आप भी अपने क्षेत्र में हिन्दू रक्षा सम्मेलन उत्साह से आयोजित करें। केन्द्रीय समिति आपको पूर्ण सहयोग देगी।

जन-जागरण के लिए प्रतिमास ४ सम्मेलन हों। कम से कम एक मास पूर्व तिथि निश्चित कर केन्द्र की स्वीकृति से सम्मेलन का आयोजन आप भी करें। यह हमारी इच्छा है।

स्फुलिंग जाग रहे हैं।
चेतना उभर रही है।
जन मानस हमारे साथ है--
वीरो! उठो और गाण्डीव संभालो!

अनुभव हो रहा है कि निराशा की घड़ियां समाप्त हो चुकी हैं। सारा देश असन्तोष का ज्वालामुखी बन चुका है। हमने जिससे भी बात की है उसने घोषणाओं और मांगों के प्रति सहानुभूति प्रकट की है, भले ही वह खुलकर सामने आने को तैयार न हो।

स्वतंत्रता के ३३ वर्ष बीतने के बाद आज वह समय आ पहुंचा है जब हमें स्वतंत्रता को वरदान बनाने के लिए एक सबल संघर्ष और करना होगा। कुर्सी के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मोह स्वार्थ के प्रवाह में एक बार फिर त्याग और बलिदान का मार्ग ग्रहण करना होगा।

स्वतंत्रता के वाद समाजवाद, धर्मनिरेपक्षता और साम्प्रदायिक तुष्टीकरण की नीति पर प्रवल प्रहार करने की आवश्कता आज सभी अनुभव कर रहे हैं। हिन्दी, हिन्दू और प्राचीन परम्पराओं की उपेक्षा, सीमाओं की उपेक्षा, विभिन्न वर्णों के लिए अलग-अलग नीतियां अब और अधिक सहन करना संभव नहीं रह गया।

आवश्यकता इस वात की है कि सारा देश एक सुनियोजित ढंग से इस मनोवृत्ति का विरोध करे। छुट पुट ढंग से किए विरोध का लाभ वर्तमान सड़ी-गली-स्वार्थी राजनैतिक पार्टियां उठाती हैं और सारे प्रयत्न व्यर्थ हो जाते हैं।

हिन्दू रक्षा समिति धीरे-धीरे किन्तु ठोस आधार पर वर्तमान को बदलने के लिए कृतसंकल्प है। उसकी मांगें, उसका लक्ष्य सर्वमान्य है। क्रांति का आधार व्यक्ति नहीं सिद्धान्त होते हैं। हमारा प्रयत्न मान्यताओं को वदलने का है, पार्टियों को नहीं। यही इच्छा है कि हम सारे देश की, परम्पराओं की और एकता की रक्षा कर सकें। विदेशी तत्वों को कोई अधिकार नहीं कि वे यहां आकर हमारे कार्यों में हस्तक्षेप करें।

इसलिए हम कहते हैं, निराशा मिटा दो, जला दो सारे सड़े-गले-थोथे नारे, और हिन्दी-हिन्दू-हिन्दुस्तान की जय के नारे के साथ उठ खड़े हो जाओ।

गो-गंगा-गायत्री की रक्षा का व्रत लेकर, सिर पर कफ़न बांध निर्भीक युवकों की टोलियां जिस दिन सत्य का ब्रह्मास्त्र लेकर शंख बजायेंगी, उस दिन स्वराज्य वरदान बनकर मेरे भारत का कायाकल्प कर देगा।

अग्नि प्रज्वलित हो चुकी है, वह मांग रही है बलिदान वीरों का, युवकों का। प्रतीक्षा है अर्जुन की, राम-कृष्ण के उत्तराधिकारियों की। संकट की घड़ियां शीघ्र समाप्त होंगी, यह अटल विश्वास ही हमें जीवन दे रहा है।

अपनी आहुति

चैत्र कृष्ण अष्टमी (२६ मार्च) जीवन का एक स्मरणीय दिवस। सोच रहा हूं कि औरों से वलिदान चाहता हूं; मैं क्या हूं? भौतिक दृष्टि से मेरे पास कुछ नहीं है। मेरी अगली पीढ़ी में भी ऐसा कोई नहीं, जो मेरे संकेत पर यज्ञ में प्राण अर्पित कर सके।

मैं १ वर्ष ४ माह से रुग्ण हूं (पोर्टल हाइपरटेंशन से)। इस रोग की स्थिति डाक्टर समझ सकते हैं। फिर भी प्रभु ने मुझे समय दिया और मैं इस वर्ष में और भी अधिक सक्रिय बनकर दिन-रात कार्य कर रहा हूं।

देश बलिदान चाहता है, हमने जीवन का प्रत्येक क्षण अर्पित किया हुआ है। फिर भी हमारी पुकार का असर नहीं होता, लगता है अभी तपस्या में कमी है।

अत: प्रभु प्रेरणा से अनिश्चित काल के लिए मैं २६ मार्च की संध्या से अन्न-मीठा त्यागकर जीवन चलाने का प्रयत्न करूंगा। दूध तो डाक्टरों ने पहले ही सपरेटा क्रीम निकला कर बता रखा है। अत: उसके और कन्द-मूल के सहारे जीवन चलाने का प्रयत्न करूंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरा मुझ में कुछ नहीं,
जो कुछ है सो तौर !

मृत्यु तो अनिवार्य है, यह सत्य जानते हुए भी मृत्यु से भीत रहने का सभी का स्वभाव है बन गया है। लोग समझते हैं कि हमने सदा सदा के लिए यहीं रहना है। इसीलिए भौतिक आकर्षण उन्हें घेरे रहते हैं।

हम चाहते हैं कि सभी यह तथ्य समझें और यहां रहते हुए भी मोह की मदिरा के प्रभाव से बचें। प्राणों की पीड़ा के स्वर गुंजाता रहा हू। कोई सुने न सुने। कर्म करना अपने हाथ में परिणाम प्रभु के।

प्रभु का आशीर्वाद और आपका स्नेह हमारी पूंजी है। वह मिलेगा, इसी विश्वास से अलख जगा रहा हूं। आपकी शुभकामनाएं चाहता हूं।

आर्यसमाजों से

प्रत्येक आर्यसमाज जो उत्सव रखे, वह एक दिन रात्रि में हिन्दू रक्षा सम्मेलन अवश्य रखें। जो हिन्दू रक्षा सम्मेलन से चौंकें वे राष्ट्र रक्षा-सम्मेलन रखें।

इस सम्मेलन में नगर की सभी हिन्दू संस्थाओं के प्रतिनिधियों को बुलाएं, १२ मांगें प्रस्तुत करें और जनता को सारी समस्याओं से परिचित कराएं।

ईसाई षड्यन्त्रों के विरुद्ध, मुस्लिम मनोवृत्ति के विरुद्ध तीव्र प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए अपनी बातें सभी को समझाएं।

आर्यसमाज ने १८५७ के बाद हिन्दू धर्म की रक्षा की थी। आज भी उसे इस विषय में अग्रणी रहकर भारत मां की रक्षा का व्रत लेना चाहिए।

मेरा दर्द न जाने कोय !

खून बहता है, बदन से,
पर मैं कह नहीं सकता।
दर्द इतना है बढ़ा अब तो
कि मैं सह नहीं सकता,
तड़पता हूं, रोता हूं, पर सब कहते हैं
कि इसे कुछ हो नहीं सकता।
अकेली राह पर चलना,
न कोई भी साथी, न कोई भी अपना,

जो सोचा था, उसे देखा,
लगा है आज वह भी तो
फकत सपना, अजब सपना !
उलझती देख कर मंजिल, रुक जाऊंगा मैं ?
तुम बिछाओगे कांटे, तो झुक जाऊंगा।
समझते हो कमजोर, यह नादानी नहीं क्या ?
सबकुछ जलजाएगा, तबभी मुस्कराऊगा मैं।

नए पाकिस्तान की मांग

हैदराबाद में मुसलमानों ने ऐसे पोस्टर लगाए हैं जिनमें अलग होमलैंड की मांग की गयी है। आप स्वयं अपना कर्तव्य सोचें—

—वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू रक्षा समिति ने आरक्षण के विरुद्ध बिगुल बजा दिया

अजमेर सम्मेलन में हिन्दू नेताओं द्वारा मार्गदर्शन

सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती अध्यक्षीय भाषण देते हुए।

(हमारे कार्यालय प्रतिनिधि से)

अजमेर। मार्च महीने के द्वितीय शनिवार को यहां सभा-सम्मेलनों की धूम रही। उस दिन सरकारी छुट्टी थी, इसलिए प्रायः सभी सभास्थलों पर भारी भीड़ देखने में आई।

इन आयोजनों में राजस्थान प्रदेश हिन्दू रक्षा समिति की ओर से आयोजित हिन्दू रक्षा सम्मेलन उल्लेखनीय है। बूंदाबांदी के बावजूद विशाल जन-समूह ने १४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[मार्च को सायंकाल सात बजे से रात १० बजे तक हिन्दू नेताओं के उत्साहवर्धक, प्रेरक और ओजस्वी विचार सुने।

सम्मेलन आर्यसमाज केसरगंज के बाहर खुले मैदान में हुआ। मंत्रपाठ के पश्चात् सबसे पहले दिल्ली से आये हिन्दू नेताओं का परिचय कराया गया और पुष्पमालाओं से उनका स्वागत किया गया। तत्पश्चात् इन नेताओं और स्थानीय कार्यकर्त्ताओं ने, जिन्होंने सम्मेलन को सफल बनाने के लिए रात-दिन एक कर दिया था, अपने विचार प्रकट किये।

अखिल भारत हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष, दयानन्द संस्थान के संस्थापक और आचार्य व सम्मेलन के मुख्य अतिथि महात्मा वेदभिक्षु: जी ने अपने आध घंटे के उद्बोधक भाषण में विस्तार से बताया कि हिन्दू समाज को कैसे-कैसे संकटों का सामना करना पड़ रहा है। उन्होंने दर्द-भरे शब्दों में कहा कि हमारे देश में जिस भी दल का शासन रहा, उसने वोट बटोरने के लिए हिन्दू समाज का शोषण किया और अल्पसंख्यकों को अनुचित रिआयतें दीं। "आज भी मजहब के नाम पर फूट डाली जा रही।" उन्होंने चेतावनी दी कि यदि यही हाल रहा, तो एक बार फिर सन् १९४६ की-सी स्थिति पैदा हो जायेगी।

श्री दत्तात्रेय बाब्ले
अजमेर में स्थापित अनेकों शिक्षण-संस्थाओं के संचालक

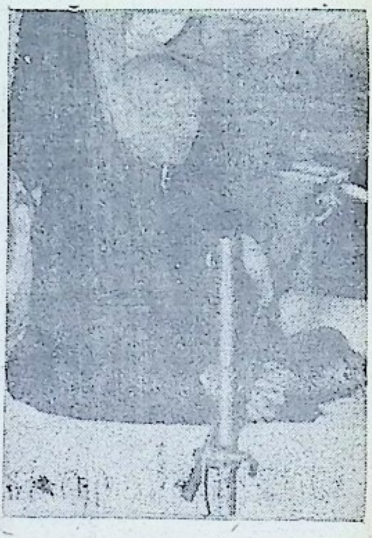

प्रो० रामसिंह
८८ वर्षीय क्रान्तिकारी हिन्दू केसरी आप का नेतृत्व ही हिन्दुओं की रक्षा कर सकता है।

महात्मा जी ने कहा कि देश की एकता खतरे में है। मक्का में झगड़ा होता है, तो मुसीबत आ जाती है भारतवासियों की। दलीय हितों की वेदी पर राष्ट्रहित का बलिदान किया जा रहा है। हमारी मांग है कि साम्प्रदायिक तत्त्वों को पूरी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शक्ति से कुचल दिया जाये; वर्ग, सम्प्रदाय, मज़हब, प्रदेश और भाषा के नाम पर अधिकार मांगना देशद्रोह समझा जाये; देशद्रोह के अपराधियों को मृत्युदंड दिया जाये; सेना, पुलिस और प्रशासन में ज़ातपात और सम्प्रदाय के आधार पर भरती की नीति तुरन्त समाप्त की जाये और पाकिस्तानी नागरिकों व विदेशी पादरियों को तुरन्त वापस भेजा जाये।

राजस्थान प्रदेशीय हिन्दू रक्षा सम्मेलन में प्रस्ताव उपस्थित करते हुए आप ने घोषणा की कि यदि पुलिस व सेना में आरक्षण की नीति अपनायी गयी तो सारी देशभक्त जनता इसका प्रबल विरोध करेगी।

श्री वेदभिक्षुः

महात्मा जी ने कहा बिहार और उत्तरप्रदेश में उर्दू द्वितीय राजभाषा घोषित कर दी गई है। यह कोई साधारण घटना नहीं। यदि इसका विरोध न किया गया, तो राजस्थान और दिल्ली में भी यही कुछ होगा। देश-भर में बारह मुस्लिम विश्वविद्यालय स्थापित किये जा रहे हैं। एक अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय ने पाकिस्तान बनवाया और वह अब तक उपद्रवों और उत्पातों को जन्म दे रहा है; यदि कहीं बारह और बन गये, तो क्या होगा? किस-किस बात का जिक्र किया जाये? हर बात में हिन्दुओं को दबाया जाता है। उनसे अन्याय होता है। उनकी उपेक्षा होती है—उनका अपमान होता है। असम की समस्या को तोड़-मरोड़ कर पेश किया जाता है। वोटों की खातिर विदेशियों को निकाला नहीं जाता। इस आशय की मांग करने पर कहा जाता है कि विभाजन के समय हिन्दू शरणार्थी भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो पाकिस्तान से यहाँ आकर बसे थे। हमारी मांग है कि इन विदेशियों को निकाला भले ही धीरे-धीरे जाये, लेकिन मताधिकार से तुरन्त वंचित कर दिया जाये। हमारी मांग है कि अल्पसंख्यक आयोग भंग किया जाये। क्या तमाशा है कि आये दिन इस आयोग का अध्यक्ष बदलना पड़ता है! यह आयोग करेगा क्या, जबकि इसके सदस्यों में ही मतैक्य नहीं? इसकी आवश्यकता क्या है? इसी प्रकार संविधान में धारा ३७० की क्या आवश्यकता है? स्वयं स्वर्गीय प्रधानमन्त्री नेहरू जी ने कहा था कि धारा ३७० घिसते-घिसते घिस जायेगी। क्या वह अभी तक पूरी तरह नहीं घिसी, जोउसे संविधान से नहीं निकाला जा रहा?

वयोवृद्ध हिन्दू नेता प्रो० रामसिंह ने कहा कि भारत में मुसलमानों की बढ़ती जनसंख्या पर रोक लगाई जानी चाहिए। इसके लिए एक पत्नी का कानून उन पर भी लागू होना चाहिए और यदि नसबन्दी करनी है, तो सब वर्गों के लोगों की होनी चाहिए। आरक्षण की नीति का अन्त होना चाहिए और नागरिक कानून सब पर एक समान लागू होने चाहिए।"

प्रसिद्ध हिन्दू संन्यासी और वैदिक विद्वान् स्वामी जगदीश्वरानन्द जी सरस्वती ने सभापति पद से अपने विचार प्रकट करते हुए हिन्दुओं से यह प्रण करने को कहा कि भूखे मर जायेंगे, लेकिन सरकार के दबाव में आकर नसबन्दी नहीं करायेंगे। "कैसी अजीब सरकार है! मुसलमानों की चार-चार बीवियां होने के बावजूद उन्हें कुछ नहीं कहती और हिन्दू के दो बच्चे हो जायें, तो उस बेचारे की नसबन्दी करदी जाती है।" स्वामी जी ने इस बात पर खेद और आश्चर्य प्रकट किया कि आज भी इस हिन्दू देश में हिन्दू रक्षा सम्मेलन आयोजित करने की आवश्यकता पड़ती है।

दयानन्द कालेज अजमेर के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष प्रो० धर्मवीर, दयानन्द हायर सैकंडरी स्कूल के अवकाश-प्राप्त प्रिंसिपल श्री मंजुनाथ शास्त्री, दिल्ली के श्री इन्द्रसेन शर्मा आदि ने भी अपने विचार प्रकट किये।

संवाददाता सम्मेलन

सम्मेलन की पूर्व-सन्ध्या को आयोजित संवाददाता सम्मेलन में महात्मा वेद-भिक्षुः जी ने विस्तार से बताया कि भारत के इस्लामीकरण के लिए मुस्लिम देशों से किस-किस रूप में धन आ रहा है। उन्होंने बताया कि मुरादाबाद में अरब देशों को ईंधन के रूप में निर्यात किये जाने वाले एक कंडे (उपले) के लिए लगभग दस रुपये (एक डालर) वसूल किये जाते हैं। "यह विदेशी धन प्राप्त करने का एक तरीका है।"

महात्मा जी ने गुजरात में आरक्षण के विरोध में चल रहे आन्दोलन का समर्थन करते हुए हिंसात्मक कार्रवाइयों का विरोध किया, लेकिन साथ ही कहा कि यदि सरकार ने सेना और पुलिस में भी आरक्षण चालू किया, तो समिति हिंसा-अहिंसा की चिन्ता किये बिना इसके विरुद्ध आन्दोलन छेड़ देगी। प्रो० रामसिंह ने भारत के संविधान की धारा ३० को समाप्त कर जातिगत आधार पर आरक्षण नीति का अन्त करने और आरक्षण को आर्थिक आधार पर लागू करने की मांग की। उन्होंने पिछड़ी जातियों की उन्नति के लिए उन्हें हर प्रकार का सहयोग देने का समर्थन किया, लेकिन साथ ही यह भी कहा कि पिछड़े वर्ग के राजपत्रित अधिकारी को

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिछड़े वर्गों को दी जा रही सुविधाएं नहीं दी जानी चाहिए, जबकि निर्धन ब्राह्मण अथवा वैश्य को ये सुविधाएं मिलनी चाहिए, ताकि वह उन्नति कर सके।

१६ मार्च को दिल्ली लौटने से पूर्व प्रो० रामसिंह ने समाचारपत्रों के नाम जारी एक वक्तव्य में यह बात स्पष्ट की कि हिन्दू रक्षा समिति किसी वर्ग की विरोधी नहीं। उसकी कोई राजनैतिक महत्त्वाकांक्षाएं भी नहीं। वह तो चाहती है कि भारत के सब नागरिकों को समान समझा जाये। आरक्षण नीति की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि ज़रा आप उस स्थिति की कल्पना कीजिए, जब एक हरिजन मातहत, जिसके लिए उन्नति के सब द्वार खुले हैं और सीटें तक सुरक्षित हैं, उन्नति की सीढ़ियां चढ़ता-चढ़ता उच्चाधिकारी बन जाता है और एक सवर्ण अधिकारी को अपने अपेक्षाकृत निम्न पद पर ही रहकर उसी हरिजन के मातहत काम करना पड़ता है, जो कुछ समय पूर्व तक उसके नीचे का काम करता था। प्रोफैसर साहब ने पूछा कि ऐसी स्थिति में सरकारी कार्यालयों में अनुशासन और व्यवस्था कैसे कायम रह सकती है? ●

बहिन से !

—हरिमोहन कोठिया, आगरा

(मार्च १९८१ अंक में प्रकाशित बहिन राकेशरानी की कविता "तुम पहन लो चूड़ियाँ" का उत्तर)

क्यो पहन लें चूड़ियाँ हम,
हाथ में राखी तुम्हारो !
चिर निरंतर साधना की,
जल रही ज्योति हमारो ॥

धार कर तलवार तुमने,
युद्ध भूमि से पुकारा।
तो न भगिनी हम रुकेंगे,
याद है कर्त्तव्य सारा ॥

तुम विजय का तिलक कर दो,
स्नेह-बंधन बाँध कर में !
ओज-पूरित भावना का,
मान दो समवेत स्वर में ॥

यह न समझो भरत के सुत,
आज कायर हो गये हैं।
यह न समझो इस धरा के,
वीर बेटे सो गये हैं ॥

धीरता-गम्भीरता को,
तुम न सोना मात्र जानो !
शांत सागर की तरंगों को,
न कायर-पात्र मानो ॥

जब उठेगा ज्वार तब,
झकझोर देंगे हम जमाना।
सिंह स्वर में गा उठेंगे,
हम नया भैरव तराना ॥

"शक्ति" बनकर तुम बढ़ो,
"तूफान" बनकर हम मिलेंगे।
"रण-निमंत्रण" को बहिन हम,
हर्ष से स्वीकार लेंगे ॥

राष्ट्र की "आत्मा" बहिन तुम,
"हाथ" बनकर हम खड़े हैं।
शत्रु को अवसर न देंगे,
हम हिमालय से बड़े हैं ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सामयिक विचार

भारत का इस्लामीकरण

—सत्यपाल शास्त्री

हैदराबाद में जमाते इस्लामी के छठे अधिवेशन में मौलाना मुहम्मद यूसुफ ने सभापति पद से जो भाषण दिया, उससे पता चलता है कि जमात भारत समेत ऐसे सभी देशों का इस्लामीकरण चाहती है, जहां मुसमान अल्पसंख्या में हैं। जमात ने इस कार्य के लिए मुस्लिम बहुसंख्या वाले राष्ट्रों से आर्थिक सहायता की मांग की है।

अधिवेशन के लिए हैदराबाद से दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित पहाड़ी शरीफ नामक एक बंजर स्थान चुना गया। जमात ने इस स्थान की ६० एकड़ भूमि खरीद ली है, जिसका नाम वादिये हुदा (हिदायत देने वाली घाटी) रखा गया है। सम्मेलन २१ से २३ फ़रवरी तक चला। अधिवेशन के अन्तिम दिन हिजरी सन् का समारोह मनाया गया। इसमें मुस्लिम लीग के सुलेमान सेठ सदृश नेता भी सम्मिलित हुए और देश के उपराष्ट्रपति मुहम्मद हिदायतुल्ला, प्रधानमत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी, विदेशमत्री श्री पी. वी. नरसिंह राव, अनेक राज्यों के राज्यपालों, मुख्य मंत्रियों आदि ने इस्लाम की प्रशंसा में अनेक बधाई सन्देश भेजे।

जमाते इस्लामी भारत में राजनैतिक दल नहीं है, लेकिन कशमीर में राजनैतिक दल है। इसका कारण यह है कि कशमीर में मुसलमान बहुसंख्यक हैं, इसलिए वह दारुल-अमन अथवा दारुल इस्लाम है, जब कि शेष भारत में मुसमान अल्पसंख्यक हैं, इसलिए वह दारुल हरब है और उसे पहले दारुल अमन और उसके बाद दारुल इस्लाम बनाना है। जब सारा देश दारुल अमन अथवा दारुल़ इस्लाम बन जायेगा, तब यहां भी जमात खुलकर राजनीति में कूद पड़ेगी।

जमात ने कुछ गैर-मुस्लिमों को भी फांस लिया है। दिल्ली विश्वविद्यालय के बौद्ध धर्म अध्ययन विभाग के प्रोफेसर किर्मसिंह ने अधिवेशन में अपने विचार प्रकट करते हुए कहा कि औरंगजेब ने बड़े पैमाने पर हिन्दू मुस्लिम एकता स्थापित की, लेकिन शिवाजी ने इस उद्देश्य को पूर्ण न होने दिया। उन्होंने यह भी कहा कि शिवाजी हिन्दू-मुस्लिम एकता के मार्ग में सबसे बड़ा रोड़ा था। कानपुर के श्री गौरीशंकर एडवोकेट ने कहा कि शिवाजी अंग्रेजों के एजेण्ट थे। अंग्रेजों ने भारत में अपनी जड़ें जमाने के लिए शिवाजी का पूरा उपयोग किया। यदि शिवाजी और औरगजेब में मुठभेड़ न होती, तो अंग्रेज कभी भी इस देश की धरती पर अपनी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्ता स्थापित करने में सफल न हो पाते। प्रायः सभी वक्ताओं ने मुगल बादशाही को हिन्दू-मुस्लिम एकता का मसीहा बताया। चौबीस परगना (पश्चिम बंगाल) के डाक्टर एन. सानसिंह ने कहा कि भारत में मुगलों का युग शान्ति, चैन और हिन्दू-मुस्लिम एकता का युग था। औरंगजेब को हिन्दुओं का शत्रु बताकर मुफ्त में बदनाम किया जाता है। महाराणा प्रताप ने राजपूतों को मुसलमानों के विरुद्ध उकसाया और भड़काया करते थे। राजपूतों की इस अदूरदर्शिता के कारण हिन्दू-मुस्लिम सम्बन्धों में, जो दृढ़ हो रहे हैं थे, दरार पड़ गयी। परिणाम यह हुआ कि हमारा देश मुसलमानों की एक महान देन से वंचित हो गया।

प्रश्न यह है कि इन प्रोफेसरों ने जिस प्रकार विचार प्रकट किये हैं, क्या उनसे हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित होने में सहायता मिलेगी? क्या किसी को अपमानित करके राष्ट्रीय एकता का मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है? इस प्रकार के भाषणों से तो बहुसंख्यकों के हृदय में मुसलमानों के प्रति सन्देह के भाव पैदा होते हैं।

आरक्षण और बाबू जगजीवनराम

'जन ज्ञान' के इसी अंक में आरक्षण के सम्बन्ध में डाक्टर सत्यपाल का एक लेख प्रकाशित किया जा रहा है, जिससे पाठक सही मार्ग दर्शन प्राप्त कर सकते हैं। यह इस देश का दुर्भाग्य है कि राजनीतिबाज समस्या की जड़ को टटोलने की बजाय आन्दोलन की आग पर अपने स्वार्थ की रोटियां सेकने का प्रयास कर रहे हैं। गांधी युग के वयोवृद्ध नेता बाबू जगजीवनराम गुजरात जाकर उसके घावों पर सद्भाव का मरहम लगाने के बजाय उस पर जातिवादी विष का नमक छिड़क आये। उन्होंने गुजरात की स्थिति का अध्ययन करने के नाम पर एक दिन के लिए गुजरात जाकर अपने आप को हरिजन नेता के रूप में उभारने की कोशिश की और एक प्रकार से वर्ग युद्ध या जाति युद्ध का आह्वान कर डाला। संवाददाता सम्मेलन में एक संवाददाता के प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि वे जाति युद्ध का स्वागत करेंगे, ताकि एक बार यह फैसला हो जाये कि दस प्रतिशत लोग नब्बे प्रतिशत लोगों पर शासन कैसे कर सकते हैं।

उन्होंने आर्थिक आधार पर आरक्षण का विरोध करते हुए जातिगत आधार पर आरक्षण का आग्रह किया। वे यहां तक कह गये कि सभी क्षेत्रों में सभी जातियों के लिए उनकी जनसंख्या के अनुपात से आरक्षण का सिद्धान्त लागू किया जाना चाहिए। बाबू जी सन् १९५६ से १९७९ तक (कुछ समय को छोड़कर) केन्द्र में वरिष्ठ मंत्री रह चुके हैं। इतने अनुभवी व्यक्ति ने भी यह सब कहते समय यह सोचने का कष्ट नहीं किया कि वे क्या कह रहे हैं। इस सिद्धान्त को व्यवहार में लाने का क्या परिणाम होगा? प्रशासन का क्या हाल होगा? बाबू जी की दृष्टि राष्ट्र की अपेक्षा व्यक्तिगत स्वार्थों पर रही है। यह बात स्वाधीनता मिलने के बाद के समय में हुई। स्वाधीनता मिलने से पूर्व तो बाबूजी ने सचमुच देश के लिए और कमजोर वर्गों के लिए बहुत त्याग किया, तपस्या की, बलिदान की भावना संजोई। पिछले कुछ वर्षों से उनके जीवन का एक-सूत्री कार्य-क्रम (चौधरी चरणसिंह की तरह) प्रधानमंत्री पद पाना रहा है। जब-जब उन्हें यह सपना पूरा होता प्रतीत हुआ है, तब-तब वे स्वयं को हरिजनों की बजाय पूरे देश का नेता बताने की कोशिश करते रहे हैं। उन दिनों यदि कोई उन्हें हरिजन नेता कह देता था, तो वे चिढ़ जाते थे। वैसे हम

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन् १९५३ का पच्चीस दिसम्बर का दिन अभी तक नहीं भूले, जब बाबूजी ने स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर आयोजित एक सभा में हिन्दू समाज की वर्णव्यवस्था पर चोट करते हुए कहा था कि इस व्यवस्था के रहते जगजीवनराम सारी उम्र चमार ही रहेगा। जब उन्हें प्रधानमंत्री पद पाने की आशा बंधी, तब वे कहने लगे कि वे प्रधानमंत्री पद हरिजन के नाते नहीं, अपितु अपनी योग्यता के बल पर पा रहे हैं। किन्तु जब वह सपना टूट गया, तब वे पुनः हरिजन नेता की भूमिका पर उतर आये हैं। अहमदाबाद के संवाददाता सम्मेलन में उनके मन की कुंठा मुखरित हो उठी है। उन्होंने कहा कि दो वर्ष पूर्व जब मुझे प्रधानमंत्री पद मिल रहा था, तब गुजरात के उच्च वर्ग के लोगों ने मंदिरों के माध्यम से मेरे विरुद्ध अभियान छेड़ दिया था। इस कथन से स्पष्ट है कि बाबू जी की गुजरात यात्रा का लक्ष्य गुजरात की समस्या का सुलझाना न था, अपितु गुजरात समस्या की आग में अपनी कुंठा का घी उंडेलना था। ऐसे आचरण की विद्यमानता में बाबूजी से यह अपेक्षा कैसे की जा सकती है कि वे राष्ट्रीय जीवन में उत्पन्न कटुता को दूर करके पारस्परिक सद्भाव का वातावरण पैदा करने में सहयोग दे सकेंगे?

यहीं पर बस नहीं। लखनऊ के एक सम्मेलन में उन्होंने कहा कि पिछड़े वर्गों, मुसलमानों और ईसाइयों को न्याय प्राप्त करने के लिए क्रान्ति शुरू कर देनी चाहिए। "अति अल्पसंख्यक ब्राह्मण जीवन के सभी क्षेत्रों में सर्वोच्च शासक बने हुए हैं। अब मेरे जीवन का मुख्य लक्ष्य हिन्दू समाज में ब्राह्मणवाद को समाप्त करना है।"

अपने इस अपवित्र अभियान के लिए बाबूजी जामा मस्जिद के शाही इमाम सय्यद अब्दुल्ला बुखारी से प्यार की पींगें बढ़ा रहे हैं।

अन्तुले साहब, यह क्या हो रहा है?

कुछ लोगों का पेशा ही यह है कि दिन-रात इन्दिरा जी की चापलूसी की जाये। इनमें पहला नाम महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री अब्दुर्रहमान अन्तुले का है। वे खुल्लमखुल्ला भारत में राष्ट्रपतीय शासन प्रणाली की वकालत कर रहे हैं। उनका वश चले तो वे इन्दिराजी को आजीवन राष्ट्रपति बनादें। अन्तुले साहब राष्ट्रपतीय शासनप्रणाली तो चाहते हैं, लेकिन न तो अमरीकन ढग की और न ब्रिटिश ढंग की। वे फ्रांसीसी ढंग की राष्ट्रपतीय शासन प्रणाली चाहते हैं या फिर ऐसी, जिसमें फ्रांसीसी प्रणाली के साथ वर्तमान भारतीय लोकतंत्रीय प्रणाली और अमरीकन प्रणाली के भी कुछ तत्त्व मिले हों। अन्तुले साहब ने यह देखने का कष्ट नहीं किया कि वर्तमान शासन प्रणाली में फ्रांस का क्या हाल हो रहा है? आजकल फ्रांस में राष्ट्रपति वलेरी जिस्कार्द द' एस्तेंग का शासन है। वहां की हालत के बारे में पिछले दिनों इंटरनेशनल हेराल्ड ट्रिब्यून (पेरिस) ने लिखा कि "फ्रांस में बेरोजगारों की संख्या बढ़ कर १५ लाख हो गई है, लेकिन राष्ट्रपति की मुद्रा देखकर ऐसा लगता है मानो कुछ हुआ ही न हो। दूसरी ओर यदि राष्ट्रपति किसी छोटे-मोटे देहाती क्षेत्र का भी दौरा करें, तो दूरदर्शन उसका प्रदर्शन इस अन्दाज में करता है कि मानो फ्रांस में किसी नये युग की शुरुआत हो रही हो। जिस्कार्द के दरबारी फ्रांस के सबसे बड़े अखबार "ल मांदे" पर बौद्धिक आतंकवाद और न्यायपालिका के प्रति असम्मान प्रदर्शित करने का आरोप लगा रहे हैं — सिर्फ इसलिए कि उस अखबार ने यह समाचार छापा था कि भूतपूर्व फ्रांसीसी मध्य अफ्रीका के अपदस्थ अत्याचारी शासक बोकासा ने राष्ट्रपति को हीरे-जवाहरात और शिकार के लिए १२ लाख ३५ हजार एकड़ कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुक्त भूमि भेंट में दी। यदि भारत में अन्तुले साहब का इन्दिराजी को आजीवन राष्ट्रपति बनाने का इरादा पूरा हो गया तो, यहां भी यही कुछ होगा। इन्दिराजी के आजीवन राष्ट्रपति बनने से अन्तुले सदृश दरबारियों को छोड़कर अन्य किसी को कोई लाभ न होगा। अन्तुले साहब यही तो चाहते हैं। वे सपना ले रहे हैं कि इन्दिरा जी राष्ट्रपति बनकर सब बूढ़ों की छुट्टी कर देंगी और अन्तुले साहब को उपराष्ट्रपति बना देंगी।

अखबारों के लिए खतरे—

पिछले दिनों वाराणसी में लोहे की छड़ों और लाठियों से लैस गुंडों के एक गिरोह ने वहाँ के एक हिन्दी दैनिक "जनवार्ता" के दफ्तर पर हमला कर दिया और पत्र के सम्पादक श्री ईश्वरदेव मिश्र को बुरी तरह पीटा। जब उनके कुछ साथी उन्हें छुड़ाने आये, तब उन्हें भी न बख्शा गया। हमलावरों में से सात बाद में गिरफ्तार कर लिये गये। उन्हें शिकायत इस बात पर थी कि उक्त पत्रिका में एक "स्वामी" के विरुद्ध खबर छपी थी, जो कुछ कुकर्म करके भागता हुआ रेल कर्मचारियों द्वारा मौके पर ही पकड़ा गया था। स्पष्ट है कि ये गुण्डे उस नकली स्वामी के चेले थे। इस घटना पर अपना रोष प्रकट करते हुए इंडियन एण्ड ईस्टर्न न्यूजपेपर सोसाइटी ने कहा कि "पिछले कुछ दिनों से कोई सप्ताह ऐसा नहीं गुजरा, जिसमें किसी अखबार के दफ्तर अथवा अखबारी कर्मचारी पर हमला न हुआ हो। ऐसा प्रतीत होता है कि शीघ्र ही हम सभ्यसमाज कहलाने के अधिकारी नहीं रहेंगे।" सोसाइटी का कथन सही निकला। वाराणसी की घटना के एक सप्ताह अन्दर ही कटक में एक वैसी ही घटना अपेक्षाकृत बड़े पैमाने पर हुई। हुआ यह कि कटक के मेडिकल कालेज के छात्रों ने बड़ी संख्या में युवकों को साथ ले जाकर तीन अखबारों के दफ्तरों पर हल्ला बोल दिया, कर्मचारियों को गालियाँ निकालीं, उनपर हमला किया और वे वहाँ तब तक लूटमार करते रहे, जब तक पुलिस ने मौके पर पहुंचकर उन्हें तितर-बितर न कर दिया। वे लोग भी इन अखबारों में छपी एक खबर के विरुद्ध प्रोटेस्ट कर रहे थे। इन दो घटनाओं से पता चला है कि अखबारों को केवल सरकार से खतरा नहीं, अपितु ऐसे लोगों से भी है, जिनमें सहनशीलता की कमी हैं।

जैसे सरकार का काम आम जनता के हितों के लिए काम करना है, वैसे ही अखबारों का काम भी आम जनता के हितों की रक्षा करना है। इसलिए अख़बारों को लोकतन्त्र का प्रहरी कहा जाता है। दोनों के उद्देश्यों में किसी प्रकार का टकराव नहीं। इस दृष्टि से दोनों के बीच अधिक तालमेल की आवश्यकता है। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा। ताज़ा उदाहरण लीजिए। नये बजट में आयातित न्यूज़प्रिंट पर १५ प्रतिशत आयात शुल्क लगा दिया गया है। सरल शब्दों में इसका अर्थ यह हुआ कि यदि आप सौ रुपये का न्यूजप्रिंट विदेशों से मंगाते हैं, तो आपको १०० रु० की बजाय ११५ रु० देने होंगे। अख़बारों को अपने व्यय का सबसे बड़ा भाग न्यूज़प्रिंट पर ही खर्च करना होता है और ८०-८५ प्रतिशत न्यूज़प्रिंट विदेशों से ही आयात किया जाता है, क्योंकि नेपा मिल्स खपत के बराबर सप्लाई नहीं कर पातीं? अब आप स्वयं ही देख लीजिए कि इस नये शुल्क से अख़बारों पर कितना बोझ पड़ेगा और कितने अख़बार इस बोझ को सहन कर पायेंगे।

हम 'इंडियन एक्सप्रेस' के भूतपूर्व सम्पादक श्री अजित भट्टाचार्य के इस कथन से सहमत हैं कि सरकार ने यह बोझ जानबूझ कर अखबारों पर डाला है। इसके साथ हम अपनी ओर से इतना कहेंगे कि सरकार अखबारों का गला घोटकर आकाशवाणी और दूरदर्शन के समाचारों को सुनने की बाध्यता और अनिवार्यता की स्थिति पैदा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करना चाहती है। जहाँ तक सरकार-समर्थक 'नेशनल हैराल्ड' सदृश अखबारों का सम्बन्ध है, लोग आमतौर पर इन्हें पढ़ना पसन्द नहीं करते। ऐसे अखबारों में होता भी क्या है? इन्दिरा जी की अतिरंजित प्रशंसा और विपक्ष (विशेषत: भारतीय जनता पार्टी और उसके साथ राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ) की निन्दा। सरकार-परस्त अखबार जनता को अंधेरे में रखना चाहते हैं। पिछले दिनों दीनदयाल उपाध्याय स्मारक समिति के अध्यक्ष श्री नानाजी देशमुख के कार ड्राइवर की छुरे से हत्या कर दी गई। आकाशवाणी, दूरदर्शन और सरकार-परस्त अखबार इस खबर को गोल कर गये। यही समाचार माध्यम इस खबर को लें उड़े थे और तीन दिन तक उछालते रहे थे कि नानाजी देशमुख ने संजय गान्धी की हत्या करवाई। पिछले दिनों अजमेर में विशाल हिंदू रक्षा सम्मेलन हुआ। दिल्ली के शायद ही किसी अखबार ने उसके सम्बन्ध में एक पंक्ति भी प्रकाशित की हो। यह कैसी पत्रकारिता है?

लोकसभा का दुर्भाग्यपूर्ण संकल्प

१८ मार्च को लोकसभा ने सर्वसम्मति से एक संकल्प लिया कि वह संविधान में लिखित आरक्षण सम्बन्धी राष्ट्रीय नीति का दृढ़ता से पालन करेगी। इस आशय का मूल प्रस्ताव लोकदल के श्री रामविलास पासवान ने रखा था, लेकिन श्री अटलबिहारी वाजपेयी के आग्रह पर गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह ने इसे सरकार की ओर से रखा और तब इसे सर्वसम्मति से स्वीकृत कर लिया गया। संविधान में व्यवस्था थी कि अनुसूचित जातियों और अनुसूचित जनजातियों के लिए दस वर्ष तक सीटें सुरक्षित रहें। यह अवधि १९६२ में समाप्त होनी थी, लेकिन उससे कुछ समय पूर्व ही इसे दस वर्ष के लिए और बढ़ा दिया गया। १९७२ से पूर्व भी ऐसा ही किया गया। अब लोकसभा के प्रस्ताव के बाद तो यह व्यवस्था चिरकाल तक जारी रहेगी।

लोकसभा के इस प्रस्ताव को दुर्भाग्यपूर्ण ही कहा जायेगा। बार-बार कहा जाता है कि हरिजनों पर बड़े हत्याचार हुए हैं। लोकसभा में जब आलोच्य प्रस्ताव पर बहस चल रही थी, तब कम्युनिस्ट सदस्य श्री इन्द्रजीत गुप्त ने कहा कि मनु का १,००० वर्ष पुराना कानून भारत के संविधान में लिखित मौलिक कानून को चुनौती दे रहा है। उन्होंने कहा कि ऐसा पहली बार नहीं हुआ। हम मानते हैं कि मनुस्मृति की व्यवस्थाओं में शूद्रों के साथ न्याय नहीं किया गया, लेकिन जैसा महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने लिखा, मनुस्मृति के वे श्लोक प्रक्षिप्त हैं जिनमें ऐसी निन्दनीय व्यवस्थाएं दी गई हैं।

हमने माना कि हरिजनों के साथ अतीत में अन्याय हुआ है, क्या लेकिन तीस वर्ष बीत जाने पर भी अभी उस अन्याय का प्रतिकार नहीं हुआ? हिन्दू समाज में फूट डालने वाले राजनेता कहते हैं—हरिजनों का नरमेध हो रहा है। समझ में नहीं आता कि यदि सचमुच नरमेध हो रहा है, तो इसके शिकार पीड़ितों को अलग से क्यों पहचाना जा रहा है? राजनैतिक स्वार्थ के लिए विशिष्ट रूप से यह लिखना कि हरिजन मारे गये, हरिजन कन्या से बलात्कार हुआ, जघन्य अपराध है, हिन्दू समाज में फूट डालने की कुत्सित चाल है। राजनेताओं से हमारी अपील है कि वे अकारण कमजोर वर्ग के लोगों में यह भावना न भरें कि उन पर अत्याचार हो रहे हैं। अत्याचार किसी पर भी नहीं होना चाहिए—न कमजोर पर और न ताकतवर पर। भारत का प्रत्येक नागरिक स्वाधीन है और उसके अधिकार भी समान हैं। हमारे राजनेता जितनी जल्दी यह बात समझ लें, उतना ही सबका हित है। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मारीशस में वेदों का स्वागत

—राजमन राधाकृष्ण

मारीशस तीन-चार सौ साल से आबाद हुआ है। प्रेमचन्द जन्मशती के अवसर पर भारतीय महासागर का यह द्वीप चर्चा का विषय बना था। इससे पहले सन् १९६९ में महात्मा गांधी की जन्मशती के अवसर पर उनकी स्मृति में छः डाक टिकट जारी किये गये थे, जब लन्दन की पत्रिका "स्टैम्प बुलेटिन" तक ने इस टापू का एक तरह से इतिहास ही लिख दिया। उसने लिखा कि यहां आर्यसमाज जीवित है।

इस समाज की स्थापना सन् १९१० में हुई थी। शिक्षित युवक इसकी ओर खिंचे। समाज का साहित्य लाहौर से मंगाया जाता था, जिसके मोहनलाल रोड पर विरजानन्द प्रेस विद्यमान था।

लाहौर के युवक इधर के नौजवानों से अपेक्षाकृत अधिक पढ़े-लिखे थे। वे ऋषि दयानन्द से मिलते थे। पं० गुरुदत्त विद्यार्थी उन युवकों में से एक थे, जिन्होंने कई वेद मंत्रों की व्याख्या अंग्रेजी में की थी। उनके ग्रंथ तथा मास्टर दुर्गाप्रसाद की पुस्तकें मंगायी जाती थीं। इनके ग्रंथ विरजानन्द प्रेस में ही मुद्रित होते थे। हिन्दी का प्रचार होता पर अंग्रेजी-फ्रेञ्च पढ़े लिखे लोग अंग्रेजी की किताबों को ही पसन्द करते थे। मास्टर दुर्गाप्रसाद ने Vedas Made Easy नामक ग्रंथ रचा था। इसे डा० चिरंजीव भारद्वाज द्वारा अनूदित सत्यार्थ प्रकाश के साथ पढ़ा जाता था। वेद के नाम से वर्तमान शती के प्रथम दशकों से ही मारीशसीय परिचित होने लगे।

तब कुछ युवक उच्च शिक्षा प्राप्त करने के उद्देश्य से लाहौर पधारने लगे। यदि जगन्नाथ ने जघन्य कृत्य न किया होता और ऋषि को विष देकर उनकी सेवाओं से हमें वंचित न किया होता तो सम्भवतः मारीशसीय उस महान् वेदवेत्ता के दर्शन करते। मारीशस के युवकों को दयानन्द भाष्य पढ़ने को मिला। इसी से उन्हें संतोष लाभ हुआ।

मारीशस द्वीप उस दिन की प्रतीक्षा कर रहा था, जब बच्चा-बच्चा वेद-विषयक पुस्तिकाएं पढ़ेगा।

पास ही पड़े हुए रेइन्यों फ्रेंच टापू में ईसाइयों की विजय हो चुकी थी। जितने भारतीय वहां कृषि कार्य करने के लिए पधारे थे, वे ईसाई बना लिये गए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पादरी मारीशस का भी ईसाईकरण करने पर तुले थे। यहां आर्यसमाज पहुंचा और रेइन्यों पहुंच न पाया। यदि चालीस पचास वर्ष पूर्व फ्रेञ्च सत्यार्थ प्रकाश के साथ फ्रेञ्च में रूपान्तरित संध्या-हवन के मन्त्र तथा महर्षि की फ्रेञ्च भाषा में रचित जीवनी रेइन्यों के प्रवासियों की पहुंच के भीतर आती, तो उनका ईसाईकरण न हो पाता।

भारत छोड़कर जब मजदूर ऐसे उपनिवेशों में आने लगे थे, तब किसी को मालूम हो ही नहीं सकता था कि ये हिंदू रहेंगे। दक्षिण अफ्रीका को महात्मा गांधी ने अपना कार्य क्षेत्र बनाया था।

वहां हिंदुओं को एक महान् रक्षक मिले। बापू जी किसी भी मूल्य पर अपने धर्मशास्त्र को त्याज्य मानने को तैयार न थे। कई लोगों ने लिखा है कि वे इंजील को पसंद करते थे। वे इंजील के केवल एक अंश को पसंद किया करते थे। फिर भी कहा करते थे कि इससे अधिक मुझे गीता पसन्द है। जिस देश में वे २० वर्ष तक रहे, उसके हिंदू निवासियों का ईसाईकरण न हो सका।

लाहौर से दक्षिण अफ्रीका और मारीशस में आर्य धर्मोपदेशक पधारते रहे। फ्रेञ्च भाषा से अनभिज्ञ होने के कारण वे रेइन्यों न जा सके।

पश्चिमी वेदज्ञों की भयंकर भूलें

महर्षि की १९२५ में जन्मशती हो रही थी, जब स्वर्गीय स्वामी ज्ञानानंद हमारे मध्य में ग्यारह मास रहे। तब हम ग्रिफिथ का नाम मेक्समूलर के नाम के साथ सुनने लगे। उन दिनों स्वामी जी ने संन्यास न लिया था। वे मेहता जैमिनि के नाम से प्रसिद्ध थे। वे अनेक बार अपने प्रवचन में हमें सावधान रहने को कहते थे। उनका मत था कि उक्त वेदज्ञों ने भयंकर भूलें की थीं। यूरोपियों में फ्रेञ्च संस्कृतिज्ञ जाकोल्यो न्यायप्रिय थे, जिन्होंने मान लिया था कि वेद और विज्ञान में विरोध नहीं है। स्वामी जी का जन्म सन् १८७१ में हुआ था उससे तीन ही साल पहले जाकोल्यो का ग्रंथ "भारत में इंजील" छप गया था। मारीशसीय युवक इस ग्रंथ का पाठ करने लगे, जब उन्हें लगा कि यह १८६८ में लिखित सत्यार्थ प्रकाश है।

स्वामी जी ने वाद में अफ्रीका, फिजी तथा अमेरिका के देश त्रिनिडाड की भी यात्रा की थी। मध्य अमेरिका में श्रीमती वे आतृस ग्रैग इनके लेक्चर सुनकर खुश हुईं। इस विदुषी को वेद प्रिय था। इन्होंने कवि रवींद्रनाथ ठाकुर अभिनंदन ग्रंथ के लिए एक लेख लिखा था। मतलब यह कि आर्य धर्मोपदेशकों ने यथाशक्ति वेदों का संदेश पहुंचाने के प्रयत्न किये।

आर्यसमाज के आगमन ने सनातनियों को भी वेद का अध्ययन करने की प्रेरणा दी। मेहता जैमिनि के यहां से चले जाने के पश्चात् यहां स्व० पं० रामगोविंद वेदांतशास्त्री का पदार्पण हुआ। उन्होंने "हिंदी ऋग्वेद" नाम का ग्रंथ रचा, "गंगा" नाम की पत्रिका का सम्पादन किया, जिसके वेदाङ्क में उन्होंने आर्य विद्वानों के भी वेद विषयक लेख दिये। जब मारीशस में वेद की इस प्रकार चर्चा होती रही, यह देश वेदाध्ययन के अनुकूल क्यों कर न होता?

प्रवासी भारतीय हिलने-डुलने लगे थे। बम्बई में जब आर्यसमाज के २८ नियम उपनियम बने थे—१७वां नियम देशभक्ति के सम्बन्ध में था। आर्यसमाज यद्यपि १० ही नियमों का प्रचार करता था, तथापि वह देशभक्ति को महत्त्व देता था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अनेक देशों में बारडोली से श्रमिक भेजे गये थे। उनमें से कुछ लौटे। उन्होंने अपने सम्बंधियों, पड़ोसियों आदि को उत्साहित किया कि वे सरदार पटेल के आंदोलन में भाग लें। लौटे हुए प्रवासी स्वयं उस आंदोलन के चलाने में सहायक हो गये थे। जो सत्याग्रह हुआ था उसकी सफलता का श्रेय इन्हीं को था।

देशभक्ति तथा वेद ज्ञान ने भारतीयों को कर्मण्य बनाया।

भारतीय अधिक से अधिक कुछ महीनों के लिए मारीशस में प्रचार कर सकते हैं। कोई प्रवासी खुद वेदों का सन्देश देने का दृढ़ संकल्प करे, तब काम बन पाता है। १९३३ ई० में प्रो० वासुदेव विष्णुदयाल ने वेदों का परिचय देने का संकल्प किया। वे भारत में ६ वर्ष का प्रवास करके स्वदेश लौटे और तब से जनता के मध्य कार्य कर रहे हैं। 'वेदवाणी' नाम की पुस्तिका लिखी, जिसमें कतिपय वेद मंत्रों का अनुवाद था। हर सप्ताह एक दो बार कहीं न कहीं लोगों को एकत्र करके उन्हें उपदेश देने लगे। वे पहले पुस्तिका को धीरे-धीरे पढ़ते थे और श्रोता दोहराते जाते थे। कई सौ हिन्दी पाठशालाएं खुलवाईं जिनमें निःशुल्क पढ़ाई होती थी। पाठ्य पुस्तक और एक सरल हिन्दी व्याकरण रचा, जो उस समय छपकर तैयार हुआ, जब वे प्रथम बार बड़े घर की हवा खा रहे थे।

अध्यापकों को आदेश मिल गया था कि पढ़ाने का काम जारी रहे। चाहे प्रेरणा देने वाले मुक्त हों या जेल में। जेल में चिन्तन करते रहने वाले धर्म प्रचारक कई वेद मंत्रों की सरल व्याख्या करने लगे। वे लगे लेख भेजने भारत में। कभी "आर्यमित्र" में तो कभी "सार्वदेशिक", "वेदप्रकाश", "वैदिक धर्म", "वेदवाणी", या सुधारक में उनके लेख छपने लगे। पाठकों की ओर से लेख पुस्तकाकार छपवाने की मांग हुई। पुस्तकें पहले हिन्दी में, तत्पश्चात् फ्रेञ्च और अंग्रेजी में लिखी जाने लगीं। आर्यसमाज की स्थापना शती से कुछ मास पूर्व उनका The Message of the Four Vedas का Orient Longman ने प्रकाशन किया। भारतीय विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों ने इस पुस्तक का स्वागत किया। मारीशस में इसी प्रकार का उन्होंने जो फ्रेञ्च में ग्रन्थ रचा, वह घर-घर में पढ़ा जाने लगा।

जब धारा सभा में ऋषि का नाम लिया गया, वेदों ने जादू कर दिया। जब महात्मा गांधी १९०१ में प्रोफेसर साहब के जन्म से पाँच साल पहले मारीशस आये थे, हिन्दू कुल जनसंख्या का ५५ प्रतिशत भाग था। वह घटता रहा, जिस प्रकार स्वतंत्र भारत में हिन्दुओं की संख्या घटती जा रही है। १९३३ में ५५ प्रतिशत की जगह हिन्दू जनसंख्या का ४८ प्रतिशत हो गया था। अब हिन्दुओं का ईसाईकरण शनैः-शनैः बन्द होने लगा। इनके स्वर्गीय अनुज सुखदेव धारा सभा के सदस्य थे। उन्होंने यह प्रस्ताव रखा कि जिस तरह ईसाई मिशन को सरकार की ओर से आर्थिक सहायता डेढ़ सौ साल प्राप्त होती रही, उसी तरह गैर-ईसाइयों को भी वह मिला करे।

ऐसा प्रस्ताव ईसाइयों से डर खाकर कोई अन्य हिन्दू रखने का साहस ही नहीं कर सकता था। वे सोचते थे कि ईसाई मतदाता रुष्ट होंगे। धारा सभा वेद-वेत्ता ऋषि दयानन्द का नाम लेने का उपयुक्त स्थान नहीं है। इनको कुर्सी से चिपटे रहने की चिन्ता न थी। इन्होंने महर्षि का नाम लिया और कहा कि ज्यों ही उन्हें पता चला कि यूरोप में वेद का मुद्रण होने लगा, वे बाग-बाग हो गये। मुद्रण करने वालों की सराहना की पर उनकी त्रुटियों की ओर भी संकेत किया। अपने भाषण के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बीच में वक्ता ने तर्क किया कि विदेशी विद्यालयों में हिन्दू दर्शन एवं धर्म वे विषय हो गये हैं जो छात्र वर्ग में प्रिय हैं। उनका मतलब था कि ऐसी स्थिति में इस धर्म की उपेक्षा नहीं की जा सकती। ये स्कूल विभाग में २२ वर्ष कार्य कर चुके थे। जहां इन्जील पढ़ते रहे, वहां वेद का स्वाध्याय भी किया करते थे। इंजील में एक स्थल पर है कि ईसा ने कहा है, मेरे पिता के गृह के अनेक कमरे हैं। बाइबल का हवाला देते हुए उन्होंने फ्रेञ्च में यह वाक्य सुनाया।

कौंसिल के ईसाई सदस्य मंत्र मुग्ध से हो गये और हिन्दू सदस्य सोचने लगे प्रस्ताव का समर्थन न करेंगे तो हिन्दू एवं अन्य ईसाई मतदाता रुष्ट होंगे। प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ। आर्यसमाज को आज हर वर्ष लाखों रुपये मिलते हैं और सनातन समाज को इससे भी अधिक। एक कमीशन नियुक्त किया गया था, जिसके सुखदेव जी भी सदस्य नियुक्त किये थे। सारा देश खयाल कर रहा था कि ये सुझाव देंगे कि मेरे अग्रज प्रो० वासुदेव को प्रधान धर्मोपदेशक बनाया जाये और उन्हें वेतन दिया जाये। खयाल निराधार सिद्ध हुआ। उनके अग्रज पूर्ववत् धर्म प्रचार करते रहे और उन्होंने कभी वेतन लेना स्वीकार किया ही नहीं।

जाहिर है कि कमर कस कर वेदों का अद्भुत संदेश देने की तैयारियां करने वाले प्रोफेसर ज्ञान को प्राथमिकता देकर लोगों को सन्मार्ग बताने के लिए स्वदेश लौटे थे। ४१ वर्ष व्यतीत हो गये हैं, जब से वे कार्यरत हैं। उन्होंने विदेश यात्रा एक बार भी न की।

हिन्दू धर्म की शिक्षा

असल में उनके अग्रज स्व० सुग्रीव विष्णुदयाल से आशा की जाती थी कि वे धर्मप्रचार करेंगे।

कारण यह है कि जब वे प्राथमिक पाठशाला में अध्यापन करते थे, एक ओर आर्यसमाज के मुखपत्र "आर्य पत्रिका" के लिए लेख लिखते थे और दूसरी ओर अपने मुख्याध्यापक को जता कर कि धर्मशिक्षा आवश्यक है, सरकारी स्कूल में छात्रों को सप्ताह में एक बार हिंदू धर्म की शिक्षा देते थे।

यह खतरा मोल लेना था। पादरी अफ्रीका तथा मादागास्कार से मंगाये गये दासों के वंशों को ईसाई बनाने में लगे थे। उनकी इमदादी पाठशालाओं की संख्या सरकारी स्कूलों की संख्या से भी अधिक थी। जैसे ईसाई स्कूल में ईसाई धर्म की शिक्षा दी जाती थी, ठीक उसी तरह सरकारी पाठशालाओं में भी दी जाती रही। जब हिन्दी, तमिल, बंगला आदि भाषाओं का पढ़ाना आरंभ किया गया था, भारत में स्थित पादरियों के द्वारा लिखित हिन्दी व्याकरण तथा पोप लिखित तमिल व्याकरण का उपयोग किया जाता था।

१८८० में छपे एक व्याकरण में "दयानन्द स्वामी" का उल्लेख था। स्वामी जी आर्यसमाज की स्थापना से पहले भी देश का भ्रमण करके उपदेश दिया करते थे, यहां कोई समझ न पाया कि "स्वामी" किसे कहा जाता है। इस देश में प्रथम संन्यासी लाहौर से १९१३ में आये, जिनका नाम स्वामी मंगलानन्द पुरी था। वे आर्यसमाज के संन्यासी थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्व० सुग्रीव विष्णुदयाल एकमात्र अध्यापक थे, जिन्होंने धर्मप्रचार करने का अधिकार प्राप्त किया था—वह भी मुख्याध्यापक से जिन्होंने डर के मारे स्कूल विभाग के अधीक्षक को इस बारे में कुछ जानने न दिया।

अहिंदू पत्रकार हाथ धोके उनके पीछे पड़ गये। एक ने उन्हें चुनौती तक देने का साहस किया। उसने कहा आप स्कूल में 'वेद' नाम ही नहीं लेते हैं, "आर्य-पत्रिका" में भी उस ग्रन्थ का नाम लेते हैं। कृपया बताइये कि कहां पर वेद में कहा गया है कि वेदवाणी भगवान् ने हमें दी।

वेद ईश्वरोक्त है

४-५ दिन वेद मंत्र खोजने में लगे। वह मंत्र मिला जिसके प्रारम्भिक शब्द है:

"बृहस्पतिः प्रथमं वाचः"

वेदों में कठिन शब्द आते हैं, कभी-कभी साधारण शब्द भी। यहां ईश्वर नाम आया। प्रथम और वाणी या बोली शब्द भी आये। ढिठाई करने के लिए गुंजाइश न थी।

यह घटना १९२९ की है। ठीक एक दशक बाद सुग्रीव के अनुज प्रो० वासुदेव विष्णुदयाल ने क्युपिप नगर में लेक्चर दिया, जब बाइबल का यह वाक्य सुनाया:

And the word was God

शब्द और ब्रह्म की बात दुनिया को भारत ने ही कहीं पहले सुनाई थी। क्युपिप में ही सम्पन्न गोरे रहते हैं, जो इस देश की सब शक्कर मिलों के मालिक हैं। श्रोता स्तब्ध हुए। वाग्मीप्रवर धर्मोपदेशक ने एक फ्रेञ्च चिन्तक का यह मत भी बताया—"जैसे एक आर्य सती चितारूढ़ हुई अपनी सन्तति की ओर मोतियों की माला फेंकती है, वैसे ही भारत माता मरते-मरते अल्पवयस्क यूरोप को एक दयायुक्त धर्म और अनेक फल देने वाले पुनर्जन्म के सिद्धान्त को उपहार के रूप में समर्पित कर रही है।"

उनके मुख से फ्रेञ्च शब्दों को सुनकर लोगों को विदित हुआ कि हिन्दी, अंग्रेजी और फ्रेञ्च पर जिस मारीशसीय का अधिकार है, उन से द्वीप सेवित होगा। भाषाधिकार प्रचारकों के गुणों में मुख्य है। ऋषि ने कठोर परिश्रम किया था। तभी तो ६ मास में हिन्दी सीखकर धारा प्रवाह बोलने लगे।

चुनौती देने की बान ही छूट गई! तब तक सुग्रीव जी का देहावसान हो गया था। ऐसा शुभ दिन देख न पाये। अनुज वासुदेव अग्रज सुग्रीव का स्मरण कर के कहते हैं—'जब आंख खुली तब आप पधारे।" प्रोफेसर साहब के अनुज स्व. सुखदेव विष्णुदयाल तो लेक्चर सुनने आये थे। तीनों भाई अध्यापक रह चुके थे।

उन्होंने ही अपने देहावसान के समय तक अपने अग्रज वासुदेव से ३८ साल बार-बार अनुरोध किया कि वेद के गंभीर विषयों को समझाया न जाये, क्योंकि मारीशसीय परिपक्व नहीं हुए हैं। क्षेत्र तैयार किया जाता रहा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनके देहावसान के पश्चात् दक्षिण मारीशस के त्रुआ बुचिक नामक ग्राम के आर्य मंदिर पर प्रथम बार चारों वेदों की कथा हुई, जब विषय को श्रोताओं की पहुंच के भीतर लाया गया।

हमारे धर्मोंपदेशक ने कहा—

ऋग्वेद के प्रथम मंत्र में वर्णमाला के मुख्य अक्षर मिलतेहैं। परमात्मा गुरु हैं। उन्हें मनुष्य को भाषा बोलना सिखाना चाहिए। अन्य धर्म ग्रन्थों में वर्णमाला इस प्रकार नहीं मिलती है। चतुर्थ वेद अर्थात् अथर्ववेद में शब्दों का प्रयोग या उनके अर्थों का प्रकाशन करने का सामर्थ्य मांगा जाता है। वेद सचमुच ज्ञान, विद्या का ग्रन्थ है।"

'त्रिषप्ताः' का अर्थ "शब्द के २७ रूप" किया जाता है। वेकभी-कभी बताते हैं कि वेद मंत्रों के अनेक अर्थ होते हैं। त्रिषप्ताः का दूसरा अर्थ होता है सब रूप या आकार धारण करते जो तीन सप्तक पदार्थ पृथिवी, जल, अग्नि, वायु, आकाश तन्मात्रा अहंकार और जिन में ३ गुण होते हैं, चहुं ओर चलते हैं; उनके बल मेरे शरीरों में आज वाणी का स्वामी ईश्वर धारण करे।" दो अर्थ बताकर कहते हैं कि तीसरा अर्थ है, "२७ तत्त्व यानी ५ महाभूत, ५ ज्ञानेन्द्रिय, ५ प्राण, ५ कर्मेन्द्रिय, अन्तःकरण जो सब चराचरात्मक वस्तुओं का पोषण करते हुए परिवर्तित होते रहते हैं। वेदवाणी के पति! आज मेरी देह में उन्हीं का बल संचारित कर।"

असंख्य लोग उस समय से बार-बार भरे जाने वाले मेलों में आकर वेद देखकर अति प्रसन्न हो जाया करते हैं। अब तक हम उस युग में हैं, जिस युग में ऋषि पधार थे और अपनी झोली से वेद निकालकर बताते थे। आर्यसमाज के लागों को दिलचस्पी बढ़ाकर वे भारत के १०० साल के इतिहास पर प्रकाश डालते हैं, जब सुनाते हैं कि लाहौर में शिक्षित वर्ग ऋषि का साहस बढ़ाता रहता था। वहीं पर नियमों की संख्या दस बना दी गई थी। अपने देशवासियों की कमी पर भी उन का ध्यान खींचते हैं। एक-दो बार उन्होंने कहा, लाहौर में घटाये गये नियमों का यहां स्पष्टीकरण करने के विचार से कहना होगा।

"वेद पढ़ना-पढ़ाना, देखना-दिखाना, सुनना-सुनाना हमारा धर्म है।" कई यात्री दयानन्द संस्थान ढूंढकर चारों वेदों को खरीदते हैं और अपने साथ मारीशस लौटते वक्त ले आते हैं। अंग्रेजी में चारों वेदों का सर्वश्री स्वा० सत्यप्रकाश तथा पं० सत्यकाम विद्यालंकार द्वारा अनुवाद हो रहा है, यह समाचार पाकर कई वेद भक्त अंग्रेजी वेद मगाकर पढ़ने लग गये हैं। ऋग्वेद के ५२ सूक्तों का फ्रेञ्च में स्वयं प्रा० विष्णुदयाल ने रूपान्तर कर लिया था। उसका प्रथम संस्करण हाथों हाथ बिक गया। दूसरे संस्करण की प्रेस कापी इस समय बन रही है। वयोवृद्ध मंत्र-मुग्ध से हो गये हैं और गाने लगे हैं।

"लहरायेगी खेती दयानन्द की।" जब स्व० कवि प्रकाशचन्द्र कविरत्न दयानन्द जन्मशती के अवसर पर मथुरा में कविता पाठ कर रहे थे लोग, आनन्द विभार हुए थे—इस लाइन को श्रवण करके—

"वेदों का डंका आलम में
बजवा दिया ऋषि दयानन्द ने।"

एक मारीशसीय भी लाखों भारतीयों के बीच उपस्थित हुए थे।

कविराज के बारे में जो अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है, उसकी एक प्रति द्वादश आर्य सम्मेलन के शुभ अवसर पर श्रद्धा के साथ प्रो० विष्णुदयाल को दी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गई थी। लगता है कि वेदों की शिक्षा लघु भारत को भारत के साथ मिलाकर छोड़ेगी।

जिन दिनों उक्त प्रोफेसर साहब अध्यापन करते थे, वे फ्लाक जिले के एक लघु ग्राम में रहते थे। उसके समीप रहने वाले वेद प्रेमियों ने वेद कथा का १६८० में आयोजन किया। प्रोफेसर साहब सायंकाल उधर पहुंचे। यह देखने लगे कि बस रुक-रुक कर चलती थी। एक हजार से अधिक श्रोता पधारे, जिन में एक दर्जन स्नातक थे। अनेक पण्डित एक रंग में होकर यज्ञ सम्पादित कर रहे थें। उनका परिधान देखते ही बनता था। यजमान उनसे एकाकार हो गये थे। सबकी एक पोशाक थी।

यदि भारत में उन वेदज्ञों की कृतियों की आलोचना होती रही जो मेक्समूलर के समान अंग्रेजी में लिखते थे, यहां ३-४ दर्शकों से फ्रेञ्च में लिखने वाले वेदवेत्ताओं की कृतियों की त्रुटियां बताई जाती रहीं। एक हैं लांगलुआ जिनका फ्रेञ्च ऋग्वेद फ्रांसमें १८५० में छपा, इधर पहुंचा और उस पुस्तकालय में रखा गया, जो १८५१ में खुला। मैक्समूलर के अंग्रेजी वेद की तरह यह भी सायण भाष्य पर आधारित है। लांगलुआ ने फिर भी अपने ग्रन्थ की लम्बी और रोचक भूमिका में वेद के साथ न्याय किया। पं० रामगोविन्द के हिन्दी ऋग्वेद में भी जो भूमिका है, वह पठनीय है। भारत में हिन्दी ऋग्वेद के पाठक हैं जबकि लांगलुआ के होंगे तो एक ही दो होंगे।

जैसे फ्रेञ्च सत्यार्थ प्रकाश की ओर मारीशस का ध्यान गया, ठीक उसी तरह फ्रेञ्च ऋग्वेद की तरफ इस देश का ध्यान खींचा जा रहा है। फ्रेञ्च में वेदसार नाम की पुस्तिका का भी प्रचार हो रहा है। साथ-साथ पाठक प्रो० विष्णुदयाल का ग्रन्थ "हिन्दू साहित्य" खोज-खोज कर पढ़ रहे हैं जिसका प्रथम अध्याय वेद के संबंध में है।

स्मारक टिकट

१६८० तक वेद की चर्चा केवल प्रवासियों के बीच होती रही। वर्ष समाप्त होने वाला था, जब 'मारीशस संस्थान' के १०० साल पूरे हुए, अतः उसकी स्थापना शती मनाई गई। वह एक पुस्तकालय का संचालन करता है। संचालकों ने उस शुभावसर पर चार स्मारक डाक टिकट जारी करने का निश्चय किया, जिनमें से एक पर किसी ग्रन्थ का चित्र अंकित करने का विचार हुआ। पुस्तकों के संग्रह में उन्होंने एक वेद पाया, जिसकी छपाई एकदम शुद्ध है। अक्षर सुन्दर और मोटे हैं। उसी को चुना गया। उन्होंने दो रुपये वाले टिकट पर खुले हुए वेद का चित्र छाप दिया। हवाई डाक से संसार के किसी भी देश में यहां से चिट्ठी भेजी जाये, तो २ रु० वाले टिकट को ही लिफाफे पर, जो पहले से ही तैयार किया जाता है, चिपकाना पड़ता है। देश-देशान्तर में कुछ ही दिनों में पता चला कि मारीशस वेदवाला देश है। विश्व साहित्य में वेद का सर्वोच्च स्थान है, यह मारीशस का मत हो गया है।

ये मारीशसीय प्रोफेसर देश का ध्यान वेदों की ओर आकृष्ट करना जानते हैं। वे ज्यों ही किसी कार्य का श्रीगणेश करते हैं, राजा और रंक उसे पसन्द करता है। वे श्रोताओं को सुनाते हैं मैं क्यों लाहौर गया था? जब अंग्रेजों ने मारीशस पर १८१० में कब्जा किया था, उन्हें हजारों भारतीय योद्धाओं का सहयोग प्राप्त था। उन सिपाहियों में से एक भी लाहौर का या पंजाब का न था। पंजाब में

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पंजाब केसरी रणजीतसिंह का राज्य था। वे विजित विश्वविजेता नेपालियन के सेनापतियों को अच्छा वेतन देकर अपनी सेना में भरती करने लग गये थ। वे अंग्रेजों की सेना में भारत से पंजाबियों को क्यों भेजते ?

वे इतिहास के इस मनोरंजक तथ्य से श्रोतृवृन्द को उस समय परिचित कराते थे, जब रणजीतसिंह की जन्मद्विशती हो रही थी। वे बताते हैं कि दण्डी स्वामी विरजानन्द एक वर्ष के शिशु थे, जब रणजीत सिंह का जन्म हुआ था।

प्रवचन में यह भी बताते थे कि एक पंजाब केसरी का स्वर्गवास हुआ और दूसरे पंजाब केसरी या स्व० लाला लाजपत राय की अकाल मृत्यु हुई, जब उनपर पुलिस ने लाहौर में प्रहार किया। लगी हुई चोट मरणान्तक सिद्ध हुई । ये महानुभाव वेद के प्रेमी थे। इन्होंने ही ऋग्वेद का यह मंत्र अपने 'आर्यसमाज का इतिहास' नामक ग्रंथ में दिया है :

अग्निस्तु विश्रवस्तमं तु वि ब्रह्माणमुत्तमम् ।
अतूर्तं श्रावयत्पतिं पुत्रं ददाति दाशुषे ॥

वे इस पर टीका करते हुए कहते हैं कि अग्नि या महान् दानी परमात्मा भक्तों की खोज में रहा करते हैं।। एक भक्त के घर १९वीं सदी में एक बच्चा जन्मा, बाप को जब मालूम हुआ कि बेटा घर से चम्पत हो गया है, न उन्हें और न उनकी देवी को सान्त्वना मिली, पर वह बालक विश्व का कल्याण करने के लिए गृहत्याग करने को विवश हुआ था। अग्नि ने पुत्र सचमुच दिया। अग्नि या ईश्वर देने वाले हैं। उनके नाम हैं आत्मदा, बलदा, स्वस्तिदा इत्यादि।

ये पुत्र और कोई नहीं, महर्षि दयानन्द थे, जिन्हें लाहौर में बार-बार पाकर होनहार युवक कृतकृत्य हुए थे। युवकों ने ही प्रस्ताव रखा था कि समाज के नियमों को घटाकर कुल १० रहने दिये जायें।

ऋषि अति प्रसन्न हुए। लाहौर वेद प्रचार का केन्द्र बना। वहां युवकों ने "आर्यपत्रिका" को जन्म दिया। यही नाम मारीशसीयों को प्रिय हो गया और इसी नाम की पत्रिका यहां भी चलायी गयी, जिसमें सुग्रीव जी का वेद-विषयक लेख १९२९ में निकला था।

'जन-ज्ञान' देश-देशान्तर में पहुंचता है। संभव है कि अन्य देशों के प्रवासी मारीशस विषयक लेख समय-समय पर पढ़ेंगे तो वेद प्रचार करने को उत्सुक होंगे।

लाला लाजपतराय का जीवन चरित्र यहां पढ़वाया जा रहा है। पाठकों को मालूम है कि लाला जी का भाषण सुनने के लिए रणजीत सिंह के वंशज आया करते थे। हमारे धर्मोपदेशक का नाम सुनते ही असंख्य लोग घर से चल पड़ते हैं और उन का प्रवचन सुनकर मन ही मन कहते हैं कि अब चलना चाहिए, वेद-विषयक प्रवचन सुनने के लिए चलना होगा। वे कभी-कभी कहते हैं कि वेद ने हम मनुष्यों से कहलवाया है—

"मेरा रथ सब रथों से आगे कर दे, हे नाथ !"

प्रसुप्त मारीशसीयों को विश्वास हो जाता है कि वर्तमान युग में भी वेद समझ में आ सकता है। कइयों की निराशा आशा में परिवर्तित हो जाती है। इस समय जन-जन में जान फूंकी जा रही है। विगत अक्तूबर में उत्तर मारीशस में वेद का प्रवचन दिया जा रहा था, जब दो युवक अपने ग्राम से चल कर प्रवचन सुनने के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माघ संवत् २०३६ के "जन-ज्ञान" में डा० रामनाथ वेदालंकार ने इस वेद मंत्र की जो व्याख्या की है जिसके प्रथम शब्द है—

'सोमस्यो राज्ञः"—

वह द्रष्टव्य है।

"आज मैं बहुत प्रसन्न हूं। अपने आचार्य तथा उन सहकर्मी अन्य गुरुओं के सान्निध्य में रहकर मैंने ज्ञान रस का आस्वादन कर लिया है। ज्ञान रस की केवल दो-चार बूंदें ही नहीं, कलश के कलश पी डाले हैं। मेरे एक गुरु 'सोम' हैं। वे शांति के अग्रदूत हैं, चन्द्र के समान सौम्यता सदा उनके मुख पर विराजमान रहती है। उनकी उस मधुरिमा में जादू है, अद्भुत आकर्षण है। वे रस के आगार हैं। वे ओष-धियों के राजा सोम के समान ब्रह्मचारियों के सब दर्दों की दवा जानते हैं।"

संसार भर में अब फलों का सेवन खूब किया जाता है। जब डा० चिरंजीव भारद्वाज यहां थे, वे मरीजों को मदिरा-मांस से बचाते रहे। न जाने क्यों आजकल हमारे डाक्टर फ्रांस या विलायत में डाक्टरी विद्या सीखकर यहां वापस आते ही स्वयं पधारे थे।

मार्ग निर्विघ्न नहीं है। बड़े-बड़े लोग मदिरापान करते रहते हैं। उनकी ओर से कभी-कभी प्रचार के मार्ग में बाधा उपस्थित की जाती है। उनका कहना है कि वेदों में भी सोमपान करने वालों की चर्चा है।

प्रोफैसर साहब समझाते हैं कि जो फ्रेञ्च-संस्कृत कोश पैरिस में प्रकाशित हुआ है, वही देखा जाये तो विदित होगा कि सोम के अनेक अर्थ हैं। यह ईश्वर वाचक भी है। वे प्रायः इस मंत्र को पेश करके—

"प्र सोमा सो विपश्चितो अपो नयन्त ऊर्मयः। वनानि महिषा इव॥"

इसका जो अर्थ विद्वानों ने किया, सुनाते हैं।

भक्ति रस में सराबोर हुए जन का इसमें वर्णन है जो अन्य लोगों को अपने पीछे चलाते हैं।*

---

* इस विषय को "विशाल भारत" के एक लेख में खूब समझाया गया है। लेख का एक अंश इस प्रकार है—

अमर कोश में 'सोमपा', सोमपीथी, शब्द ब्रह्म पर्व में आये हैं।

सोमलता ब्राह्मीलता अथवा वैसी ही कोई लता थी, जिसका रस शीतल होता था। शराब-सा दाह्य गुण सोमरस में न था और न वह सड़ा कर ही बनती थी। मद्य या सुरा से उसका कुछ भी संबंध नहीं था। मनुस्मृति में तो विप्रों के लिये सोमपा शब्द प्रयुक्त हुआ है।

"सोमपानां विप्राणाम्"—

अतः यह शंका करना कि सोमरस शराब के सदृश कोई रस था, निर्मूल है। अमर कोश में शराब के पर्यायवाची शब्दों का उल्लेख इस प्रकार है—

मध्वासवो माधवको मधु माध्वीकभध्वयोः॥

मैरेयमासवः सीधुर्मेको जगतः समौ॥

अर्थात् मधु, आसव, माधवक, मधु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माध्वीक, मैरेय, सीधु, मेढ़क, जगल, ये नाम मद्य के लिए प्रयुक्त होते हैं।

मनुस्मृति में इनके अतिरिक्त भी यक्षरक्ष और पिशाचान्न दो अन्य प्रकार के मद्यों का नाम आया है।

शराबी के विषय में शास्त्रों में कई सुन्दर उक्तियां हैं—

मद्यपाः किं न जल्पन्ति किं न भक्षन्ति वायसाः।

अर्थात् शराबी क्या नहीं बकता ? कौआ क्या नहीं खाता ?

एकतश्चतुरो वेदा ब्रह्मचर्यं तथैकतः।

एकतः सर्वपापानि मद्यपानं तथैकतः ॥

जिस प्रकार चारों वेदों में एक ही ब्रह्मचर्य को श्रेष्ठतम तथा मुख्य माना गया है। उसी प्रकार पापों में सबसे बड़ा और मुख्य पाप शराब पीना है।

इस मारीशसीय सेवक को अपनों से जूझना पड़ रहा है।

वेदों की ओर लोगों को आते पाकर हमारे धर्मप्रचारक वर्तमान भारत का इतिहास अपने प्रवचन में ले आते हैं और कहते हैं कि बंटवारा हो जाने से लाहौर लाहौर न रहा, जहां हमेशा ४-५ मारीशसीय छात्र विद्याध्ययन करते थे। वे वेदों से परिचित होने के विचार से ही उस समय भारत यात्रा करते थे। जब यात्रियों को उसी भांति यन्त्रणाएं सहनी पड़ती थीं, जिस भांति भारत से उन्नीसवीं सदी में जो श्रमजीवी यहां आते थे, वे सहा करते थे।

उन दिनों लाहौर का वायुमण्डल वेद मंत्रों के पाठ से गूंज उठता था। लाहौर अब मारीशस में आया है, जहां हिन्दुओं में जीवन का संचार किया जा रहा है। वेद के एक-एक मंत्र की सरल और रोचक टीका की जा रही है, वेद मंत्रों को फ्रेन्च में रूपान्तरित किया जाता है और उन को मारीशसी पत्रों में प्रकाशित करवाया जाता है। वेद में शक्ति न होती तो हिंदू जो घट कर आबादी का ४८ प्रतिशत हिस्सा हो गया था, अब ५३ फी सदी हिस्सा न हो पाता।

अभी हाल ही में एक प्रसिद्ध लेखक ने मारीशसीय पक्षियों पर एक अत्युत्तम ग्रंथ रचा है, जिसका नाम है "प्याज़ी रंग के कबूतर"। लेखक अंग्रेज़ हैं और उनका ग्रंथ विलायत में प्रकाशित हुआ था। उसमें पक्षियों की रक्षा करने की अपील की गई है। हमारे उपदेशक इस ग्रंथ को घर-घर में पहुंचा रहे हैं, ताकि इस बात का प्रत्येक को प्रमाण मिल जाए कि "मित्रस्य चक्षुषा" अर्थात् मित्र के नेत्र से सब जीवों को देखने का जो वेद में आदेश है, वह माना जा रहा है। उनका कथन है कि सम्भव है कि ग्रन्थकार ने सुना तक न हो कि कोई वेद नामक ग्रंथ है। जब वे

दिन-रात मदिरा पान स्वयं करते रहते हैं और रुग्ण लोगों को भ्रष्ट करने में लगे रहते हैं, उन्हें दिन-रात यही कहते रहते हैं कि उन्हीं दवाइयों का सेवन करना चाहिए जिनमें शराब होती है।

शराबखोर अपनी संख्या में अभिवृद्धि लाने हेतु यह तर्क करने लगे हैं कि देश स्वतन्त्र हो गया है, पहले गोरे या फ्रेन्च मालिक थे, अब उन्हीं की तरह हम जो शासनारूढ़ हैं, खूब मदिरापान करें। स्वराज्य को सुराज्य बनाने में प्रयत्नशील वेद के विद्यार्थी को स्वतन्त्र देश में पहले से अपेक्षाकृत अधिक परिश्रम करना पड़ रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्ञान का प्रसार कर रहे हैं, लिख रहे हैं कि एक पक्षी-विशेष को विलुप्त होने से बचाया जाये, तब वेद ही का संदेश दे रहे हैं। एक मात्र मारीशस में दोदो नामक पक्षी था, जो विनष्ट कर दिया गया। पहले किसी जीव की रक्षा करने का किसी यूरोपीय की ओर से प्रबंध नहीं किया जाता था।

वेद दोदो पक्षी से कहीं पुरातन है, यह कहकर मारीशसीय वक्ता अपने प्रवचन में समझाते हैं कि उक्त ग्रंथ विलुप्त होने वाला नहीं है। मानवों को ज्ञान से वंचित नहीं किया जा सकता। उन्हें वेद की ओर आना पड़ेगा। एक बार एक राजकुमारी ने करुण स्वर से बनारस में पूछा था :

"को वेदान् उद्धरिष्यति?"

स्वामी विरजानंद वेदों के एक उद्धारक इसी तरह खोज रहे थे, जब शिष्य-रत्न दयानंद उन्हें मथुरा से प्राप्त हुए। गुरु पंजाब से निकल पड़े थे और शिष्य गुजरात से। दोनों का मेल मथुरा में हुआ।

प्रवचन के बीच में वर्तमान भारत का रोचक इतिहास सुना दिया जाता है; ताकि श्रोता जान जायें कि ऋषि-मुनियों वाला भारत ही विश्व का उद्धार करेगा। उस महान् देश का इतिहास मारीशस के इतिहास को जोड़ते हुए वक्ता महोदय बताते हैं कि सोनारा नामक विद्वान् जिन्होंने भारत में वेद की खोज में सात वर्ष व्यतीत किये थे, यहां पधारे हुए थे, जब किसी भी मारीशसीय ने वेद नाम तक सुना न था। आर्यसमाज के जन्म के पश्चात् रामावध, काशीनाथ, रामसुन्दर, सुखदेव, रामप्यार, सदाशिवन, रघुनाथ जानकी, वेरदें ग्राम के निवासी गंगाविसुन वाक्वा निवासी देवराज, वेणीमाधव, सतीराम, बोनाकेई के हरिकृष्ण आदि भारत पहुंचे और वेद समझने की कोशिश करने लगे। इनमें से कई भारत में ही रह गए।

वेद ने इस शती में कई मारीशसीय युवकों को भारत यात्रा करने की प्रेरणा दी। इन्होंने वेद प्रचार रूपी यज्ञ में अपनी आहुति दी।

पंजाब में जो वेदों के बारे में भ्रांति थी वह मारीशस में क्यों न होती। वहां तो कभी वेद की एक प्रति किसी के हाथ लग भी जाती थी, यहां तो वेद के दर्शन ही दुर्लभ थे। जब मजदूर भारत से आने लगे, उनमें से किसी ने वेद का नाम ही न सुना था। भारत से पुस्तक मंगाकर बेचने का श्रेय दो गुजराती बन्धुओं को था। उन्हीं के भतीजे तीसरे पुस्तक विक्रेता हुए। ये दानलीला, हनुमान् बाहुक, गुल बकावली, सारंघा सदावृक्ष, सिंहासन बत्तीसी, प्रेमसागर, रामायण, पुराण, बैताल पच्चीसी मंगाया करते थे। पुस्तक विक्रेताओं को भी वेद देखने का सौभाग्य प्राप्त न हुआ था—

पंजाब में कहा जाता था, "कोई लै गया भगत चुरा कै ब्रह्मे दे वेदां नूं (कोई भक्त ब्रह्मा के वेद चुराकर ले गया)" मारीशस ऐसी बात मानने के लिए ही आबाद हुआ!

श्वेताश्वतरोपनिषद् में ब्रह्मा को वेद मिले थे, इसका उल्लेख अध्याय ६ में हुआ है—

"यो ब्रह्माणं विदधाति पूर्वं यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै।
तं ह देवमात्मबुद्धिप्रकाशं मुमुक्षुर्वै शरणमहं प्रपद्ये (१८)।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अर्थात् जो भगवान् आदि में ब्रह्मा को रचता है और निश्चय ही जो उसके लिए वेदों को प्रदान करता है। उस आत्मज्ञान के प्रकाशक सब के आश्रय देव को मैं मोक्षाभिलाषी प्राप्त होता हूं।

हमारे धर्मप्रचारक मारीशस की राजधानी पोर्ट लुई में एक पुरानी लकड़ी के घर में पिछले ५२ वर्ष व्यतीत कर चुके हैं। जो ६ साल भारत में बिता गये, वे न गिने जायं तो ५२ वर्ष घट कर ४६ वर्ष हो जायेंगे। उन ६ वर्षों को उनके दोनों स्वर्गीय भ्राताओं ने उसी में बिताया था। घर के सामने वह ऐतिहासिक स्थल है जहां १९०१ में युवा बैरिस्टर गांधी का स्वागत किया गया था।

ये रोज प्रातः उसी स्थल की ओर वायु सेवन करने जाते हैं। जब सूर्य की प्रथम रश्मियां उनके शरीर पर पड़ती हैं तो मन्द मन्द पवन से प्रसन्न होते हैं। वे मन ही मन उस वक्त किसी न किसी वेद मंत्र पर विचार करते हैं, जब कई नई बातें उन्हें सूझ जाती हैं। लगभग ४० साल पहले वे फ्रेञ्च मनीषी जाकोल्यो के ग्रंथों में दिए गये संस्कृत के वाक्य और उनका फ्रेञ्च उल्था याद करके आनन्द-विभोर हुआ करते थे। वह स्थल अब भी वैसे का वैसा है। तीन ओर सुन्दर पहाड़ियां दिखाई देती हैं। इस शती के द्वितीय दशक में डा० चिरञ्जीव भारद्वाज ने वहीं आर्यों से ज़मीन खरीदवायी थी और आर्य मंदिर निर्मित करवाया था। ५०-६० साल से उस स्थानविशेष पर वेदमंत्रों का उच्चारण होता आया है, वेद-विषयक प्रवचन किए जाते रहे हैं, वेदोद्धारक ऋषि दयानंद का गुणानुवाद किया जाता रहा है।

जब कोई अन्य धर्मोपदेशक प्रोफेसर साहब से वहां मिला करते हैं, बातों के दौरान वे अपने मित्र को कोई न कोई वेद मंत्र सुनाकर उसके सरल अर्थ कर दिया करते हैं। वे कभी-कभी बता देते हैं कि पदपाठ कैसे होता है। पिछले दिनों उन्होंने फ्रेञ्च में एक पुस्तिका लिखी है, जिसका नाम 'लेवेदा' है। यह लोकप्रिय हो गई है। भौतिकवाद के इस युग में ये मारीशसीय अपने देशवासियों को वेद की ओर ले जा रहे हैं। कभी-कभी एक मास में वे १० प्रवचन करते हैं। उनकी कथाएं, लेख, पुस्तक-पुस्तिकाएं, प्रवचन चर्चा का विषय हो चले हैं। कहा जा सकता है कि इस समय भारतीय महासागर के इस द्वीप में जबकि युद्ध छिड़ने की आशंका हो गई है, एक छोर से दूसरे छोर तक एक अपूर्व उल्लास की लहर-सी उमड़ पड़ी है।

एक अहिन्दू लेखक ने अक्तूबर महीने में लिखा है कि यहां का न रेडियो और न दूरदर्शन ही हिन्दुओं के साथ न्याय करता है या यों कहिए कि हिन्दू इनसे काम लेने को राजी नहीं हैं। उनका आशय यह है कि जब पुस्तक-पुस्तिकाओं में इस धर्म पर प्रचुर मात्रा में प्रकाश डाला जा रहा है, बोलने वाला क्यों इनको पढ़कर हिन्दू धर्म का स्वच्छ चित्र पेश नहीं करता? धर्म प्रचार का इस प्रकार महत्त्व बढ़ गया कि सबको इस विषय में अपना मत व्यक्त करना पड़ रहा है।

पश्चिम का प्रकोप

समय-समय पर मारीशसीय विलायत या फ्रांस की यात्रा करते हैं, डाक्टर या बैरिस्टर बनकर लौट आते हैं। वे धर्म से विमुख होकर वेद प्रचार के मार्ग में रोड़े बन जाते हैं। ऐसों से हमारे सेवक जूझते रहते हैं। ऐसे ही लोगों को कलकत्ते में पाकर एक पत्रकार ने यह लिखा था—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"उन्नीसवीं शताब्दी के सुशिक्षित बंगाली अपना सब कुछ खो चुके थे, उनकी आत्मा म्रियमाण-सी हो रही थी। श्वेतांग प्रभुओं के नक्काल के सिवा वे और कुछ नहीं रह गये थे। जान-बूझकर स्व-भाषा भूल जाने की कोशिश की जाती थी। यदि बंग माताएं उस समय नहीं होतीं तो शायद बंगाली अपनी मातृभाषा तक को भूल गये होते। इस प्रकार पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति की सनक उस समय के शिक्षित बंगालियों के ऊपर सवार हो रही थी और ऐसा मालूम पड़ता था कि वे कलकत्ते को लंदन और बंगाल को काला इंग्लिस्तान बनाकर ही छोड़ेंगे। उन्हें इस बात में संदेह होने लग गया था कि भारत की भी अपनी कोई सभ्यता है, निजत्व अथवा वैशिष्ट्य है। उनके विचार से भारत के उद्धार का एकमात्र उपाय था कि वह नेत्रनिमीलित और करबद्ध होकर पाश्चात्य सभ्यता और संस्कृति का अनुकरण करने लग जायें और नख से शिख पर्यन्त उसी रंग में अपने को रंग दें। पाश्चात्य विचारों का उच्छिष्ट चर्वण करके बंगाली अपने धर्म, साहित्य, समाज, अपने घर—यहां तक कि अपने ईश्वर को भी भूल गये। इस प्रकार जिस समय बंगाल पर पाश्चात्य सभ्यता का आवरण आच्छादित हो रहा था और ऐसा प्रतीत होता था कि बंगाल भारतीय सभ्यता और संस्कृति के स्रोत से अपने को सर्वथा विच्छिन्न कर लेगा उस समय बंगालियों को इस अंधकारपूर्ण वर्तमान से उज्ज्वल भविष्य का स्वप्न किसने दिखलाया? साहित्य ने।"

साहित्य ही का सहारा यहां लिया जा रहा है। वेद ने ही साहित्य सृजन का मार्ग प्रशस्त किया। वह देव का काव्य है। वेद से प्रेरित होकर जब कवियों ने रामायण को रचा, समस्त विश्व ने उसका स्वागत किया। १८६३ में फ्रांस के साहित्यसेवी मिशले ने कहा, "यह भारतीय ग्रन्थ क्या ग्रन्थ है, यह तो क्षीर सागर है।"

हमारे धर्म प्रचारक मारीशस का बार-बार दौरा कर रहे हैं और मनोयोग से प्रवचन सुनने वालों से कहते हैं कि वाल्मीकीय रामायण वेदों के भाष्य हैं। वेद ने पहले कहा है, मा भ्राता भ्रातरं द्विक्षत् भाई भाई से द्वेष न करे जिन चार भ्राताओं की कथा रामायण में है, वे सहोदर भाई न थे। उनका भ्रातृप्रेम अनुकरणीय है। वे यह भी सुनाया करते हैं कि वेद के अनुसार विश्व और कुछ नहीं एक नीड है। हम मानव पक्षी बनकर इस घोंसले में रहें और अपने कलरव से सोते से लोगों को उठावें। वे साहित्य का अपूर्व ढंग से प्रचार कर रहे हैं। यहां के साहित्यकार चार बार लिख चुके हैं कि मारीशसीय साहित्य पर भारतीयता के महत्त्व का जो प्रभाव पड़ रहा है।

अब स्पष्ट दिखाई दे रहा है। यह भी लिखा गया कि यह स्वस्थ नवीनता न आती यदि प्रो० विष्णुदयाल असंख्य ग्रन्थ फ्रेञ्च और अंग्रेजी में न लिखते।

विलायत में रहकर हमारे बुद्धिजीवी जो सीखने के योग्य नहीं वही सीखा करते थे। युवक गांधी आरम्भ में इन्हीं की तरह थे। लन्दन में वे अंग्रेज बनने में प्रयत्नशील थे। थोड़े ही दिन में उनके नेत्र खुल गये। औरों ने इस परिवर्तन से शिक्षा न ली।

ये रात-दिन रटते रहते हैं, हम समाजवादी हैं। विलायत के पिछली शती के सबसे बड़े तत्त्वज्ञानी स्पेंसर ने भविष्यवाणी की थी कि जिसे समाजवाद कहा जाता है वह दासता होकर रहेगा और वह दासता मंद न रहेगी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(Socialism will mean slavery, and the slavery will not be mild.)

दुःख से सताये गए अंग्रेज आजकल यह कहे बिना नहीं रहते, "हम केवल काव्य पढ़कर तथा प्रकृति की सुषमा को ध्यानपूर्वक देखकर ही जीवन व्यतीत करने को उद्यत हैं।

(That man) confided to me his opinion that the chief end of life was to read the poets and observe the beauties of nature.—Robert Lynd.)

सुख से जीने की इच्छा हो, तो इस अति सुन्दर विश्व को देखना होगा जो पर्वत, नदी, सरोवर, मैदान से भरा पड़ा है। यह विश्व भी एक काव्य ही है। देव का काव्य देखने का मतलब है एक ओर वेद का अध्ययन करना, जिसके मंत्र तत्त्व-ज्ञान से भरपूर हैं—

The permanent interests of men and women are various and of a wide range with philosophy at one end of the scale.—

और दूसरी ओर रमणीक प्रकृति की गोद में सहर्ष बैठना।

प्रवचनों को सुनते रहने वाले इस बहस से मुग्ध हो गये। वे कहने लगे कि ये दो ईसाई महिलाएं इस बात से अनभिज्ञ हैं कि वे अथर्ववेद के मंत्र 'काव्य को देख' की टीका कर रही हैं। मंत्र के दो अर्थ हैं विश्व को देख अर्थात् नदी, समुद्र, सरोवर, मैदान, पहाड़ी को देख। काव्य का अर्थ है, यह विश्व। दूसरा अर्थ है वेद। तात्पर्य यह हुआ कि पढ़ा करो और प्रकृति के सौन्दर्य को भी देखा करो।

एक बार महात्मा गांधी मोटर में एक बालिका के साथ किसी पर्वत पर जा रहे थे। जब पौ फटते ही बालिका अपनी पुस्तक पकड़कर पढ़ने लगी, गांधी जी ने उसे किताब अलग रखने को कहा और समझाया, यह वेला ऐसी है, जब प्रकृति को देखना चाहिए। गांधीजी ने भी माना कि कभी पढ़ना चाहिए, तो कभी देखना चाहिए। श्रोताओं और पाठकों को ऐसी सामग्री प्राप्त हो रही है, जो उन्हें सोचने को प्रेरित कर रही है। किसी सीमा तक बातचीत का विषय बदल रहा है। वेद मारीशस का उद्धार करने की शक्ति रखते हैं। यह महान् ग्रंथ अन्य देशों का भी मार्ग दर्शन कर सकेगा, यह विचार वेद प्रेमियों को आनन्द-विभोर कर रहा है। डाक विभाग ने जो टिकट जारी किया, उसे देखकर कइयों को वेद देखने की उत्सुकता होगी। वे प्रवचन तथा कथा सुनने को भी उत्सुक होंगे।

धर्मोपदेशक आग्रह करते रहते हैं कि मारीशस का इतिहास वर्तमान भारत के इतिहास के साथ पढ़ा जाये। इन्हीं से प्रेरित होकर मारीशस ने दण्डीजी की जन्मद्विशती मनाई और उसके बाद छत्रपति शिवाजी की निर्वाण त्रिशती तथा पंजाब केसरी महाराज रणजीत सिंह की जन्म द्विशती।

धर्म प्रचारक के मुख से इतिहासकार यदुनाथ सरकार के ये शब्द सुनकर श्रोता मन्त्रमुग्ध होते हैं, "शिवाजी की कीर्ति के प्रकाश से भारत का गगनमंडल उज्ज्वल हो उठा।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे प्रेमचन्द को उनकी जन्म शती के अवसर पर श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हुए यह कहे बिना नहीं रहते कि उस महान् लेखक ने एक मारीशस विषयक कहानी लिखी और अपने उपन्यास 'गोदान' में मारीशस का उल्लेख किया।

भारतवर्ष में उच्च शिक्षा पाने से पहले वासुदेव जी एक इमदादी स्कूल में अध्यापन करते थे। वे उसी युग में यह जानने को उत्सुक थे कि कब वेद भारतेतर देशों में पहुंचे। उन्होंने "विशाल भारत" हिन्दी पत्रिका के अप्रैल १९३२ के अंक में यह पढ़ा।

"अरब का कवि 'नोमान-विन-आदी' अपनी कविता में कहता है: 'विक्रम राजा अपने समय में बड़ा दानी और धर्मात्मा था। हम (अरब) उनके जमाने में अविद्या और मूर्खता में फंसे हुए थे। किन्तु दो धर्मात्माओं ने आकर हमें धर्म और सत्य-असत्य का ज्ञान दिया, विद्या का प्रचार किया। ये दोनों विद्वान् विक्रमादित्य के भेजे हुए भारत में आये थे।"

लाहौर में ये मारीशसीय छात्र स्वामी भूमानन्द से मिलते थे, जिन्होंने अपने वेद-विषयक ग्रन्थ में बताया था कि कवि लबी को ज्ञात हुआ था कि वेद चार हैं। स्वामी जी के दर्शन करने से कुछ साल पहले इस छात्र ने उक्त लेख का यह अंश पढ़ा था—

"लबी की कविता में ऐसी अद्भुत बातों का वर्णन है, जिनका इतिहास में कहीं संकेत तक नहीं मिलता। वह कहता है—

'हे भारत की पवित्र भूमि, तू धन्य है, जिसमें प्रभु ने अपने ज्ञान का प्रकाश किया। वे चारों ज्ञान और प्रकाश के भण्डार जिनकी ज्योति से हमारी आँखें प्रकाशमान हैं, प्रभु ने भारतवर्ष में अपने रसूलों (दूतों) के द्वारा प्रकाशित किये थे। और इन ज्ञान के भण्डारों में प्रभु हमें और सारे प्राणी-मात्र को भी यह उपदेश करते हैं कि हे मनुष्यो, यदि तुम अपना कल्याण चाहते हो, तो वेद की पैरवी करो, जिस को निश्चय ही प्रभु ने मनुष्यमात्र के कल्याण के निमित्त प्रकाशित किया है। वे ज्ञान के भण्डार साम और यजुर् हैं। हे भाइयो, यदि तुम अपना मोक्ष और कल्याण चाहते हो, तो उनके अनुकूल अपने जीवन का सुधार करो। उनमें से जो ऋक् और अतर (अथर्व) हैं, वे हमें उपदेश करते हैं कि हम संसार को भ्रातृ-भाव से मानें। यही मोक्षदाता सुख और कल्याण के मार्ग हैं।"

ये मारीशसीय सेवक उद्विग्न हुए थे, जब उन्होंने सुना था कि बंटवारे के बाद लाहौर में यजुर्वेद के बीसवें अध्याय से लेकर अंतिम अध्याय तक का जो स्वामी भूमानन्द ने उल्था किया था, वह नष्ट हो गया।

इस समय इनकी चिंता यही है कि स्वा० सत्यप्रकाश तथा पं० सत्यकाम विद्यालंकार द्वारा जो चारों वेदों का अंग्रेजी में भाषान्तर हो रहा है, वह अतिशीघ्र संसार को प्राप्त हो। मैक्समूलर द्वारा किये गए भाषान्तर के पश्चात् यह अनुवाद जो निकल रहा है, क्रान्ति मचाये बिना न रहेगा। मारीशस में हमारे धर्मोपदेशक स्पेन देश के महापण्डित निकोला* के ऋग्वेद विषयक ग्रंथ की बार-बार प्रव-

* निकोला भारत में वर्षों वेदाध्ययन करके इस परिणाम पर पहुंच गए हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चनों तथा कथाओं में चर्चा करते जा रहे हैं।

उनके नवीन ग्रंथ का नाम है, Meditation through the Rig Veda जिसके सम्बन्ध में यह कहा गया है—

Maditation through the Rig Veda not only explains the content of the hymns, it also illuminates the meaning of the sound itself as revealed in these great Vedic songs.

(a) Indra is SAT and Vritra ASAT.

(b) The Vedic meter is nearer to music than to poetry.

(c) The eye fastens on what is fixed, the ear is open to the world of movement.

उनका तात्पर्य यह है कि ध्वनि का महत्त्व है अर्थात् मन्त्रों को उचित ढंग से उच्चारित करना चाहिए।

(d) अरविन्द भाष्य को Mystical interpretation बताकर वे स्व० डा० राधाकृष्णन् के बारे में लिखते हैं, "Radhakrishnan is Uncritical."

इस यूरोपीय वेदज्ञ के बारे में यह मत व्यक्त किया गया है—

For many years the Rigveda has been a source of interest and inspiration to western readers...

Dr. de Nicolas, Antonio J. shows how the insights of modern physics apply to the world view expressed in the Vedas.

अब थोड़ा हंस लें

गोपाल— मोहन ! चाय लाभदायक है या हानिकारक ?

मोहन—भाई, यदि पिलाने वाला मिल जाये तो लाभदायक है, और यदि पिलानी पड़ी तो हानिकारक। + +

लुट्टन— क्या करूं बहिन, पता मालूम न होने के कारण मैं मुट्टन को पत्र नहीं लिख सकी। + +

सीता— तुम तो निरा बुद्धू हो। पत्र डालकर उसी से क्यों नहीं पूछ लेती।

एक सेठ— आपका लड़का मोटर कार में घूमता है और आप पैदल क्या बात है ?

दूसरा सेठ— वह धनवान् बाप का बेटा है। + +

बाबाजी ! आप बादाम खा सकते हैं ? नहीं बेटा, मेरे मुंह में दांत हा नहीं हैं।

अच्छा तो यह बादाम रख लो, मैं स्कूल से लौटने पर आपसे ले लूंगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

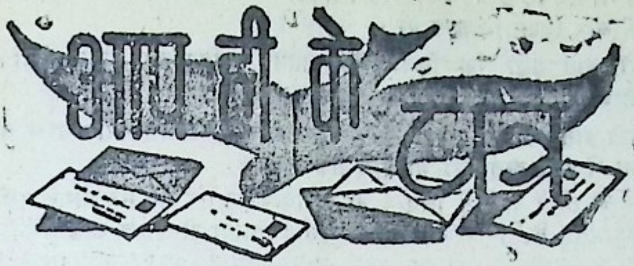

बातें कम, काम ज्यादा

आदरणीय बहन जी, सादरं नमस्तेऽस्तु !

मैंने फरवरी मास के सम्पादकीय में जिसका शीर्षक था, सब चले जा रहे हैं; हिमाचल में हजारों विदेशी पादरी अपना कार्य आरम्भ कर चुके हैं, पढ़ा और काफी समय तक विचारता रहा। अन्त में अन्तरात्मा से एक आवाज उठी कि जो हो रहा है वह ठीक ही हो रहा है। क्यों ठीक हो रहा है, इसलिए कि एक आदमी मृत्यु-शैया पर पड़ा हुआ बीमारी में अपने प्राणों को छोड़ रहा है उसे कोई पूछने वाला नहीं। एक नन्हा बच्चा है जो दर बदर एक-एक पैसे के लिए दिन-भर हाथ पसार रहा है, तन पर कपड़ा नहीं, पेट में रोटी नहीं। मरते को दवाई नहीं। नंगे को हमारे पास वस्त्र नहीं। एक नंगे को वस्त्र दे रहा है और मरते को दवाई। अब विचारणीय विषय तो यह है इन दोनों में गुनाहगार कौन है। एक जिन्दगी भी दे रहा है और जीवन निर्माण के लिए भी सर्वस्व लुटा रहा है, स्वयं को हिन्दू मानने वालों की नजरों में वह बुरा है, और स्वयं कुछ भी तो करने को राजा नहीं।

आज से करीब छः मास पूर्व का बात है। मेरे पास अपने आपको हिन्दू धर्म का ठेकेदार बताने वाले एक व्यक्ति जो इस समय विश्व हिन्दू परिषद् हिमाचल प्रदेश के महामंत्री हैं, आये और जैसे अधिकतर धर्म के ठेकेदार उपदेश देने वाले होते हैं उपदेश करने लगे हिन्दू धर्म खतरे में है, ईसाई बढ़ रहे हैं, मुसलमान बढ़ रहे हैं। हिन्दू दिन-प्रतिदिन घट रहे हैं। हमें कुछ करना चाहिए जिससे हम बच सकें। अधिक क्या, तीन चार घन्टों तक उन्होंने मेरा दिमाग चाटा। अन्त में मैंने उन्हें एक ही बात कही कि डाक्टर साहब हमें ऐसा कार्य करना चाहिए कि जिन्हें हम बुरा कहते हैं उनके कार्य से अच्छा हो। क्या हम ऐसा करने को तैयार हैं ? यदि नहीं, तो इन थोथे उपदेशों से कुछ भी नहीं होने का। उन्होंने इसके उत्तर में बड़ी-बड़ी योजनायें बताईं। हम जोगेन्द्र नगर में कारखाने लगवा रहे हैं, जहां गरीब बच्चों को काम मिलेगा। कांगड़ा में भी काफी अधिक कार्य किया जा रहा है। आप यहां के बारे में बताओ कि क्या करना चाहिए।

मैंने कहा कि ईसाई धर्म का तो यहाँ पर भी जोरदार प्रचार हो रहा है। चर्च बन चुकी है, काफी अधिक व्यक्ति ईसाई भी बन गए हैं। वे लोग गरीब हैं, उन्हें पैसा मिलता है जिससे वे अपनी आजीविका चला रहे हैं। उन्हें उनकी आजीविका से

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छुड़वाना पाप है। जब डाक्टर जी नहीं माने तो मैंने दो तीन सुझाव उनके सामने रखे।

प्रथम तो यह कि यहां पर संस्कृत विद्यालय चलाना चाहिए जहां गरीब बच्चे पढ़ सकें और शिक्षा निःशुल्क हो।

दूसरी बात कही कि सिलाई सैंटर होना चाहिए जहां गरीब लोगों की बच्चियां सिलाई के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकें।

तीसरी बात कही कि हाथकरघा वगैरह लगवा दो जिससे गरीब बच्चे चार रुपये भी कमा लें और दस्तकारी भी सीख सकें।

डाक्टर जी तीनों बातों के लिए राजी हो गये परन्तु एक शर्त मेरे सामने रखी। वह थी कि विद्यालय के लिए किसी दानी से जमीन दिलवा दो। यह कार्य मेरे लिए असम्भव-जैसा था क्योंकि मैं यहां का रहने वाला नहीं हूं। परन्तु कहावत है कि खोजने से तो परमेश्वर भी मिल जाता है। मैंने खोज की और जमीन का प्रबन्ध भी कर दिया। लोगों में प्रसन्नता की लहर उठी कि यहां पर संस्कृत विद्यालय खुल रहा है। डाक्टर साहब जिला मंडी में रहते हैं। मैं उनसे वहां जाकर भी मिला—एक बार नहीं अपितु तीन बार। पत्रों के बारे में लिख नहीं सकता क्योंकि मेरे लिए तो यह एक शर्म की बात बन गई। अफसोस की बात है कि डाक्टर जी ने पत्रोत्तर ही न दिया। काम करने की तो बात दूर रही। यह है धर्म के ठेकेदारों की हालत, अब आप स्वयं विचार लें।

एक अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति आपने भी बनाई हुई है। क्या यह रक्षा समिति भी वैसी ही है? जितनी ये समितियां और संघ अधिक बन रहे हैं हिन्दू उतने ही अधिक बंट रहे हैं। जब एक विश्व हिन्दू परिषद् बनी हुई थी तो दूसरी अखिल भारतीय समिति की क्या आवश्यकता पड़ी? क्यों नहीं संगठित हो जाते? क्यों भाई से भाई अलग होते जा रहे हैं? थोड़े-से सैद्धान्तिक मतभेदों से भाई भाई से लड़ रहा है। एक भाई आर्यसमाज जाता है तो दूसरा भाई शिव मन्दिर चला जाये तो दुःख काहे का? आखिर है तो भाई ही और हिन्दू धर्मावलम्बी ही। जहां तक मैं जान पाया हूं, आज आर्यसमाज के पास कर्म प्रधान नहीं तर्क प्रधान है। दूसरे की बात मानने को तो हम राजी हैं ही नहीं। ठीक है कोई समय था जब तर्क की आवश्यकता थी, आज तो संगठित होना अनिवार्य है। उदार चित्त और भ्रातृत्वभावना की जरूरत है। आज चाहे राम का उपासक है, चाहे कृष्ण का गीत गायक है, चाहे महर्षि दयानन्द जी का सैनिक है, सभी एक ओ३म् के झण्डे के नीचे खड़े हो जाओ। किसी को तलवार से मत बदलो—विचारों से बदलो।

आपने पूछा है कि हिमाचल को नागालैण्ड बनने देंगे या कुछ करेंगे? बहनजी, आप मेरी बड़ी बहन हैं, धृष्टता के लिए क्षमा चाहता हूं। आज कुछ कहने की बजाय करना होगा, थोथे उपदेशों से कुछ भी नहीं होने वाला है। ईसाई अपना सर्वस्व लगा रहे हैं और हमारे कानों पर जूं तक नहीं रेंगती है। फिर होगा क्या? इसलिए सभी भेदभावों को मिटाकर सभी हिन्दुओं को गरीबों की सेवा के लिए तन, मन, धन लगा देना चाहिए। तभी भला होगा।

आपका भ्राता
विद्यानिधि आर्य,
उच्चस्तरीय पाठशाला करसोंग, जिला मण्डी, हिमाचल प्रदेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"रजनीश हिन्दू संस्कृति को नेस्तनाबूद करने में लगे हैं"

आदरणीय श्रीमान् महात्मा वेदभिक्षु जी,

सादर चरणस्पर्श ।

मैं रीवां (म० प्र०) में स्थित आर्यसमाज का सदस्य हूं ।

श्रद्धेय श्री आर्य नरेश दर्शनाचार्य जी द्वारा लिखित पुस्तकें 'वाममार्ग से काम योग तक' एवं 'भोग और भगवान्' पढ़ीं ।

ऐसी पुस्तकों की काफी समय से आवश्यकता अनुभव की जा रही थी । उनके प्रति मैं व मेरे कई मित्र बहुत आभारी हैं ।

मैंने स्वयं भी तथाकथित भगवान् श्री रजनीश द्वारा लिखित पुस्तकें 'संभोग से समाधि' तथा 'युवक और सेक्स' पढ़ी हैं ।

सार यही है कि उक्त भगवान् रजनीश हिन्दू संस्कृति को नेस्तनाबूद करने में लगे हैं । इस बात में तनिक भी संदेह नहीं है ।

वैसे मैं स्वयं भी अपने स्तर पर भरसक प्रयास कर रहा हूं । आपसे विनम्र निवेदन है कि—

(१) तथाकथित भगवान् रजनीश के विरोध में और अधिक साहित्य प्रकाशित करायें । एक पुस्तक तो ऐसी हो जिसमें रजनीश द्वारा लिखित सभी भ्रामक पुस्तकों की चर्चा व उसके उद्धरण हों । वैसे आर्य नरेश जी की पुस्तक इस कमी को काफी हद तक पूरा करेगी, ऐसा विश्वास है ।

(२) रजनीश साहित्य के बहिष्कार हेतु आर्यसमाज की पत्रिकाओं व अन्य सभी समाचारपत्रों में लेख, सम्पादक के नाम पत्र आदि अवश्य छपा करें ।

(३) पूना स्थित आर्यसमाज द्वारा व्यापक विरोध व तीव्र अभियान इस बात के लिए चलाया जाना चाहिए कि रजनीश आश्रम पूना से हटाया जाये । सुना है कि पूना की जनता आश्रम के विरोध में है । अतः अवश्य ही जनता का सहयोग मिलेगा ।

सुझाव है कि पूना स्थित आर्यसमाज के कम से कम दस कार्यकर्ता रजनीश आश्रम को हटाने के लिए प्रबल जनमत जाग्रत करें ।

इस कार्य हेतु आर्यसमाज द्वारा एक विशेष सम्मेलन पूना में किया जाना चाहिए ।

(४) रजनीश को शास्त्रार्थ के लिए चुनौती दी जाये तथा उसे समाचारपत्रों में प्रकाशित कराया जाये ।

ज्ञात हुआ है कि उसके एक प्रवचन में आर्यसमाज जैसे विशाल और राष्ट्रहितकारी संगठन के बारे में यह कहा गया है कि **आर्यसमाज का जन्म चूहे से हुआ तथा आर्य संस्कृति 'चूहा संस्कृति' है ।**

ये बातें सहन किये जाने योग्य नहीं हैं ।

अधिक क्या लिखूं । मुझ जैसे अनेक व्यक्ति तथाकथित भगवान् रजनीश के साहित्य के विरोधी हैं । अतः अवश्य ही इस दिशा में कुछ ठोस कार्य होना चाहिए ।

—वेदप्रकाश अग्रवाल

रीवां

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चारों शंकराचार्यों को एक मंच पर लायें

आदरणीय वेदभिक्षु जी;

आपका पत्र मिला। आप हिन्दुओं को जगा रहे हैं, यह तो अच्छा कर रहे हैं, लेकिन आप अपने सिद्धान्तों को न छोड़िये। संकट काल में उनकी आवश्यकता घटी नहीं, बढ़ी है। हिन्दू रक्षा समिति को चाहिए कि वह सब धर्मगुरुओं, संन्यासियों, महामंडलेश्वरों, चारों शंकराचार्यों आदि को एक मंच पर लाये और उन्हें इस बात के लिए राजी करे कि वे विशाल हिन्दू समाज को वेद की पताका के नीचे लायें। मन्दिरों की आय धर्मप्रचार में व्यय की जाये। हिन्दुओं का एक मंच बने। बाद में सब हिन्दुओं को आर्यसमाज के नियमों और अनुशासन से बांधा जाये। मेरा निश्चित मत है कि देश का कल्याण आर्यसमाज ही कर सकता है।

पार्ली—वैजनाथ (डा०) सु० ब० काले

आर्य रक्षा समिति क्यों नहीं ?

आदरणीया श्रीमती राकेशरानी जी,

प्रणाम।

आपके सम्पादकत्व में प्रकाशित जन-ज्ञान पढ़कर मुझे बहुत प्रसन्नता होती है। इसकी आवाज केवल आर्यों की आवाज नहीं, मानवमात्र की आवाज है। फिर आप 'हिन्दू' सदृश संकुचित शब्द को पकड़कर क्यों बैठ गई हैं? आपको तो हिन्दू रक्षा समिति गठित न करके आर्य रक्षा समिति का गठन करना चाहिए था। अब भी देर नहीं हुई, आपको अपनी समिति का नाम बदल देना चाहिए।

अपने इस विचार के बावजूद मैं यह कहने को तैयार हूं कि कभी-कभी शाश्वत धर्म की अवधारणाओं को शिथिल करके प्रचलित युगधर्म अथवा आपद्धर्म को भी अपनाना पड़ता है। लेकिन मैं हिन्दू संगठन को सार्वकालिक कर्त्तव्य मानने को तैयार नहीं। जैसे आपने भारत रक्षा समिति का नाम बदलकर हिन्दू रक्षा समिति कर दिया, वैसे ही युग के तकाजे को देखकर भविष्य में आपको इसका नाम बदलकर आर्य रक्षा समिति करने के लिए भी तैयार रहना चाहिए।

चौरंगी (प्रतापगढ़) रज्जनलाल

सम्पादकीय प्रेरक है

माननीय बहिन राकेश रानी जी !

"जन-ज्ञान" फरवरी अंक मिला। 'सम्पादकीय' प्रेरक है।

मुरादाबाद में प्रोफैसर रामसिंह जी के कवियों के बारे में प्रकट विचारों से मैं पूर्णतः सहमत हूं।

जब संक्रमण काल हो, राष्ट्र की आधारशिला पर कुठाराघात हो रहे हों उस समय श्रृंगार व भोंडे कुत्सित हास्य का सहारा लेकर, साहित्यिक व सामाजिक वातावरण को उथला करने वाले तथाकथित कवियों को मंच व पत्रिकाओं में स्थान मिलना बन्द होना चाहिए।

"जन-ज्ञान" के माध्यम से मैं अपने कवि बन्धुओं से प्रार्थना करना चाहूंगा कि वे आत्मचिंतन, ओज व विश्वास से पूर्ण रचनाओं द्वारा राष्ट्र की चेतना को झकझोरें। समय की यही पुकार है।

आगरा हरिमोहन कोठिया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्ञानी जैलसिंह का धन्यवाद

महोदय,

मैं गृहमन्त्री ज्ञानी जैलसिंह को उनकी इस स्पष्ट घोषणा के लिए हार्दिक धन्यवाद देता हूं कि "किसी भी धर्मनिरपेक्ष देश में मजहब के आधार पर नौकरियों में भरती नहीं की जा सकती।"

इस घोषणा से जामा मस्जिद के शाही इमाम सय्यद अब्दुल्ला बुखारी सदृश उन सभी जनूनी साम्प्रदायिक नेताओं के मुंह बन्द हो जाने चाहिए, जो सैनिक और अर्ध-सैनिक बलों में मुसलमानों को आनुपातिक प्रतिनिधित्व देने की ही मांग नहीं करते रहे, अपितु इससे भी अधिक सीटें आरक्षित करने पर जोर देते रहे हैं।

गृहमन्त्री ने यह आश्वासन लोकसभा के पिछले सत्र में जनता पार्टी के एक सदस्य डॉ० सुब्रह्मण्यम् स्वामी को दिया, जब डा० स्वामी ने गृहमन्त्री को याद दिलाया कि इन्दिरा जी ने लोकसभा के चुनाव से पूर्व शाही इमाम को कुछ आश्वासन दिये थे। गृहमन्त्री ने न केवल ऐसे किसी भी आश्वासन अथवा समझौते के अस्तित्व से इनकार किया, अपितु बहुत स्पष्ट शब्दों में कहा कि मजहब के आधार पर सीटों का आरक्षण नहीं हो सकता। उन्होंने कहा कि "मैं अपनी पूरी प्रचंडता के साथ यह घोषणा करता हूं।"

यदि मुसलमानों को धर्मनिरपेक्ष भारत का निष्ठावान् नागरिक बनकर रहना है, तो उन्हें अपने संकीर्ण और साम्प्रदायिक दृष्टिकोण को छोड़ना होगा। यदि वे सैनिक और अर्ध-सैनिक बलों में पर्याप्त प्रतिनिधित्व पाना चाहते हैं, तो उन्हें इसके लिए कठोर परिश्रम करना होगा। उन्हें सीटें तभी मिल सकती हैं, जब वे सम्बन्धित प्रतियोगिता परीक्षाओं में सफलता प्राप्त करें।

बम्बई — सदाजीवतलाल चन्दूलाल बहल

स्वामी श्रद्धानन्द का हत्यारा कौन ?

महोदय

सन् १६२२-२३ में मलाबार में मोपलों ने हिन्दुओं की हत्या की। इस पर गान्धी जी ने कहा कि मलाबार के अत्याचारों के पीछे अंग्रेजों का हाथ था। मुसलमानों का क्या दोष? इन्हीं दिनों देश-भर में जो दंगे हुए, उनके कारण जानने के लिए कांग्रेस ने एक जांच समिति गठित की। इस समिति के अध्यक्ष श्री मोतीलाल नेहरू थे और सदस्यों में एक थे मौलाना अबुलकलाम आजाद। समिति ने रिपोर्ट दी कि हिन्दू-मुस्लिम दंगे स्वामी श्रद्धानन्द के कारण हुए। उपद्रवी मुसलमानों, सत्ता के भूखे नेताओं और 'बांटो व शासन करो' की नीति पर चलने वाले चालबाज अंग्रेजों ने स्वामी जी को खूब बदनाम किया। पागल अब्दुलरशीद ने उनकी हत्या कर दी। उसे फांसी मिली। लेकिन यह प्रश्न अब भी बना हुआ है कि स्वामी जी की हत्या के पीछे काम करने वाला दिमाग किसका था?

हैदराबाद

गंगाराम
उपप्रधान, आर्य प्रतिनिधि सभा
आन्ध्र प्रदेश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महाप्रयाण : फांसी

—ईश्वरप्रसाद वर्मा

१९ दिसम्बर १९२७ सोमवार को प्रात: रामप्रसाद 'बिस्मिल' नित्य की भांति उठे, स्नान किया, वन्दना की और धोती-कुरता पहन चल पड़े अपनी अन्तिम यात्रा की पगडण्डी पर।

रामप्रसाद जी आज बहुत प्रसन्न थे। हँस-हँस कर वे जेल के अधिकारियों एवं अन्य बन्दियों का अभिवादन स्वीकार करते हुए आगे बढ़ रहे थे।

"भारत माता की जय !", "वन्देमातरम् !!" के अतिरिक्त वे कुछ न कहकर फांसी के तख्ते के निकट बढ़ते गये और धीरे-धीरे वे उसके समीप पहुंचकर स्वयमेव उस तख्ते पर चढ़ गये। वहां पहुंचते ही उन्होंने हृदयोद्गार प्रकट करते हुए कहा—

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे।
बाकी न मैं रहूं न मेरी आरजू रहे॥
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे।
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे॥

इसके बाद उन्होंने जोर से कहा—मैं ब्रिटिश साम्राज्य का विनाश चाहता हूं।

दो मिनट शान्त रह मुखर हो—ओ३म् विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव। यद्भद्रं तन्न आसुव। आदि मन्त्र का जाप कर कहा—

मरते 'बिस्मिल', 'रोशन', लाहिड़ी, अश्फाक अत्याचार से।
होंगे पैदा सैकड़ों इनके रुधिर की धार से॥

और अन्तिम बार धरती माता को प्रणाम किया—धूलि को माथे पर चन्दन की भांति लगाया और 'वन्देमातरम्' कहते हुए फन्दे से झूल गये। देशभर में हलचल मची। "बिस्मिल शहीद हो गये।"

तब देश के हर नर-नारी अबोध बालकों तक की जिह्वा से उनकी वांणी गूंज उठी—

शहीदों की चिताओं पर लगेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशाँ होगा॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सैयां भए कोतवाल

—अवनीन्द्रकुमार विद्यालंकार

ईद की नमाज के बाद मुरादाबाद में भयंकर दंगा हुआ। ११ साल से ईदगाह में दंगा नहीं हुआ था। मुरादाबाद शहर की जनसंख्या में मुसलमान ६० प्रतिशत हैं। मुस्लिमेतर ४० प्रतिशत हैं। इस प्रकार मुसलमान बहुसंख्या में हैं। भारत में इस्लाम आक्रामक है। साम्प्रदायिक दंगों का आरम्भ इसी पक्ष से होता है। यह इसके अस्तित्व के लिए जरूरी माना जाता है।

टॉमस लगभग ६३ ई० में भारत आ गया था। वह केरल चला गया। ऑर्थोडॉक्स सीरियन क्रिश्चियन चर्च की स्थापना की गई। ईसाइयों ने अपना प्रचार राज्य शक्ति के प्रभाव, अस्पतालों और विद्यालयों के माध्यम से मुख्यतः किया। इस पर भी १९८० ई० में भारत प्रायद्वीप में ईसाइयों की संख्या दो करोड़ से कम ही है – यद्यपि ये ३० प्रतिशत की रेट से बढ़ते हैं।

इसके विपरीत सन् ७३२ में इस्लाम आक्रान्ता होकर आया। पहले दौर में मुलतान पहुंचा। सूर्य का मन्दिर ढाह दिया। दूसरा दौर १२वीं सदी के अन्त में प्रारम्भ हुआ। यह फैला तलवार के बल से। स्वर्ग-नरक के ठेकेदार नपुंसक ब्राह्मण वर्ग ने इस्लाम की दासता स्वीकार करने और भारत की सामाजिक व्यवस्था के लंगड़े होने, भारत भूमि के प्रति भक्ति, निष्ठा व श्रद्धा के अभाव के कारण विशेषतः तथाकथित उच्च वर्ग में तेजी से फैला। फलतः भारत प्राय द्वीप में मुस्लिमों की संख्या अफगानिस्तान समेत लगभग २६-२७ करोड़ है। ब्रिटिशों ने इनको बढ़ाया क्योंकि १८८२ की जनगणना में सीमाप्रान्त समेत पंजाब में भी मुसलमान बहुसंख्यक न थे, अतः यहां सिक्ख कौम पैदा की गई। खालसा कालेज और स्कूल इसी ब्रिटिश नीति का फल है। आर्य जाति का नाम तक मिटा देने के प्रयास में वह एक कदम है। मुस्लिमों ने काफिर के अर्थ में हिन्दू का व्यवहार किया। नपुंसक और दासता में अपनी प्रभुता देखने वाले ब्राह्मण वर्ग ने इस नए नामकरण को खुशी-खुशी स्वीकार कर लिया। ब्रिटिशों ने इसको बढ़ाया। १८५० ई. में जोन्स ने ऋग्वेद का अनुवाद किया। इसने भूल कर भी आर्य शब्द का प्रयोग नहीं किया। हिन्दू का व्यवहार किया है। अनुवाद का उद्देश्य हिन्दू संस्कृति को जानना है।

इसके विपरीत प्रथम आई. सी. एस. रमेशचन्द्र दत्त ने प्राचीन भारतीय सभ्यता का इतिहास लिखा है। इसमें आर्य जाति शब्द का व्यवहार किया गया है। आर्य शब्द की व्युत्पत्ति ऋ गतौ धातु से की गई है। आर्य जाति का जीवन मंत्र है—

स्वस्ति पन्थामनुचरेम सूर्याचन्द्रमसाविव।
पुनर्ददताऽघ्नता जानता संगमेमहि॥ (ऋग्वेद)

विश्वविजयी आर्य जाति को नामशेष करना यूरोप को भी इस्लाम के समान अभीष्ट था। सन् १८५७ की जन क्रांति को रोकने के लिए ब्रिटेन ने इस देश को आर्य-आर्येतर में नहीं बांटा। बांटा मुस्लिम-गैरमुस्लिम में। भारत का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विभाजन इसी आधार पर हुआ। कांग्रेस और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ दोनों विभाजन के समर्थक हैं और विभाजन का अन्त नहीं चाहते, क्योंकि दोनों ब्राह्मण प्रभुत्व वाली पार्टियों के हैं। इस वास्ते ये दोनों एक दूसरे के विरोधी हैं। दोनों का आधार भारत भूमि के प्रति भक्ति नहीं। ब्रिटिश व रूसी भक्ति है। भारत का शासक वर्ग अंग्रेजी पठित वर्ग है। इसी वास्ते यह संस्कृत के नाम तक से चिढ़ता है। रेडियो का प्रोग्राम वेद मंत्रों से प्रारम्भ करने से इन्कार करता है। जबकि खेल और शब्द वेद के हैं और ये दोनों शब्द ७० प्रतिशत निरक्षर जनता की दैनिक व्यवहार की बोली के शब्द हैं।

आज भारतीय जनता जो निरक्षर है अपने वेदों के शब्दों का प्रयोग करती है, क्योंकि ये शब्द उनके जीवन में समाये हुए हैं। ७० प्रतिशत निरक्षर जनता के रोजमर्रा की बोली के शब्द हैं या नहीं? फिर भी शासन और ब्रिटिश - रूस भक्त संस्थाएं व दल अंग्रेजी, उर्दू और विदेशी भाषाओं का प्रचार करते हैं। आर्यसमाज ने ऋषि की स्मृति में स्थापित किया दयानन्द एंग्लो—वैदिक कालेज। इस प्रकार ब्रिटिश भक्ति का प्रचार किया। ब्रिटिश दासता को पुष्ट किया। भारत संतान होने का गौरव नष्ट किया। भारत के गौरवपूर्ण भूत को विलुप्त करने में सहायता दी।

ब्रिटिश ने इस देश में नागरिकता के लिए भूमि, देश, रक्त या वंश का आधार माना। क्योंकि इस्लाम के समान ब्रिटेन भी ऋषि दयानन्द की इस अमर वाणी को मूर्त रूप में देखना नहीं चाहता था।

एक समय सम्पूर्ण ज्ञात संसार पर आर्य जाति का सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य था। अन्य सब मांडलिक राजा थे। भूत भविष्य में बदलता है। यह सनातन नियम है।

राष्ट्र अभ्युदयाय प्रार्थना

असति सत्प्रतिष्ठितम् सति भूतं प्रतिष्ठितं
भूतं भव्य आहितं भव्यं भूते प्रतिष्ठितम्।
उद्यते नम उदयते नम उदिताय नमः।
विराजे नमः स्वराजे नमः सम्राजे नमः॥

"एको वीरः शतं सेना अजयत्" इस सिंह गर्जना के पीछे जो टेकनॉलॉजी (यंत्र-तंत्र-विज्ञान) है इसका अलोक भारत में फैलने पर क्या रूस का विशाल साम्राज्य रह सकेगा? फिर भारत विभाजक कांग्रेस, कम्युनिस्ट, सोशलिस्ट और इस्लाम एक गुट क्यों न आर्य जाति के विरोध में बनायें और मुरादाबाद में प्रकट इस्लामी आक्रामक मनोवृत्ति के पक्ष में पाकिस्तान के साथ स्वर मिलाकर विलाप करें?

भारती जन के प्रबल होने पर आर्य जीवन प्रणाली छोड़ लोभ, भय और राजनीतिक कारणों, सामाजिक विवशता से इस्लामी हो गए फिर क्या मुस्लिम रहना पसन्द करेंगे? यह मुसलमानों को १९१९ से विशेष रूप से सता रहा था, जब एक आर्य संन्यासी ने जामा मस्जिद दिल्ली के मिम्बर पर खड़े हो विश्व इतिहास में एक नया अध्याय लिखा। गांधी भक्त श्री बृजकृष्ण चांदीवाले का कहना है कि इस दिन इस समय जामा मस्जिद के सामने मुसलमानों की जितनी भीड़ थी, उतनी फिर कभी दिखाई नहीं दी। इसे काल्पनिक और स्वप्न नहीं कहा जा सकता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह काल्पनिक नहीं है। जामिया मिल्लिया इस्लामिया के वाइस-चांसलर डा. जाकिर हुसेन ने १९३५ या १९३६ में काशी विद्यापीठ में दीक्षान्त भाषण दिया था। मुसलमान आजादी की लड़ाई में क्यों नहीं भाग लेते? इसका जवाब देते हुए कहा था—मुसलमानों को भय है कि सच्ची नेशनल हुकूमत स्थापित होने पर इस्लाम खतरे में पड़ जायेगा। पर मुझे पूरा यकीन है कि इस्लाम इससे पार हो जायेगा।

स्पष्ट है सच्ची नेशनल हुकूमत इस देश में स्थापित नहीं हुई। डा. जाकिर हुसैन को भारत भूमि के प्रति निष्ठावान् और भक्तिमान् होने की शपथ नहीं लेनी पड़ी। अल अजहर यूनिवर्सिटी में भाषण देते हुए डा० जाकिर हुसेन ने कहा—भारत में हमारी विचित्र स्थिति है। अब तक हम शासक व स्वामी होकर रहे हैं या दास-गुलाम होकर रहे हैं। परन्तु भारत में अब हम आधे के हिस्सेदार हैं।

भारत विभाजक और मिथ्याभाषी कांग्रेस और श्रीमती गांधी शासन कर रही हैं, जहाँ की सामान्य जनता कहती है—

चन्द्र टरे सूरज टरे,
टरे जगत व्यवहार।
पै दृढ़व्रत हरिश्चन्द्र का
टरे न सत्य विचार।

क्योंकि विदेशी एवं अभारतीय तत्त्वों की चरण सेवा करते हैं। भारत विभाजक अलीगढ़ मुस्लिम विश्व विद्यालय का कायम रहना किस बात का प्रमाण है?

सेक्युलर का पर्यायवाची शब्द सन्त विनोबा भावे ने ऐहिक या लौकिक दिया है। ब्रिटेन और यूरोप में इसी अर्थ में सेक्युलर शब्द का प्रयोग होता है। नागरिक कानून सबके लिए एक है। किन्तु भारत में सेक्युलर का चोला पहना जाता है इस्लाम को बढ़ाने और भारत को विश्व इस्लाम का केन्द्र बनाने के वास्ते। इसी वास्ते विवाह और उत्तराधिकार के कानून विभक्त भारत के ६५ करोड़ जनों के लिए एक नहीं हैं। सिनेमा एक्टर विनोद मेहरा बिंदिया गोस्वमी से विवाह करने के लिए पहली पत्नी का परित्याग किए बिना मुसलमान हो गया और दूसरी शादी रचा ली। कांग्रेस के शब्द कोश में सेक्युलर का अर्थ है विश्व इस्लाम का भारत को केन्द्र बनाना। इसी अवस्था में भारत विभाजक कांग्रेस का अस्तित्व बना रह सकता है और अंग्रेजी पठित वर्ग राज्य कर सकता है।

मिस्र ने विश्व इस्लाम का केन्द्र बनने से इन्कार कर दिया। वह इस्राईल से लड़ने की हिम्मत नहीं रखता। मलेशिया और पाकिस्तान भी नहीं बन सके। इस्लामी वुद्धि केन्द्र ये नहीं हो सकेंगे। अतः श्रीमती गांधी ने अलीगढ़ यूनिवर्सिटी को विश्व इस्लाम का केन्द्र बनाने के लिए मुसलमानों के हाथों में सौंपना और भारत के कोश से इसके वास्ते व्यय करना मान लिया है। क्या इस पर भी कांग्रेस घोर साम्प्रदायिक संस्था नहीं है और श्रीमती गांधी मूर्तिमान् सम्प्रदायिकता नहीं? यह होने के बाद भी इस्लाम को अपनी शक्ति का परिचय देने की आवश्यता थी?

कम्युनिज्म का डंका बज रहा है, क्योंकि रूसी सेना के पास आणविक हथियार का विशाल भंडार है। भारत में इस्लाम यह कार्य साम्प्रदायिक दंगे आयोजित कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

के कर रहा है। सन् १६२४ में बन्नू-कोहाट में भयंकर दंगा हुआ। कांग्रेस ने महात्मा गांधी और मौ० शौकत अली को जाँच करने के लिए भेजा। दोनों एक निर्णय पर न पहुंच सके। महात्मा गांधी ने दंगे के लिए मुसलमानों को दोषी ठहराया। कांग्रेस ने गांधी जी की रिपोर्ट प्रकाशित नहीं की। गांधी जी ने भी न इसका आग्रह किया न अनशन करने की धमकी दी। इस्लाम जानता है वह कुछ भी कर, शिशुपाल के १०० अपराध श्री कृष्ण ने माफ करने का जैसे वचन दिया था, उसी प्रकार भारत में उसको अभय दान ब्राह्मणों से प्राप्त है। १६३१ में कानपुर में प्रताप सम्पादक गणशशंकर विद्यार्थी की हत्या की गई। इसकी प्रतिक्रिया हुई। ठीक उसी समय गोरी फौज आ गई। मुसलमानों ने पहले पीटा और फिर पिटने से भी बच गए। वे यह जानते हैं। मुरादाबाद में भी यही हुआ।

मुरादाबाद के साथ ही लगे बरेली और रामपुर हैं। रामपुर के छुरे भारत में प्रसिद्ध हैं। पीलीभीत भी रुहेलखण्ड में है। अलीगढ़ और दिल्ली से मुरादाबाद कितनी दूर है? मुरादाबाद को उसकी भौगोलिक स्थिति मुस्लिम केन्द्र बनाती है। यहां दंगा आयोजित था। इच्छित परिणाम हुआ। जामा मजिस्द के इमाम ने और दिल्ली के ले० गवर्नर ने कहा यह मुरादाबाद की प्रतिक्रिया है। इसका अर्थ हुआ मुस्लिम कानून से उपर हैं। इसकी आड़ में कानून अपने हाथ में लिया और बदला लेने की ठानी। इसी प्रकार राज्य सभा में प्रधान मन्त्री द्वारा इस्लाम के लिए आश्वासन का क्या अर्थ है?

वस्तुतः यदि साम्प्रदायिक दंगों का अन्त चाहते हैं, तो जो व्यक्ति या समुदाय इस देश की मिट्टी को सिर पर रखने को तैयार नहीं, जो मूंछ-दाढ़ी के कट में पृथक्ता रखता है, जो प्राचीन भारत का अस्तित्व स्वीकार नहीं करता, जो वेद को राष्ट्रीय निधि नहीं मानता और इसकी रक्षा करना आपना परम कर्त्तव्य नहीं मानता, उसे भारत का नागरिक न माना जाय। इसके अभाव का अर्थ इस्लामी मनोवृत्ति का बढ़ाना व जीवित रखना है और भारत की शान्ति को इस्लामी सनक पर बलिदान करना हैं। श्रीमती गांधी वस्तुतः भारतीय राष्ट्रवाद की भक्त नहीं। उर्दू और अंग्रेजी का प्रचारक क्या भारत का भक्त हो सकता है?

इतिहास सदन, ए-२३६, पंडारा रोड, नई दिल्ली-११०००३

भारत में बन रहे १२ से अधिक

मुस्लिम विश्वविद्यालय

रोके जाएं।

—वेदभिक्षु:

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपनी जानकारी बढ़ाइये

- ☐ टेलीविजन का आविष्कार श्री जे. एल. बेयर्ड ने किया था।
- ☐ दुनिया में सबसे ऊँचा पठार 'पामीर' (तिब्बत) है।
- ☐ भारत में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ा राज्य 'मध्य प्रदेश' है।
- ☐ विश्व-भर के देशों में सबसे अधिक डाकघर भारत में हैं।
- ☐ जापान को उगते सूर्य का देश कहा जाता है।
- ☐ इटली व तुर्की के सिक्कों का नाम 'लीरा' है।
- ☐ भारत में (शायद विश्व में भी) 'जामा मस्जिद' सबसे बड़ी मस्जिद है।
- ☐ संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना २४ अक्तूबर १९४५ को हुई थी।
- ☐ अन्तरिक्ष आयोग की स्थापना जून १९७२ में हुई थी।
- ☐ विश्व का सबसे ऊंचा बांध 'भाखड़ा नांगल' (भारत) है, जिसकी ऊँचाई १,००० फुट है।
- ☐ विश्व का सबसे लम्बा बांध 'हीराकुड' उड़ीसा (भारत) में है।
- ☐ विश्व की सबसे बड़ी दूरबीन सोवियत संघ में है।
- ☐ पृथ्वी का व्यास लगभग १२,८०० कि. मी. है।

ऐसे थे स्वामी दयानन्द

एक बार स्वामी दयानन्द एक सभा में बैठे अपना प्रवचन कर रहे थे। सब लोग बड़ी तन्मयता से उनके द्वारा कही हुई शिक्षा की बातों में लीन थे। इतने में एक अभिमानी और दबंग पंडित सभा में आया और स्वामी दयानन्द के आसन से भी अधिक ऊँचे आसन पर आकर बैठ गया।

यह बात श्रोताओं को बहुत बुरी लगी। उन्होंने इस व्यवहार का विरोध किया। स्वामी दयानन्द ने, जो बड़े हाजिरजवाब थे, तत्काल ही लोगों को समझा दिया, "वह देखो, नीम पर कौआ बैठा है जो इन महाशय से भी ऊंचे आसन पर विराजमान है। भाइयो, अच्छे गुणों से मनुष्य महान् होता है—केवल ऊंचे आसन पर बैठने से नहीं।"

उनका यह उदाहरण सुनकर वह अभिमानी लजा गया और नीचे बैठ गया।

—बाबूराम शर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माता-पिता के प्रति सन्तान का कर्तव्य

★ १. तुम सब कुछ भूल जाना, परन्तु अपने माँ-बाप की सेवा करना कभी न भूलना।

★ २. उनके तुम पर अगणित उपकार हैं; अपना सुन्दर जीवन बिताने के लिए उन्हें निरन्तर याद रखना।

★ ३. जो माता-पिता संतान से सेवा की आशा करते हों, संतान को योग्य बनाने का हर संभव प्रयत्न करना उनका कर्तव्य है।

★ ४. भूखे-प्यासे रहकर भी अपने मुंह का ग्रास तुम्हारे मुँह में देकर जिन्होंने तुम्हें पाला-पोसा है, उनके प्रति तुम कभी कठोर व्यवहार न करना।

★ ५. भले ही तुम लाखों रुपये कमाते हो, यदि माता-पिता की आत्मा को तुमने अपने सद्व्यवहार से तृप्त नहीं किया, तो तुम्हारे कमाये हुए लाखों रुपये कूड़े के ढेर के समान ही हैं।

★ ६. तुम माता-पिता के प्रति कुछ भी करोगे, उसका शुभ फल तुम्हें अपने जीवन में अवश्यमेव मिलेगा।

★ ७. माता-पिता या अन्य गुरुजनों ने तुम्हारे मार्ग में सदा प्रेम-पुष्प बिछाये हैं; उनके मार्ग में कभी काँटे न बिछाना।

★ ८. माता-पिता का सेवक निर्धनता में भी सुखी है। सेवा न करने से धनी होते हुए भी दुःखी ही है।

★ ९. जो माता-पिता की सेवा तथा आज्ञा-पालन नहीं करता, उसे बुजुर्गों का शुभाशीर्वाद कदापि नहीं मिल पाता।

★ १०. जो माता-पिता को सुख-शान्ति नहीं देते, उन्हें जीवन-भर मानसिक क्लेश सहने पड़ते हैं।

★ ११. जो माता-पिता का अनादर करता है वह परिवार, समाज और इष्टमित्रों में कभी आदर प्राप्त नहीं कर सकता।

★ १२. यदि आप अपने माता-पिता पर श्रद्धा नहीं रखते, तो प्रभु भक्ति करना पाखण्ड ही है।

★ १३. जो माता-पिता पर श्रद्धा नहीं रखता, वह आस्तिक नहीं वरन् नास्तिक ही है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम पूरब हैं......

—हरिमोहन कोठिया

उगते सूरज का वन्दन भूल गये,
ढलते पश्चिम को नमस्कार करते हैं।
हम पूरब हैं, पूरब में रह कर भी,
पूरब का ही बहिष्कार करते हैं॥

× × ×

बिछुड़ी ममता बौराई तरस रही,
आओ लालो, जननी मां प्यासी है।
जिस भाषा को सबसे पहले बोला,
वह भाषा ही घर में वनवासी है॥
हम हिन्दी हैं, हिन्दी जन होकर भी
हिन्दी का ही तिरस्कार करते हैं। उगते...

× × ×

देवालय की राहें सूनी-सूनी,
मदिरालय की राहों पर कोलाहल।
"नूपुर-थिरकन" से मस्त हुआ यौवन,
करता किलोल रम्भा संग मचल-मचल॥
हम जग के भाग्य-विधाता होकर भी,
'उनके' चरणों में नमस्कार करते हैं। हम पूरब...

× × ×

मेरी बहिनें थीं गंगा की धारा,
कैसे मरुथल की प्यास बनीं संगिन!
मन की आँधी में तन क्यों भटक गया,
क्यों तोड़ दिए सीमाओं के बंधन?
हम "गौरव" हैं, गौरव की प्रतिमायें,
स्वर्णिम अतीत का तिरस्कार करते हैं। उगते...

× × ×

सूखे पेड़ों की डाल समझ काटे,
हमने अपनी नैतिकता के बंधन।
सब सभागृहों में नहीं, सड़क पर ही,
होता कितनी 'द्रौपदियों' का चीर-हरण॥
हम 'मानव' हैं, मानव के वंशज ही,
मानवता से बलत्कार करते हैं। हम पूरब...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राणायाम : सार-संक्षेप

महा-ऋषि अष्टांग योग का महा-प्रचार किया करते।
प्राणायाम उन्हीं योगों का अंग सदा माना करते।

भस्मीभूत करे यह अघ को शोधित हो शरीर निःसार।
मन-बल प्राप्त इसी से होता, नर का हो निश्चय निस्तार।

यह व्यायाम प्राण का है जो श्वसन क्रिया से होता है।
'पूरक', 'कुम्भक', 'रेचक' विधिवत् तीन क्रिया से होता है।।

जब अपान यम का आकर्षण हो तो 'पूरक' कहलाता।
धारण को कहते कुम्भक हैं, त्याग कहा रेचक जाता।।

'यम' द्वारा व 'नियम' 'आसन' से नाड़ी जब हो जाए शुद्ध।
वह ही नर अधिकारी इसका अन्य लाभ पाते प्रतिरुद्ध।।

स्थिति-स्थापक गुण प्रौढ़ों में हो शून्य, अतः यह प्राणायाम।
उनके हित रोगोत्पादक है, उत्तम बालक प्राणायाम।।

मध्यम हो चालीस वर्ष तक फिर कनिष्ठ हो जाता है।
जग-कोलाहल से सुदूर यह स्वच्छ वायु में होता है।।

धारावाहिक ये होते हैं कुम्भक का प्रसरण करते।
पाँच, सात, दस, पन्द्रह से अस्सी व्यायाम किए जाते।।

दिन में चार बार करने से तीन मास में मिलता लाभ।
नाड़ी होती शुद्ध तथा सिद्धि व्यायामोत्तम की आभ।।

स्वेद अधिक आता कनिष्ठ में, प्रातः सायं हों पच्चीस।
मध्यम नर में कम्पन होता, मंजुल हैं उत्तम अभ्यास।।

ब्रह्मरन्ध्र को प्राण प्राप्त हों, मल, विष, रक्त वारि वा आम।
तथा अपक्षय-प्राप्त रक्तकण, जल हों स्वेद, रहे निष्काम।।

ये ही बाहर आ जाते हैं, पर समीर का वेग न हो।
स्वेदोत्सर्जन कम हो जाता, शोधन क्रिया उचित ना हो।।

पर मल दूर किया जाये ना, स्वेद बदन पर मलते हैं।
लघुता आती, त्वचा, मांस पेशी सशक्त हो जाते हैं।।

भोजन दुग्धोदन का प्रथमहिं या मट्ठा, दलिया ही लें।
तमोगुणी भोजन वर्जित है, रजोगुणी भी खाद्य न लें।।

प्राणायाम नियम से करता रहता जो नर बारम्बार।
वह पवित्र है, वह तेजस्वी, कर सकता भव-सर को पार।

प्रथम तपस्या में कुछ रक्तिम चित्र नेत्र में आ जाता।
क्लिष्ट तपस्या ज्यों-ज्यों होती त्यों प्रभु पद पाता जाता।।

अन्तिम में होता अवलोकित उर्ध्वगामी तीव्र प्रकाश।
मूलाधार चक्र से चलकर कुण्डलिनी पहुंचे प्रभु पास।।

—इन्दु

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरी अनुभूति

चमकता न घर-घर में जन-ज्ञान होगा
तो कैसे भला विश्व-कल्याण होगा ?
न होगा अगर गूंजता वेद का स्वर
रहेंगे सदा भाई से भाई डर कर
न ममता न समता का सद्‌भाव होगा
गले से लगाएंगे सब को न जी-भर
तो अपना न पर का, समुत्थान होगा।

\+ +

न रुककर कभी जिन्दगी देखती है।
न झुककर कभी आसमां पूछता है।
कि तुम राह पर कौन सी चल रहे हो।
न बढ़ता हुआ कारवाँ पूछता है।
कि किसका जगत् में प्रथम स्थान होगा।

\+ +

बढ़ो, बढ़ चलो, युग तुम्हें है बुलाता।
विजय-गीत देखो पवन गुनगुनाता॥
तुम्हीं ने दिखाया है सन्मार्ग जग को।
न ऐसा 'दया' मंत्र कोई सिखाता।
तो निश्चय तुम्हें प्राप्त सम्मान होगा।

\+ +

रहा निष्कपट है सदा देश जिसका
हुआ पूज्य अग-जग में सद् वेश जिसका
जिसे ज्योति 'दिनकर' की है प्राप्त तमहर
तो वह पुष्प कैसे कभी म्लान होगा ?
चमकता सदा घर में जन-ज्ञान होगा।

—'प्रफुल्ल' शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अ. भा. हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. मजहब व जाति के आधार पर पुलिस, सेना व सरकारी विभागों में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाए।

२. कश्मीर, असम व देश के सभी भागों में पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक—देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाए।

३. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए।

४. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाये और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाए।

५. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाए।

६. भारत के सभी नागरिकों के लिए समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाए जाएं।

७. कश्मीर सम्बन्धी धारा ३७० तुरन्त हटायी जाए और वहां भारत के नागरिकों को बसाने की व्यवस्था हो।

८. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाए।

९. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उनको वोट का अधिकार न दिया जाए। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथ-पत्र भरने का नियम बनाया जाए, जिसमें वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूं और मेरी प्रथम निष्ठा भारत राष्ट्र के प्रति रहेगी।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त समाप्त किया जाए।

११. विहार व उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का आदेश वापस लिया जाए।

आप भी अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कर इन मांगों को भारत सरकार को भेजें।

—वेदभिक्षुः

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीर्घायु के लिए

प्राणायाम विधि

—स्व० महात्मा नारायणस्वामी

योग के आठ अंगों में से प्रणम, के पांच (यम, नियम, आसन, प्राणायाम और प्रत्याहार) के सम्प्रज्ञात समाधि के साधन होने से बहिरंग[1] साधन और अन्त के तीन (धारणा, ध्यान और समाधि) अन्तरंग साधन कहलाते हैं। ये अन्तरंग साधन सम्प्रज्ञात समाधि के [2]असाक्षात् साधन हैं। प्रथम के बहिरंग और अन्त के अन्तरंग साधन क्यों कहलाते हैं इनका हेतु यह है कि बहिरंग साधनों से शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार का लाभ होता है, जबकि अन्तरंग[3] साधनों से केवल मानसिक और आत्मिक उन्नति ही होती है। परन्तु अन्तरंग साधनों से जो आत्मिकोन्नति होती है वह बहुत ऊँचे दर्जे की है और वही एक प्रकार से असम्प्रज्ञात (निर्जीव) समाधि (साधन) का यदि साक्षात् नहीं तो असाक्षात् है। इस छोटे से ग्रन्थ में योग के अन्तरंग साधनों का विचार नहीं किया जायेगा; इसमें बहिरंग साधनों में से भी सबका विचार न होगा केवल चौथे अंग प्राणायाम के सम्बन्ध में इतनी बातें कही जायेंगी जिनसे योग से सर्वथा अनभिज्ञ पुरुषों में योग की ओर रुचि उत्पन्न हो जाय और प्रारम्भिक (प्राणायाम) का प्रारम्भ भी कर सकें। यह दुःख की बात है कि भारत निवासी आर्य जाति के सुपुत्र अपने पूर्वजों की विद्या योग के उद्देश्य तक से अनभिज्ञ हैं। योग वास्तव में पूर्वी मनोविज्ञान (Eastern Psycholgy) है। योग के सूत्रों और उन पर किए हुए व्यास मुनि के भाष्यादि से हम शरीर के अन्तरंग से अन्तरंग (अन्तःकरणों) का ज्ञान प्राप्त करते और किस प्रकार वे उन्नत किए जा सकते हैं, इसकी भी जानकारी प्राप्त करते हैं। पश्चिमी मनोविज्ञान (Western psychology) में जहां चित्त Mind और मस्तिष्क Brain के कार्यों का प्रश्न आता है वहाँ पश्चिमी मनोविज्ञान उन्हें हल नहीं कर सकते। किन्तु अलौकिक (Mystery) कहकर टाल दिया करते हैं; परन्तु पूर्वी मनोविज्ञान (योग) में यह बात नहीं है—उसमें स्पष्ट रीति से प्रत्येक सूक्ष्म अन्तःकरण की बात बतलायी जाती है और अभ्यासी के हाथ में इतने साधन उपस्थित कर दिये जाते हैं जिससे वह सुगमता से आत्म जगत्

---

१. देखो योगदर्शनसूत्र ३—७ का व्यासभाष्य

२. देखो योगदर्शन सूत्र ३—८

६. यह अन्तरंग और बहिरंग साधनों का भेद केवल दोनों साधनों का प्रकार भेद प्रदर्शन करने के लिए है—इससे किसी साधन के अनादर करने का तात्पर्य नही है—योग के आठों अंग अपने-अपने दर्जे में अपनी-अपनी आवश्यकता रखते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में प्रवेश करके जीवन के अन्तिम उद्देश्य की ओर भी झांक सके। अस्तु, इस सम्बन्ध में और अधिक न कहकर पुस्तक के विषय का प्रारम्भ करते हैं। यह बात ऊपर कही जा चुकी है कि योग के प्रारम्भिक अंगों से मानसिकोन्नति के सिवाय शारीरिकोन्नति भी होती है। सबसे पहले इसी पर दृष्टिपात करते हैं– इन प्रथम के साधनों में से भी यम और नियम से किस प्रकार शारीरिकोन्नति होती हैं पहले यह सवाल सामने आता है:—

यम नियम और शारीरिकोन्नति

यम पांच हैं—(१) अहिंसा (२) सत्य (३) अस्तेय (चोरी न करना) (४) ब्रह्मचर्य (५) अपरिग्रह (लोभ न करना – त्यागी होना)। इसी प्रकार नियम भी पांच हैं— (१) शौच (२) संतोष[1] (३) तप (४) स्वाध्याय (५) ईश्वर-प्रणिधान (ईश्वर भक्ति)।

इनमें सबसे पहली बात अहिंसा ही को ले लीजिए—अहिंसा से किस प्रकार शारीरिकोन्नति होती है, पहले इसी को देखिये।

अहिंसा और शारीरिकोन्नति

जो मनुष्य अहिंसा का पालन करेगा, आवश्यक है कि वह अहिंसक हो—हिंसा का अवलम्बन लेने से उस मनुष्य में ईर्ष्या, द्वेष, क्रोध, लोभ, मोहादि की वृत्तियां जागृत होंगी। इन वृत्तियों की जागृति में वह जो भी भोजन करेगा वह पचेगा नहीं[2]। भोजन के न पचने से अजीर्ण, मन्दाग्नि आदि रोग उत्पन्न होंगे। परिणाम यह होगा कि शारीरिकोन्नति न होगी, अपितु शरीर रोगी होकर अवनत अवस्था प्राप्त करेगा। इस प्रकार देख लिया गया कि अहिंसा को पालन करने ही से शारीरिकोन्नति होती है। इसी प्रकार बाकी यम और नियमों पर विचार किया जा सकता है। अस्तु, यह सिद्ध हो गया कि यम और नियम शारीरिकोन्नति के हेतु हैं—

आसन और शारीरिकोन्नति

जिसमें स्थिर सुख हो वह आसन है (देखो योगदर्शन २-४६) स्थिर सुख प्राप्ति के लिये शरीर का नीरोग रहना आवश्यक है। नीरोगता प्राप्त करने के लिए शीर्षासन, सिद्धासन, पद्मासन, भद्रासनादि का सेवन किया जाता है। इन आसनों से अनेक रोग दूर होते हैं और अनेक प्रकार के शारीरिक लाभ हुआ करते हैं—आसन से शारीरिकोन्नति होने की बात बहुत स्पष्ट है। इसलिए इस सम्बन्ध में अधिक लिखना अनावश्यक है। अब योग के प्रारम्भिक ३ अंगों का उल्लेख करने के बाद योग के चौथे अंग प्राणायाम का जो इस छोटी सी पुस्तक का मुख्य विषय है—जिक्र करते हैं। प्राणायाम के सम्बन्ध में सबसे पहले प्रकृत विषय ही को लीजिए कि प्राणायाम से शारीरिकोन्नति किस प्रकार होती है।

---

१. उद्योग में सन्तोष करना आलस्य कहलाता है। उद्योग करने से जो फल प्राप्त हो उसमें सन्तोष करना सन्तोष कहलाता है।

२. ईर्ष्याभयक्रोध परिप्लवनलुब्धेन रुग दैन्यनिपीडितेन प्रद्वेषयुक्तेन च सेव्यमानमन्नं न सम्यक् परिपाकमेति। (माधव निदान ३—८)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राणायाम और शारीरिकोन्नति

प्राणायाम से शारीरिकोन्नति किस प्रकार होती है इस बात को जानने के लिए एक दृष्टि शरीर के अन्दर होने वाले अनिच्छित कार्यों में से हृदय और फेफड़े के कार्यों पर डालनी होगी।

हृदय का स्थूल कार्य

इस शरीर में दो प्रकार की अति सूक्ष्म नलियाँ हैं। एक तो वे जो समस्त शरीर से हृदय में आती हैं और दूसरी नलियाँ वे हैं जो हृदय से समस्त शरीर में जाया करती हैं। पहली नलियां "शिरा" और दूसरी "धमनी" कहलाती हैं।" शिराओं का काम यह है कि समस्त शरीर से अशुद्ध रक्त शुद्ध होने के लिए हृदय में लाया करें। हृदय उस रक्त को शुद्ध करता है और शुद्ध करके रक्त को धमनियों के द्वारा समस्त शरीर में भेज दिया करता है। रक्त अशुद्ध क्यों होता है? इसका हेतु यह है कि समस्त शरीर के व्यापारों में उसका प्रयोग होता है और उपयोग में न आने से अशुद्ध हो जाता है।

शुद्ध और अशुद्ध रक्त में भेद

शुद्ध रक्त में कुछ चमक लिए हुए अच्छी सुर्खी होती है परन्तु जब यह अशुद्ध हो जाता है तो उसमें कुछ मैलापन आ जाता है—शुद्ध रक्त में ऑक्सीजन (Oxygen) काफी मात्रा में रहता है परन्तु काम में आने से जब वह अशुद्ध हो जाता है तब उसमें ऑक्सीजन की मात्रा नाममात्र रह जाती है और उसकी जगह एक विषैली वायु (Carbonic Acid gas) रक्त में आ जाती है और इसी परिवर्तन से रक्त का रंग मैला स्याही माइल हो जाता है।

फेफड़े का काम

हृदय में जब अशुद्ध रक्त शिराओं के द्वारा पहुंचता है तो हृदय उसे फेफड़े में भेजता है—यहीं से फेफड़े का काम शुरू होता है। फेफड़ा स्पंज की भांति असंख्य छोटे छोटे घटकों (Cells) का समुदाय है। एक शरीर में वैज्ञानिकों ने हिसाब लगाया है कि यदि लम्बाई चौड़ाई में फेफड़ों के इन कणों (घटकों) को फैला दिया जाय तो उनका विस्तार १४ हजार वर्ग फीट होगा। वे कण एक मांस पेशी (डाएफ्राम) की चाल से खुलते ओर बन्द होते रहते हैं। जब ये कण खुलते हैं तब एक ओर से तो हृदय से अशुद्ध रक्त और दूसरी ओर से श्वास के द्वारा लिया हुआ शुद्ध वायु दोनों मिलकर उन्हें भर देते हैं। अब इन कणों में इस प्रकार से अशुद्ध रक्त और शुद्ध वायु दोनों एकत्र हो गए है। प्रकृति का एक विलक्षण नियम (शुद्ध रक्त शुद्ध वायु में) काम करता है। और वह नियम यह है कि जिसमें जो वस्तु नहीं होती वह उसी को दूसरे से अपनी ओर खींचती है। रक्त में तो शुद्ध वायु (ऑक्सीजन) नहीं है और श्वास के द्वारा लिये वायु में कार्बन वायु नहीं है—इन दोनों में जब उपयुक्त नियम काम करता है तो उसका परिणाम यह होता है कि रक्त में से कार्बन वायु निकल कर श्वास के वायु में और श्वास के द्वारा आये हुए वायु में से ऑक्सीजन निकलकर रक्त में चला जाता है। फल यह होता है कि रक्त इस प्रकार शुद्ध और श्वास के द्वारा आया हुआ वायु अशुद्ध हो जाता है। अब शुद्ध रक्त तो हृदय में जाकर धमनियों के द्वारा समस्त शरीर में चला जाता है और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अशुद्ध वायु निःश्वास के द्वारा बाहर निकल जाता है। यह कार्य प्रति क्षण हुआ करता है।

हृदय की धड़कन

हृदय की धड़कन क्या वस्तु है ? एक बार हृदय से रक्त का शुद्ध होने के लिए फेफड़े में जाना और फेफड़े से शुद्ध होकर रक्त का हृदय में वापिस आना बस इन्हीं दोनों क्रियाओं से हृदय में एक धड़कन बनती है। औसतन एक मिनट में ७२ धड़कनें एक प्रौढ़ पुरुष के हृदय में हुआ करती है। विशेष अवस्थाओं में आयु के अन्तर से धड़कन की मात्रा न्यूनाधिक हुआ करती है—आम तौर से एक सेकेण्ड से कम समय में ही एक बार रक्त शुद्ध होने के लिए फेफड़े में आता और शुद्ध होकर वापिस चला जाता है। एक शरीर वैज्ञानिक ने हिसाब लगाया है कि इस प्रकार २४ घंटे में २५२ मन रक्त हृदय से फेफड़े में आता है और इतना ही रक्त शुद्ध होकर फेफड़े से हृदय में वापस चला जाता है। इस धड़कन की आवाज 'लूब-डपत' शब्दों के उच्चारण जैसी होती है। जब हृदय संकुचित होकर रक्त निकलता है, तो 'लूब' के सदृश ध्वनि होती है और फैलकर जब रक्त ग्रहण करता है तो 'डप' शब्द की सी ध्वनि होती है और इन दोनों ध्वनियों में समय का कुछ अन्तर अवश्य होता है। परन्तु इतना थोड़ा कि दोनों शब्द मिले हुए से मालूम होते हैं और विशेषज्ञों के सिवाय साधारण लोग इस अन्तर को नहीं ख्याल कर सकते। अस्तु; अब विचारणीय बात यह है कि—

फेफड़े में शुद्ध वायु न पहुँचने का परिणाम

यदि हृदय से रक्त शुद्ध होने के लिए फेफड़े में आवे परन्तु श्वास के द्वारा पर्याप्त वायु फेफड़े में न पहुंचे अथवा सब कोषों (कणों) में जहां रक्त पहुंच चुका है, शुद्ध वायु न पहुँचे तो उसका परिणाम क्या होगा ? फेफड़े में मुख्यतः तीन भाग हैं (१) ऊपरी भाग जो प्रायः गर्दन तक है (२) मध्य भाग जो दोनों ओर हृदय के इधर उधर है (३) निम्न भाग जो 'डायाफ्राम' (मांसपेशी) के ऊपर दोनों ओर है। साधारण रीति से जो श्वास लिया जाता है वह पूर्ण श्वास नहीं होता, इसलिए फेफड़े के सब भागों अथवा सब भागों के समस्त कोषों में नहीं पहुंचता जब फेफड़े के ऊपरी भाग में श्वास द्वारा वायु नहीं पहुंचता तो फेफड़े का ऊपरी भाग रोगी होना शुरू होता है और उसके इस प्रकार त्रुटिपूर्ण हो जाने से एक रोग हो जाता है जिसे ट्यूबरक्यूलोसिस (Tuberculosis) कहते हैं, और जब इसी प्रकार फेफड़ों के मध्य और निम्न भाग बेकार और त्रुटिपूर्ण होने लगते हैं तो उसके परिणाम में खांसी, दमा, निमोनिया, जीर्ण ज्वरादि अनेक रोग जो फेफड़ों से सम्बन्धित हैं, होने लगते हैं। इस प्रकार पर्याप्त वायु फेफड़ों में न पहुंचने से जहां एक ओर फेफड़ों से सम्बन्धित-रोग उत्पन्न होते हैं तो—

एक और भयंकर परिणाम

दूसरी ओर उसका एक परिणाम यह होता है कि हृदय से रक्त जो शुद्ध होने के लिए फेफड़े में आता है वह बिना शुद्ध हुए ही हृदय में वापस चला जाता है। हृदय भी उसे नहीं रोक सकता। वहां से वह धमनियों के द्वारा समस्त शरीर में पहुंचता है। इसका फल रक्तविकार होता है। रक्त के विकृत होने से मामूली रोग खाज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(खुजली खारिश) से लेकर भयंकर रोग कुष्ठ तक हो जाते हैं। इसलिए इन सब दुष्परिणामों से बचने के लिए आवश्यक है कि फेफड़े वायु से पूरित होते रहें और कोई भी कण (कोष) उनका ऐसा न ही रहने पावे जहां वायु न पहुंच सके। यहीं से प्रणायाम की जरूरत का सूत्रपात होता है।

प्राणायाम की आवश्यकता

प्राणायाम के द्वारा मनुष्य के भीतर जब वह श्वास रोक देता है तब श्वास लेने की प्रबल इच्छा उत्पन्न हो जाती है—उसका फल यह होता है कि श्वास भीतर लेते समय श्वास वेग के साथ तेज हवा या आंधी के सदृश होकर फेफड़े में पहुंचता है और जिस प्रकार आँधी या तेज हवा नगर के कोने-कोने में प्रवेश करती है उसी प्रकार वेग के साथ श्वास के द्वारा भीतर लिया हुआ वायु फेफड़े के एक-एक कोष तक पहुंच जाता है और उससे न तो फेफड़ों में ही कोई खराबी होने पाती है और न रक्त ही में विकार उत्पन्न होने पाता है। अस्तु, देख लिया गया कि प्राणायाम शारीरिकोन्नति का हेतु ही नहीं, किन्तु मुख्य हेतु है। इसलिए आवश्यक है कि प्राणायाम किया करें।

यह बात प्रकट हो जाने पर कि प्राणायाम मानसिकोन्नति के सिवाय शारीरिकोन्नति का भी साधन है, प्राणायाम क्या है और किस प्रकार करना चाहिए, यह जानने की स्वाभाविक इच्छा उत्पन्न होती है। परन्तु यह बतलाने से पहले कतिपय उन साधनों का यहां उल्लेख किया जाता है, जिन पर अमल करने से अमुक रोग हो गया। परन्तु यह सब खराबियां जो कुछ भी हुई हों, प्राणायाम का परिणाम नहीं हो सकतीं, किन्तु उन असावधानियों के फल हैं, जो प्राणायाम करने में प्राणायाम करने वाले प्रायः किया करते हैं। कोई क्रिया फलवती नहीं हो सकती जबतक विधिपूर्वक नहीं की जावे। पथ्य के बिना जिस प्रकार चिकित्सा निष्फल सी होती है उसी प्रकार अवधि से किया हुआ प्राणायाम भी लाभदायक नही हो सकता। अस्तु, उन साधनों को जानना आवश्यक है जिन्हें प्रयोग में लेने से वह परिस्थिति उपस्थित की जाती है जिसका होना प्राणायाम की सफलता के लिए आवश्यक है :—

प्राणायाम के उपयोगी साधन

(१) उनमें पहला साधन यह यह है कि अभ्यासी का मन शुद्ध हो, मन के शुद्ध होने के लिए शुद्ध अन्न का सेवन करना आवश्यक है। शुद्ध अन्न परिश्रम और ईमानदारी के कमाये हुए धन को कहते हैं। छल और कपट से कमाया हुआ अन्न खाकर साधक सफलता प्राप्त नहीं कर सकता, क्योंकि ऐसे अन्न के प्रयोग से सदैव हृदय मलिन रहता है।

(२) यम और नियम का प्रतिदिन चिन्तन करना चाहिये और अपने किए हुए कार्यों में से जो भी कार्य इनके विरुद्ध हों उनसे हृदय में ग्लानि उत्पन्न होनी चाहिए और ऐसे कार्यों के छोड़ने का सर्वदा यत्न करते रहना चाहिए।

(३) श्वास नाक से लेने का अभ्यास करना चाहिए। कोई कोई पुरुष मुंह से श्वास लिया करते हैं। यह अभ्यास हानिकारक है।

(४) गहरा श्वास लेने की आदत डालनी चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(५) मुंह ढककर किसी ऋतु में भी नहीं सोना चाहिये। शुद्ध वायु श्वास के द्वारा फेफड़ों तक पहुंचाने के लिए कम से कम नाक सदैव सोते हुए भी खुली रखनी चाहिए।

(६) प्राणायाम शुद्ध और शान्त स्थान में करना चाहिए जहां वायु में धूलि या धुआं आदि हानिकारक वस्तुएं न शामिल हों।

(७) भोजन भूख से कुछ कम करना चाहिये जिससे अजीर्ण न होने पावे।

(८) रोगी होने की दशा में प्राणायाम प्रारम्भ न करना चाहिये। इन साधनों पर दृष्टि रखने और इनके अनुकूल चलने से हृदय में उस प्रकार के भाव जागृत हो जाते हैं जो प्राणायाम की सफलता के लिए आवश्यक हैं।[1] इन साधनों में से कुछ की आवश्यक व्याख्या पुस्तक के अन्तिम अध्याय में कर दी गई है।

प्राणायाम के मूल सिद्धान्त

पतञ्जलि मुनि ने योगदर्शन में यम नियम और आसन के सिद्ध कर लेने के बाद प्राणायाम का विधान किया है— इन तीन अंगों में जहां एक ओर शारीरिकोन्नति होती है, वहीं दूसरी ओर मानसिकोन्नति के भी ये साधन हैं। यम नियम से मानसिकोन्नति होती है इसमें तो किसी को सन्देह नहीं हो सकता, परन्तु आसन से किस प्रकार मानसिकोन्नति होती है इसमें किन्हीं-कन्हीं को सन्देह हो सकता है। परन्तु योग-दर्शन में स्पष्ट रीति से कह दिया गया है कि आसनों की सिद्धि से मनुष्य में यह योग्यता आ जाती है जिससे वह द्वन्द्वों (सरदी गरमी आदि) को सहन कर सकता है। अब आसन की सिद्धि होने पर प्राणायाम के अभ्यास का आरम्भ होता है।

प्राणायाम क्या है ?

श्वास और प्रश्वास की गति रोकना प्राणायाम है। श्वास भीतर वायु ले जाने और प्रश्वास भीतर से बाहर वायु निकलने को कहते हैं[2]। इनकी गति रोकने का मतलब यह है कि श्वास को भीतर ले जाकर ही रोक देना इसी प्रकार बाहर निकाल ही रोक देना। प्राणायाम शब्द दो शब्दों का योग है। प्राण व आयाम प्राण श्वास और प्रश्वास का नाम है और आयाम का अर्थ है फैलाना अर्थात् श्वास प्रश्वास का निग्रह करके उनके रोकने की अवधि को बढ़ाना।

प्राणायाम के भेद

प्राणायाम में तीन क्रियाएं होती हैं :—

( ) प्राण बाहर निकला— इसको रेचक कहते हैं (२) प्राण का भीतर लेना—

१ शेष साधनों की सभी के लिए आवश्यकता है, चाहे उनके उद्देश्य केवल शारीरिकोन्नति हो अथवा शारीरिक और मानसिक दोनों।

२. ततो द्वन्द्वाऽनभिघातः ।। (योग २—४८) अर्थात् उस आसन की सिद्धि से द्वन्द्वों की चोट नहीं लगती।

३. तस्मिन्सति श्वासप्रश्वासयोर्गतिविच्छेदः प्राणायामः (योग०२-४९) अर्थात् उस आसन के सिद्ध हो जाने पर श्वास और प्रश्वास की गति रोकना प्राणायाम है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसका नाम पूरक है (३) प्राण जहां हो वहीं रोक देना—यह स्तम्भवृत्ति कहलाती है। यह प्राणायाम देश, काल और संख्या के भेद से ३ प्रकार का है।[1]

(१) देशपरिदृष्ट—जिसमें थोड़ी दूर, अधिक दूर या अत्यन्त अधिक दूर का प्राण खींचा या भरा जावे।

(२) कालपरिदृष्ट—एक दो या अधिक क्षणों तक प्राणों का भरना फेंकना ठहराना।

(३) संख्यापरिदृष्ट—एक दो या तीन या अधिक बार प्राणों को फेंकना, भरना या ठहराना।

(४) प्राणायाम की चौथी क्रिया[2] कुम्भक है। इस कुम्भक और स्तम्भवृत्ति नामक प्राणायाम में अन्तर यह है कि स्तम्भवृत्ति में तो प्राण बाहर या भीतर खींचे बिना जहां का तहां रोक दिया जाता है परन्तु कुम्भक में प्राण को बाहर या भीतर खींच कर रोका जाता है।

बस, प्राणायाम के मूल सिद्धान्त (या मूल क्रियाएं) यही हैं और इन्हीं के आधार पर प्राणायाम के अनेक विभाग किये गये हैं और उपयोगिता की दृष्टि से इन विभक्त प्राणायामों को पृथक् २ ठहराया गया है। यह ऋषियों की अपूर्व शैली का फल है कि तीन सूत्रों में प्राणायाम की समस्त क्रियाएं वर्णन कर दी गई हैं परन्तु इस विद्या के अप्रचलित हो जाने से देशवासी इस योग्य नहीं रहे कि इन्ही सूत्रों को लक्ष्य में रखकर अभ्यास कर सकें, अन्यथा इन पृष्ठों के लिखने की आवश्यकता ही नहीं थी। हम आगे बतलायेंगे कि किस प्रकार एक नए अभ्यासी को प्राणायाम का आरम्भ करना चाहिये। परन्तु पहले हम एक प्रश्न का उत्तर देना चाहते हैं कि मानसिकोन्नति की दृष्टि से प्राणायाम क्यों करना चाहिये।

प्राणायाम का फल

प्राणायाम का फल यह है कि उसके अभ्यास से हृदय में पड़ा हुआ तम का आवरण नष्ट हो जाता है।[1] हृदय में शुद्ध ज्ञान रहता है और रहना चाहिये परन्तु जब मनुष्य ऐसे काम करने लगता है जो काम क्रोध लोभ और मोहों से उत्पन्न होते हैं और जो तमोगुण की बुद्धि का फल कहलाते हैं, तो ये कर्म हृदयस्थ शुद्धज्ञान रूपी प्रकाश को आवरण (परदा) होकर ढक लेते हैं। अब यह ढका हुआ प्रकाश किस प्रकार उभड़े अथवा हृदय पर पड़ा हुआ और तम का परदा किस प्रकार उठे? इसका

---

१. स तु बाह्याभ्यन्तरस्तम्भवृत्तिः देश काल संख्याभिः परिदृष्ट दीर्घसूक्ष्म यो २।५० अर्थात् बाह्य आभ्यन्तर स्तम्भवृत्ति भेद से तीन प्रकार का प्राणायाम देश, काल और संख्या से देखा हुआ दीर्घ परन्तु सूक्ष्म होता है.......

२. बाह्याभ्यन्तरविषयाक्षेपी चतुर्थः ॥ (योग० २।५१ अर्थात् बाह्य और आभ्यन्तर दोनों देशों में आक्षेप करनेवाला अर्थात् जिसमें इन दोनों प्राणायामों (रेचक पूरक) का परित्याग हो, चौथा प्राणायाम है।

१. ततः क्षीयते प्रकाशावरणम् ॥ (योग० २।५२) अर्थात् उस (प्राणायाम साधन) से प्रकाश का आवरण क्षीण हो जाता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

साधन प्राणायाम का अभ्यास है। प्राणायाम के अभ्यास ही से उत्तरोत्तर अज्ञान तम का नाश और ज्ञान का प्रकाश बढ़ता जाता है[1] और जिस प्रकार अग्नि में तपाने से स्वर्णादि धातुओं के मल नष्ट हो जाते हैं।[2] वैसे ही प्राणायाम से इन्द्रियों के दोष नष्ट हो जाते हैं।

एक दूसरा फल

प्राणायाम का एक दूसरा फल यह होता है कि इसके अभ्यास से मनुष्य में धारण (चित्त को एकाग्र करने) की योग्यता होती है। चित्त के एकाग्र होने से एक विद्यार्थी अपना पाठ सुगमता से समझ और याद कर सकता है।

एक वैज्ञानिक सूक्ष्म से सूक्ष्मतम तत्त्वों की परीक्षा करने में समर्थ हो सकता है, एक दार्शनिक परीक्षा के विषयों में प्रविष्ट होकर अध्यात्म जगत् में दौरा लगा सकता है। एक साधारण कारबारी आदमी अपने उद्यम के छिपे से छिपे पहलुओं की जानकारी प्राप्त कर सकता है। निदान यह लोक और परलोक— सभी चित्त की एकाग्रता प्राणायाम के अभ्यास ही से प्राप्त की जाती है।

प्राणायाम के अनेक फल और अनेक लाभ हैं, परन्तु उन सबको यदि मूल रूप में कहा जाय तो उनका कथन: उपर्युक्त दो ही फलों के रूप में होगा। अब हम प्रतिज्ञानुसार उस विधि का वर्णन करते हैं, जिससे नये सीखने वालों को प्राणायाम का अभ्यास करना चाहिए।

प्राणायाम अनेक प्रकार से अनेक कार्यों की सिद्धि के लिए किये जाते हैं। यह बात पहले कही जा चुकी है।[1] इस अध्याय में हम प्राणायामों में से केवल उन्हीं प्राणायामों के अभ्यास की रीति बतलायेंगे जो आम तौर से सभी के लिए उपयोगी हों। ऐसे प्राणायामों की बात न कहेंगे जो योग के साधन की दृष्टि से ऊँची अवस्था प्राप्त कर लेने पर ही किये जाते हैं।

पहला प्राणायाम

पद्मासन या किसी आसन से जिससे सुखपूर्वक उस समय तक (बिना आसन बदले) बैठ सको जितनी देर क्रिया करनी इष्ट है बैठ जाओ। इस प्रकार कि छाती,

---

२. योगाङ्गानुष्ठानादशुद्धिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेकख्यातेः(योग० २।२८)अर्थात् योग के आठ अङ्गों के अनुष्ठान से अशुद्धि के क्षय होने पर विवेकख्याति(तत्त्वज्ञान) पर्यन्त ज्ञान का प्रकाश होता है।

२. दह्यन्ते ध्मायमानानां धातूनां हि यथा मलाः। तथेन्द्रियाणां दह्यन्ते दोषाः प्राणस्य निग्रहात्॥ (मनु० ६।७१) अर्थात् जैसे अग्नि में तपाने से (सुवर्णादि) धातुओं का मल नष्ट हो जाता है उसी प्रकार प्राणायाम के अभ्यास से इन्द्रियों के दोष दूर हो जाते हैं।

१ किंच धारणासु च योग्यता मनसः (योग० २।५३)

अर्थात् और प्राणायामों से (धारण) चित्त की एकाग्रता में मन की योग्यता होती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गला और मस्तिष्क तीनों एक सीध में रहें और धीरे २ नाक की राह से श्वास बाहर निकालो (रेचक)।

(१) और उसे बाहर ही रोक दो (बाह्यकुम्भक)।

(२) जब अधिक देर बिना श्वास लिये न रह सको तो धीरे-धीरे पूरक (श्वास भीतर खींचो) और अब श्वास को भीतर रोक दो (आभ्यन्तर कुम्भक)।

(३) जब और अधिक समय 'कुम्भक' (भीतर श्वास रोके रखना) न कर सको तो धीरे-धीरे रेचक करो।

(४) इसी प्रकार अनेक बार अभ्यास करो और प्रत्येक क्रिया के साथ सात-सात महा व्याहृतियों (प्राणायाम मंत्र) का मानसिक जप करते रहो। जिह्वा से काम लेने की जरूरत नहीं है।

फेफड़े के समस्त कोषों में वायु भरना दूसरा प्राणायाम

शान्ति से, पद्मासन अथवा किसी आसन से जिसमें तुम सुखपूर्वक अन्त तक बैठ सको, बैठ जाओ और नथुनों से धीरे-२ श्वास के द्वारा शुद्ध वायु भीतर की ओर खींचने लगो। पहले फेफड़े से नीचे के भाग को भरो और प्रबल इच्छा रखो कि फेफड़े का अधोभाग वायु से भर रहा है। इससे कुछ पेट फूलेगा। इसके बाद उसी श्वास से फेफड़े के मध्यभाग में वायु पहुंचाओ। इस क्रिया से तथा आगे की समस्त क्रियाओं के साथ इच्छाशक्ति को जोड़ते जाओ। इस क्रिया से पेट कुछ पिचकेगा और ऊपर छाती कुछ उभरेगी। इसके बाद श्वास के तीसरे और अन्तिम भाग से फेफड़े के ऊपरी भाग को भरो। इस क्रिया के प्रारम्भ करने से पहले कन्धों को कुछ ऊपर उठा लो। तीन क्रियाओं से पूरक पूरा होता है। इसके पूरा होने में लगभग आधा मिनट खर्च होता है।

२—इसके बाद कुम्भक करो। एक मिनट से कुछ अधिक अथवा कम से कम एक मिनट वायु को भीतर रोको। इसके साथ इच्छा यह होगी कि फेफड़े के समस्त कोष वायु से भर रहे हैं।

३—फिर रेचक करके वायु को बाहर निकालो।

नोट (१) इस प्राणायाम से रेचक, पूरक और कुम्भक अर्थात् प्राणायाम की प्रत्येक क्रिया करने का अभ्यास होता है जिससे आगे के प्राणायामों के करने की शक्ति मनुष्य में आती है। इस प्राणायाम का अभ्यास इतना बढ़ाना चाहिए कि श्वास दो मिनट तक भीतर रुक सके। अधिक सामर्थ्य बढ़ाने से अधिक लाभ है, परन्तु एक बात है जिसे ध्यान में रखना चाहिये कि श्वास दो मिनट तक भीतर रुक सके रोकें चित्त परतन्त्र नहीं करना चाहिये अभ्यास से उत्तरोत्तर बाहर और भीतर दोनों ओर श्वास रोकने की अवधि स्वयमेव बढ़ती है।

नोट(२) अभ्यास काल में कई प्राणायाम एक साथ करने होंगे परन्तु लगातार नहीं किये जा सकते। एक प्राणायाम के बाद दो चार श्वास लेकर दूसरा— इस प्रकार तीसरा और चौथा आदि करना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीसरा "सुखद" प्राणायाम

प्राणायाम करने से थकान पैदा होती है उसे दूर करने के लिये। इसीलिए इसका नाम सुखद है।

१—प्राणायाम संख्या दो की भांति पूरक करो—

२—इसी प्रकार इच्छाशक्ति को जोड़ते हुए कुम्भक करो—

३—रेचक मुंह से करो। मुंह की स्थिति ऐसी करो जैसे सीटी बजाते हुए होती है और वेग से अधिक बाहर में थोड़ा-थोड़ा श्वास बाहर फेंको। एक बार फेंकने के बाद कुछ रुक जाओ। इसी प्रकार कुछ रुक-रुक कर प्रत्येक बार बलपूर्वक श्वासों को बाहर फेंको।

फेफड़ों के सिवा पेट और आँत को भी हवा से भरना चौथा प्राणायाम

१—बायां पैर दाहिनी जाँघ पर रक्खो। गर्दन और पीठ को सीधा खड़ा रक्खो। हथेलियों को घुटनों पर रखकर मुंह बन्द कर लो।

२—दोनों नथनों से धीरे-धीरे परन्तु शीघ्रता से पूरक करो और बिना कुम्भक किये ही रेचक करो।

३—यह अभ्यास निरन्तर किये जाओ जब तक थक न जाओ अथवा पसीना न आने लगे।

४—अभ्यास करते समय दृष्टि नासिका के अग्र भाग पर रखो।

५—थक जाने पर दाहिने नथने से पूरक करके कुम्भक करो और फेफड़ों को खूब वायु से भर लो। इसके बाद बायें नथुने से रेचक करके अभ्यास समाप्त कर दो।

समस्त शरीर को स्वस्थ रखने के लिए पांचवां प्राणायाम

१—बाईं जंघा पर दाहिना पैर और दाहिनी जंघा पर बायां पैर रक्खो और दाहिने हाथ से पीठ की ओर से दाहिने पैर के अंगूठे को और इसी प्रकार बायें हाथ से पैर के अँगूठे को पकड़ो। यदि शरीर लचकीला और हलका न होने से अंगूठों को हाथ से न पकड़ सको तो उन अंगूठों को और अधिक से अधिक दूर जितना तुम्हारा हाथ जा सके ले जाओ और शरीर खूब अकड़ा और तना हुआ रक्खो।

२—प्राणायाम सं० (१) की भांति पूरक कुम्भक और रेचक करो।

नोट १. कोई और किसी प्रकार के प्राणायाम का अभ्यास करो। अन्त में सुखद' प्राणायाम को सदैव कर लो। इससे आराम मिलता है और थकान दूर हो जाता है।

नोट २. यह बात याद रखनी चाहिये कि भोजन तब तक नहीं पचता जब तक उसका प्रत्येक कण ऑक्सिजन [ओषजन] के भीतर न घुस जावे। इसलिये आमाशय और आतों में भी पर्य्याप्त मात्रा में वायु रहना चाहिये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३–इतना अभ्यास करो कि शरीर के रोंगटे अच्छी तरह खड़े मालूम होने लगें।

शक्ति प्राप्त करने और स्थिर रखने के लिए छठा प्राणायाम

१–पद्मासन से बैठो। मलेन्द्रिय को खब रुई से साफ कर दो।

२–दाहिने नथने से पूरक करो।

३–अपनी ठोड़ी को छाती पर रखकर सीधे हाथ से बायें पैर के अंगूठ को और बायें हाथ से सीधे हाथ के अंगूठे को पकड़ो और माथे को किसी घुटने से लगाकर कुम्भक करो।

४–बायें नथने से रेचक करो।

५–दूसरे प्राणायाम में बायें नथुने से पूरक और सीधे नथने से रेचक करना चाहिए।

६–यह अभ्यास क्रमशः बढ़ाते हुए एक घंटे तक करना चाहिए।

सातवां प्राणायाम

रक्त संचारक क्रिया को नियमित करने और विचार शक्ति की वृद्धि के लिये।

१—पद्मासन से बैठो। दाहिने हाथ से दाहिने पैर और बायें हाथ से बायें पैर के अंगूठे को पकड़ो।

२—बायें नथने से पूरक करो।

३—फिर कुम्भक करो।

४—फिर दाहिने नथने से पूरक और बायें नथने से धीरे धीरे रेचक करो। बांये से रेचक करना चाहिये। इसी प्रकार आगे के अभ्यास में प्रत्येक प्राणायाम में रेचक और पूरक को बदलते जाना चाहिये।

५ पसीना आने पर यह अभ्यास बन्द कर देना चाहिये।

बलवर्द्धक, इच्छाशक्ति उत्तेजक आठवां प्राणायाम

(१) बायें पैर की एड़ी मलेन्द्रिय पर और दाहिने पांव की एड़ी बाय पैर के जंघे पर रक्खो और ठोड़ी को छाती से लगाओ। आँखें बन्द रक्खो।

(२) गहरा और लम्बा श्वास लेकर रेचक करो।

(३) फिर कुम्भक और उसके बाद रेचक कर डालो।

(४) यह अभ्यास बढ़ाते-बढ़ाते एक घंटा तक ले जाओ।

नोट—इस प्राणायाम का अभ्यास हो जाने पर इसको करने से साधारण ज्वर दूर हो सकता है और यदि समय पर भोजन न मिले तो इस प्राणायाम को भूख ही में करने से कुछ देर मनुष्य भूख के कष्ट से भी बच सकता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शीत से बचने के लिए नवां प्राणायाम

(१) बायां पांव मलेन्द्रिय के नीचे रक्खो और ठोड़ी छाती पर, दोनों हाथों से बढ़ाकर सीध के फैले हुए दाहिने पांव को पकड़ लो और माथे को घुटने से लगा दो।

(२) बायें नथने से प्राणायाम संख्या २ की भांति पूरक करके फेफड़े को वायु से भर दो।

(३) दृष्टि को नासिका के अग्र भाग पर जमा करके कुम्भक करो।

(४) फिर दाहिने नथने से रेचक।

(५) एक घंटा अभ्यास करने से पसीना आ जाता है और रक्त की गति भी बढ़ जाती है। पसीना आने पर अभ्यास बन्द कर देना चाहिये।

आमाशय के (साधारण) रोग की निवृत्ति के लिए दसवां प्राणायाम

(१) दुजानु होकर बैठो और हाथों की हथेली फैलाकर जंघाओं पर रक्खो वा इस प्रकार कि हथेली पीठ के ऊपर हो।

(२) प्रथम पूरक, फिर कुम्भक, फिर रेचक करो।

(३) यह अभ्यास क्रमशः बढ़ाकर एक घंटा तक ले जाओ।

दांतों के रोग दूर होने और शरीर पुष्ट करने के लिए ११ वां प्राणायाम

(१) बायाँ पैर दाहिनी जंघा और दाहिना पैर बायीं जंघा पर रक्खो और दाहिने हाथ से दाहिने पैर और बायें हाथ से बायें पैर के अंगूठे को पकड़ो।

(२) पूरक मुंह से इस प्रकार करो कि दाँतों की पंक्तियाँ भी श्वास लेने में सहायक हैं और 'सी-सी' की आवाज के सदृश ध्वनि होने लगे।

(३) कुम्भक करके दोनों नथनों से धीरे-२ रेचक कर दो।

(४) ४५ मिनट तक अभ्यास बढ़ाते हुए ले जाना चाहिये।

शरीर में गर्मी की मात्रा बढ़ाने के लिए बारहवां प्राणायाम

१—सिद्धासन से बैठकर दोनों नथनों से पूरक प्रथम धीरे-धीरे करके रेचक करो।

२—पुनः पूरक उस (पहले) से कुछ तेजी से और फिर रेचक।

३—इस प्रकार पूरक का वेग क्रम से बढ़ाते जाओ जिससे श्वास लोहार की धौंकनी की तरह चलने लगे।

४—पसीना आने पर अभ्यास बन्द कर दो।

नोट—इस प्राणायाम के निरन्तर अभ्यास से शरीर के जोड़ों और पिंडलियों का दर्द भी जाता रहता है, परन्तु अभ्यास बढ़ाकर एक घंटे तक ले जाना चाहिए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तेरहवां प्राणायाम

जिह्वा, तालु, नाक, कान और हलक को नीरोग रखने के लिए।

१—पद्मासन से शान्तिपूर्वक बैठ जाना।

२—जिह्वा की नोक तालू से लगाओ। फिर उनकी सहायता से मुंह से पूरक करो।

३—समस्त शरीर को ढीला छोड़ते हुए कुम्भक करो।

४—नाक से रेचक करो।

५—अभ्यास बढ़ाकर ४५ मिनट तक ले जाओ।

ब्रह्मचर्य का साधक चौदहवां प्राणायाम

१—चित लेट जाओ और कानों को मोम से बन्द कर लो जिससे बाहर का कोई शब्द न सुनाई दे और नासिका के अग्र भाग पर दृष्टि जमाओ।

२—आधा घंटा तक इस स्थिति में रहो, रुक-रुककर गहरा श्वास लेते रहो।

३—फिर आँखों की पुतलियों को ऊपर चढ़ाओ और भ्रूओं के मध्य में दृष्टि जमाओ. ऐसा करने से आँखें बन्द होने लगेंगी। उन्हें बन्द हो जाने दो।

४—सं० २ की स्थिति में अधिक रहने से भीतर के शब्द भी सुनाई देने लगते हैं, जिन्हें कबीर आदि महापुरुषों ने "अनहद" शब्द कहा है।

वीर्य्यस्तम्भक पन्द्रहवां प्राणायाम

१—बायें पैर की एड़ी मलेन्द्रिय के नीचे रक्खो और दहिना पांव पैर की जंघा पर रक्खो।

२—नाभि में धारण करके नासिका के किसी एक छिद्र से पूरक करो।

३—फिर कुम्भक करके दूसरे छिद्र से रेचक करो।

४—इस प्रकार चौदह बार अभ्यास करो।

५—यह ध्यान रखना चाहिये कि जिस-जिस छिद्र से पूरक रेचक किया था, एक समय के अभ्यास में बराबर उस-उस छिद्र से पूरक और रेचक करना चाहिए।

नोट १—इस क्रिया के अभ्यास से कुम्भक करने की शक्ति बढ़ती है, चित्त एकाग्र रहता और इन्द्रियों का निग्रह होता है।

नोट २—प्राणायाम प्रारम्भ करते समय सबसे प्रथम यम और नियमों को अच्छी तरह समझ-२ कर चिन्तन करना चाहिए।

नोट ३—प्राणायाम की प्रत्येक क्रिया करते समय प्रबल इच्छा मन में यह जागृत रहनी चाहिये कि वीर्य्य की ऊर्ध्वगति हो रही है।

नोट ४—गृहस्थ पुरुष भी स्त्री के गर्भवती होने पर इस प्राणायाम का अभ्यास करके लाभ उठा सकते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्राणायाम के उपयोगी साधनों का स्पष्टीकरण

पुस्तक को समाप्त करने से पहले यह आवश्यक समझा गया है कि प्राणायाम के आठ उपयोगी साधनों में से, जो पहले अभ्यास के अन्त में अंकित हुए हैं कुछ का स्पष्टीकरण इस प्रकार कर दिया जाये जिसे उनकी उपयोगिता पाठकों को हृदयाङ्कित हो जावे।

तीसरे साधन का स्पष्टीकरण

तीसरा साधन यह है कि नाक से श्वास लेने का अभ्यास करना चाहिए। क्यों नाक से श्वास लेने का अभ्यास रखना चाहिये? इसका उत्तर यह है कि सदैव नाक से श्वास इसलिए लेना चाहिये क्योंकि श्वास लेने की इन्द्रिय नाक है मुंह नहीं। जो इन्द्रिय जिस काम के लिये होती है वह काम ठीक रीति से समाप्त होने का प्रबन्ध उसी में हुआ करता है। यह प्रसिद्ध ईश्वरीय नियम है। अब देखना चाहिये कि नाक में श्वास सम्बन्धी प्रबन्ध क्या है?

१—पहली और मोटी बात यह है कि नाक के बाल अनुपयोगी वस्तुओं को भीतर नहीं जाने देते।

२—दूसरी बात यह है कि यदि कोई अनुपयोगी कण बालों की सीमा उल्लंघन करके भीतर चला भी गया तो छींक द्वारा बाहर निकाल कर फेंक दिया जाता है।

३—तीसरी बात यह है कि फेफड़ों के कोष अत्यन्त कोमल होते हैं, वायु जो वहां पहुंचे तो उसका शीतोष्ण temperature ऐसा होना चाहिये जिसे वे सह सकें। इसलिए नाक में प्रबन्ध यह है कि वायु श्वास द्वारा जब नाक में पहुंचता है तो नाक के भीतर के परदे (Mucus membrane) के सम्पर्क से वह अनुकूल शीतोष्ण वाला हो जाता है, और इस प्रकार फेंफड़ों के कोमल कोषों को कुछ हानि नहीं पहुंचती। परन्तु मुंह में इन सबमें से एक भी प्रबन्ध नहीं है इसलिए नाक ही से श्वास लेना आवश्यक है।

पांचवें साधन का स्पष्टीकरण

पांचवां साधन यह कि सोते समय भी मुंह खोलकर सोना चाहिये। मुंह बन्द कर सोने के बुरे अभ्यास से श्वास के द्वारा वही दुर्गन्धयुक्त वायु जो प्रश्वास द्वारा विषैली होकर बाहर निकल गई थी फिर भीतर जाती है और फिर इसी प्रकार बार-बार जाती रहती है उसका परिणाम यह होता है कि इस अशुद्ध वायु के द्वारा रक्त शुद्ध होने की जगह और भी विषैली होती रहती है और फेफड़ों के कोषों में भी खराबी आती रहती है।

अभी थोड़ा समय बीता है जब एक दुर्घटना मोपलाओं में हो गई थी जो एक ट्रेन में जा रहे थे। ट्रेन में शुद्ध वायु आने के लिए मार्ग न थे और जो द्वार थे वे भी बन्द कर दिये थे। फल उसका यह हुआ कि मुंह से निकली अशुद्ध और विषैली

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वायु के बार-बार श्वास के द्वारा भीतर पहुंचने से शरीर में इतना विष बढ़ गया कि जिससे १४६ मोपला कैदियों में से एक ही रात के अन्दर केवल बीस बाईस मोपला जिन्दा बचे बाकी सब मर गये। इसलिए स्वस्थ रहने के लिये आवश्यक है कि पुरुष स्त्री और बच्चों सभी को मुंह खोलकर सोने का अभ्यास रखना चाहिये।

सातवें साधन का स्पष्टीकरण

सातवां साधन यह यह है कि "भोजन इतना और इस प्रकार करना चाहिये जिससे अजीर्ण न हो। भोजन के सम्बन्ध में इस अंश में बड़ी असावधानी होती है जिसके फल स्वरूप देशवासियां का स्वास्थ्य खराब और आयु का ह्रास हो रहा हे। भोजन का सुधार होना आवश्यक है। उसके सम्बन्ध में कुछ नियम हैं जिनका पालन करना प्रत्येक को आवश्यक समझना चाहिए :—

(१) भोजनं नियत समय पर भूख से कुछ कम करना चाहिये।

(२) एक बार भोजन करने के बाद तीन घन्टे से पहले कुछ भी थोड़ी मात्रा में भी नहीं खाना चाहिये।

(३) भोजन प्रसन्नता के साथ करना चाहिए। जो लोग भोजन को खराब बतलाते और उसमें अनेक त्रुटियां निकालते हुए अप्रसन्नता के साथ भोजन करते हैं, उन्हें यह भोजन पचता नहीं है।

(४) भोजन खूब चबा-चबाकर खाना चाहिये। ईश्वर ने दो प्रकार के प्राणी उत्पन्न किए हैं—एक वे जिनके दांत हैं, दूसरे वे जिनके दांत नहीं हैं। जैसे चिड़िया आदि जिनके दांत नहीं हैं। उनके पेटों में एक प्रकार की पथरी (Cizzard) दी गई है जिससे वे दांतों का काम लेकर भोजन को पीस लेते हैं। मनुष्य दांत रखते हैंउनके आमाशय में उपर्युक्त पथरी नहीं दी गई है, इसलिए उनको दांतों से भोजन खूब चबा-चबाकर करना चाहिए, जिससे वह इतना बारीक हो जावे कि मुंह के भीतर निकलने वाले लार (saliva) से अच्छी तरह मिल जाये।

मुंह के भीतर छः ग्रन्थियां (Salivary Glands) हैं जिनमें से चार तो जिह्वा और जबड़े के नीचे हैं और दो गालों में हैं। जिस समय मनुष्य भोजन करता है तो इन ग्रंथियों से लार निकलने लगती है और भोजन में मिलती है। भोजन के जितने छोटे २ सूक्ष्म कण हो जावेंगे उतने ही अधिक मात्रा में लार उनसे मिल सकेगी और लार के मिलने ही से सुगमता से पाचन क्रिया का प्रारम्भ होता है। जो पुरुष इस प्रकार भोजन करते हैं कि भोजन न दांतों में पिसता है न पर्याप्त मात्रा में लार उससे मिलने पाती है उससे क्या हानि होती है इस पर थोड़ा विचार करना चाहिए। भोजन के सम्बन्ध में पहला काम यह है कि वह शक्कर में परिवर्तित हो जावे। यह काम ग्रन्थियों से निकली हुई लार द्वारा हुआ करता है और उस समय तक बराबर होता रहता है जब तक कि भोजन आमाशय में नहीं पहुंच जाता। जब भोजन आमाशय में शक्कर में परिवर्तित होकर पहुंच जाता है तब से आमाशय की सूक्ष्म नालियों से पाचक रस (Gastric juice) निकलकर मिलता है और इसी पाचक रस में एक और सूक्ष्म पाचक द्रव्य (pepsin) होता है। इस रस और इस पाचक दव्य के मिलने ही से भोजन पचता है, परन्तु ये पाचक रस और

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भोजन से द्रव्य तभी मिलते हैं जब भोजन शक्कर में परिवर्तित हो चुका हो। यदि शक्कर में अपरिवर्तित भोजन आमाशय में पहुंचता है तो वह पचने की जगह सड़ना शुरू हो जाता है और यही सड़ा हुआ भोजन आगे-आगे अन्तड़ियों में जाता है और उनमें ऐसी गन्दगी उत्पन्न करता है कि जिससे सड़ी गली वस्तुओं में उत्पन्न होने वाले कीड़ों के सदृश अन्तड़ियों में भी केंचुआ उत्पन्न होकर मनुष्य को रोगी बना देता है।

उधर आमाशय में सड़े हुए भोजन का सड़ा भाग बाकी रहता है, जो नये आने वाले भोजन से मिलकर उसे भी विषैला बना देता है और इस प्रकार स्थिर अजीर्णता हो जाती है और सारा शरीर इसी विषयुक्त भोजन से बने रक्त द्वारा विषयुक्त होता रहता है और अनेक रोग और व्याधियां शरीर में उत्पन्न हो जाती हैं। ये भयानक परिणाम केवल भोजन को चबाकर न खाने से और उसे लार द्वारा शक्कर में परिवर्तित न कर देने के हैं। इसलिए भोजन खूब चाबकर करना आवश्यक है। भला जब शरीर भोजन के ठीक न करने से ऐसा खराब और इतना विषयुक्त हो तब प्राणायाम से प्राणायाम के लाभ किस प्रकार हो सकते हैं? इसलिए प्राणायाम के उपयोगी साधन जो बतलाये जा चुके हैं, उनको काम में लाना आवश्यक है। तभी प्राणायाम का कुछ फल निकल सकता है और सच तो यह है कि प्राणायाम न करने वालों को भी इन नियमों का पालन करना आवश्यक है तभी वे तन्दुरुस्त रह सकते हैं।

स्वस्थ रहने के लिए

नियमित रहें

सादे रहें।

कम खाएं : चिन्ता न करें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस्लामी सम्मेलन : राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय संदर्भ

—पी० के० हरिवंश

इस्लाम अपने १४०० वर्ष पूरे कर चुका है और अपने हिजरी संवत की १५वीं शताब्दी में प्रवेश कर चुका है। इस समय कुल मिलाकर संसार भर में ५२ मुस्लिम देश हैं। कहा तो यही जाता रहा है कि इस्लाम एकता की बहुत बड़ी कड़ी है और इसी एकता की कड़ी के आधार पर ही विश्व भर में सर्वत्र इस्लाम की भावना का प्रचार किया गया था। आज कई कारणों से इस भावना को चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है और कई इस्लामी देश परस्पर टकरा रहे हैं। विश्व के ८० करोड़ मुसलमानों को कई बार इकट्ठा करने का प्रयास हुआ है, मगर अभी तक कोई विशेष परिणाम नहीं निकला है।

तीसरा इस्लामी सम्मेलन

इस्लामी दुनिया में साऊदी अरब का विशेष स्थान है। उसके पहले शाह स्वर्गीय फैजल भी इस्लाम के प्रचार में बड़ी गर्मजोशी के साथ आगे रहते थे और अब उनके उत्तराधिकारी शाह खालिद भी इस दिशा में उतने ही उत्साही हैं। अतः उन्होंने तीसरा इस्लामी सम्मेलन अपने यहां इस्लाम के पवित्रतम स्थान मक्का से ८० किलोमीटर दूर 'ताइफ' नामक स्थान पर बुलाया।

मुस्लिम एकता का प्रस्ताव

साऊदी अरब के पास तेल द्वारा प्राप्त अपार धन है। सम्मेलन पर खुलकर खर्च किया गया। अनुमान है कि लगभग १८०० करोड़ रुपये व्यय हुए। ब्यालीस बड़े-बड़े महल बनवाये गये, जहाँ मुस्लिम नरेशों, सुलतानों, अमीरों और राष्ट्रपतियों के ठहराने का प्रबन्ध किया गया। बताया गया है कि जिस ठाट-बाट के साथ यह सम्मेलन हुआ, शायद ही कभी विश्व भर में कहीं कोई सम्मेलन हुआ हो। इस सम्मेलन में ४१ राष्ट्रों को निमन्त्रण भेजे गये थे। इनमें से ३८ देशों के प्रतिनिधि इसमें सम्मिलित हुए। मिस्र और अफगानिस्तान को तो इसमें निमत्रण ही नहीं दिया गया था। वास्तव में इराक को छोड़कर यह इस्लामी नरेशों, सुलतानों, शेखों अथवा तानाशाहों का सम्मेलन था। शाह खालिद ने अपने भाषण में, जो उनके बेटे ने पढ़ा, कहा, "इस्लामी राष्ट्रों को एक होना चाहिए और इस्लाम के रूप को निखारना चाहिए। अफगानिस्तान से रूस को और यरूशलम से यहूदियों को निकाल देना चाहिए। इन दोनों के विरुद्ध हमें लड़ना है, क्योंकि ये दुनिया-भर के मुसलमानों को एक चुनौती हैं।" परन्तु शाह खालिद ने यह नहीं बताया कि आखिर उन्हें निकालने के लिए क्या साधन अपनाये जायेंगे। यह बात तो बहुत स्पष्ट है कि इस्राईल के पीछे अमरीका खड़ा है और ये जो सुलतान और शेख इस सम्मेलन में भाग ले रहे थे, अमरीका की इच्छा के बिना कुछ नहीं कर सकते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्तर्विरोधों में फंसी एकता

१९६९ में पहला इस्लामी सम्मेलन मोरक्को की राजधानी रबात में हुआ था। तब भी विशेष रूप से इस मद को लेकर कि इस्लाम के पवित्र स्थान अल-अक्सा पर हमला हुआ है, अपील की गई थी कि सब इस्लामी देश मिलकर इस्राईल के विरुद्ध संघर्ष करें। आज सारे झगड़े की जड़ यरूशलम को बताया जा रहा है। उसके विरुद्ध संघर्ष करने की अपीलें की जा रही हैं। वास्तविकता यह है कि आज कोई ऐसा मुस्लिम देश नहीं, जो हथियार प्राप्त करने के लिए रूस और अमेरिका के आगे हाथ नहीं पसार रहा। एक ओर यह कहा जाता है कि अमेरिका इस्राईल की पीठ ठोंक रहा है, परन्तु यह भी ठोस तथ्य है कि अमरीका और साऊदी अरब परस्पर घी-शक्कर हो रहे हैं। लीबिया इस सम्मेलन में इस लिए नहीं आया, क्योंकि शाह खालिद ने अमरीकी विमानों को मक्का पर उड़ने की अनुमति दे दी। ईरान ने यह कह कर इस सम्मेलन में भाग नहीं लिया कि इराक का शासक सद्दाम हुसैन उसकी नजरों में "शैतान" है और कोई मुसलमान इस शैतान के साथ बैठकर बात नहीं कर सकता। यही सद्दाम हुसैन इस्लाम का सबसे बड़ा योद्धा बनने का स्वप्न ले रहा है। रूस से हथियार भी ले रहा है और शाह खालिद का आलिंगन भी कर रहा है। लीबिया और मिस्र में टकराव है, इराक और सीरिया में ठनी हुई है। जिस रूस की निन्दा की जा रही है, उसी से सीरिया ने समझौता कर रखा है। इस परिस्थिति में शाह खालिद का इस्लामी मोर्चा कैसे बनेगा ?

अनिर्णीत समापन

पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल जिया-उल-हक ने शिमला समझौते की उपेक्षा कर कश्मीर का प्रश्न भी इस सम्मेलन में उठाया। सम्मेलन में यह प्रस्ताव भी पारित किया गया कि गैर-मुस्लिम देशों में मुसलमानों के साथ जो अन्याय हो रहा है, उसे दूर करने की व्यवस्था की जाये परन्तु यह नहीं बताया गया कि ऐसे कौन-से मुस्लिम राष्ट्र है जहाँ मुसलमानों से अन्याय हो रहा है। ठोस तथ्य यह है कि आज अपने आप को मुसलमान कहने वाले लोगों के साथ भी मुस्लिम देशों में ही अन्याय हो रहा है। पाकिस्तान में अहमदिया गैर-मुस्लिम हैं और साऊदी अरब में तो कई मुस्लिम संप्रदायों को गैर-मुस्लिम समझा जाता है। इस शिखर सम्मेलन में अमरीका की आलोचना करने वाले एक ही नेता थे—सीरिया के राष्ट्रपति हाफिज असद। उन्होंने कहा कि अमरीका सैनिक अड्डों द्वारा इस क्षेत्र को घेरने का प्रयास कर रहा है। यह सम्मेलन 'मक्का घोषणा पत्र' को स्वीकार कर समाप्त हो गया। इस सम्मेलन की उपलब्धि का अनुमान इस बात से लगाया जायेगा कि वह अमरीका के नये प्रशासन पर कुछ प्रभाव डाल सकेगा अथवा नहीं।

भारतीय संदर्भ में इस्लाम

भारत में इस्लाम आठवीं शताब्दी तक फैल चुका था। भारत में इस्लाम के प्रसार का कारण हिन्दुओं की जाति प्रथा थी। जिन लोगों को हिन्दू समाज में बराबरी का दर्जा प्राप्त नहीं था, वे बाहें फैलाकर इस्लाम का स्वागत करते रहे। बारहवीं शताब्दी तक मुसलमानों के पांव भारत में जम चुके थे। जब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस्लाम के नाम पर भारत को विभाजित किया गया तो भारत में काफी मुसलमान रह गये। अब इन ३३ वर्षों में उनकी संख्या बढ़कर दुगुनी हो गई है। भारत में मुसलमानों की जितनी संख्या है, उतनी कई इस्लामी देशों की भी नहीं है। अत: इस दृष्टि से भारत उनका भी वैसा ही देश है, जैसा हिन्दुओं और अन्य समुदायों का। उनकी भूमिका हिन्दुओं के राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों से तनिक भी भिन्न नहीं होनी चाहिए। 'भारत के संदर्भ में विश्व की संस्कृति और सभ्यता में इस्लाम का योगदान' विषय पर हुई गोष्ठी का उद्‌घाटन करते हुए प्रधान मंत्री श्रीमती गांधी ने ठीक ही कहा है कि भारतीय मुसलमान राष्ट्रीय जीवन में बराबर के साझेदार हैं। भारत में धर्म के आधार पर किसी से भेदभाव नहीं होता।

राष्ट्रीय एकता का सवाल

इसमें कोई संदेह नहीं कि इस्लाम भारत का एक बड़ा धर्म है। भारत का संविधान धर्मनिरपेक्ष है और सब धर्मों को बराबर सम्मान और संरक्षण प्रदान करता है। मगर ठोस तथ्य यह है कि आज भी भारत के अधिसंख्य मुसलमान मध्ययुगीन ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में जी रहे हैं और भारत के राजनीतिबाज़ उन्हीं का तुष्टीकरण करके उन्हें सर पर चढ़ा रहे हैं। भारत के सभी सम्प्रदाय मिलकर एक सबल राष्ट्र बने—यह सभी राष्ट्रवादी तत्त्वों की प्रबल आकांक्षा है। मगर जब तक मुस्लिम विचारधारा में 'दारुल इस्लाम' और 'दारुल हरब' जैसी धारणायें रहेंगी और राजनितिबाज़ तथा राजनैतिक दल मुसलमानों का राजनैतिक शोषण करते रहेंगे, यह प्रश्न बना रहेगा कि क्या वे देश की मुख्य धारा में पूर्णत: शामिल होंगे? ये सम्मेलन और गोष्ठियाँ राजनीति से मुक्त हो सकें, तभी राष्ट्रीय एकता का स्वप्न इस देश में साकार होना संभव हो सकेगा। ●

हास्य-कण

पत्नी (क्रोध से)--मुझे ऐसे ही तंग किया तो मैं अपनी माँ के पास चली जाऊंगी।

पति—प्रियतमे, उसके लिए अब समय नहीं रहा, अभी-अभी पत्र मिला है कि तुम्हारी माँ अपने पति से झगड़ कर अपनी माँ के घर गई हुई है।

X X X

रोगी (डाक्टर से) इससे तो यही अच्छा है कि मेरी मौत ही हो जाए।

डाक्टर—घबराइये नहीं मैं वही कर रहा हूं जो आप चाहते हैं।

X X X

एक मित्र (दूसरे से)—क्यों भाई, स्त्री अपने ससुराल जाते समय रोती क्यों है?

दूसरा मित्र (पहले से)—बात यह है कि युद्ध पर जाते समय हर कोई अपने हथियार को परख लेता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदोपदेश

—स्व. पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय

सब मेरे मित्र हों मैं सबका मित्र होऊँ

दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् । मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।

(यजुर्वेद अध्याय ३६, मंत्र १८)

अन्वय : (हे) दृते, मा (मां) दृंह । सर्वाणि भूतानि मा (माम्) मित्रस्य चक्षुषा समीक्षन्ताम् । अहं मित्रस्य चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे । (वयं) मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ।

अर्थ : (दृते) **हे सर्वाधार परमात्मन् (सर्वाणि भूतानि) समस्त प्राणिवर्ग (मा) मुझको (मित्रस्य चक्षुषा) मित्र की आंख से (समीक्षन्ताम्) देखें । (अहं) मैं (सर्वाणि भूतानि) सब प्राणियों को (मित्रस्य चक्षुषा) मित्र की दृष्टि से (समीक्षे) देखता हूं या देखूं । (वयं समीक्षामहे मित्रस्य चक्षुषा) हम सब लोग एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें ।**

व्याख्या : कहने के लिये तो इस वेदमंत्र में अत्यन्त साधारण बात का उपदेश किया गया है। अर्थात् सब लोग मेरे दोस्त हों और मैं सब का दोस्त होऊं। परन्तु तथ्य यह है कि यद्यपि सृष्टि के आरम्भ से अब तक सब विद्वान् और महात्मा इसी का उपदेश करते आये परन्तु मनुष्य को अपने जीवन में यदि कोई कठिन बात मालूम हुई तो यह कि वह दूसरों का मित्र नहीं बन सकता और दूसरे उसके मित्र नहीं बन सकते। परन्तु इसीके साथ हर मनुष्य का यह भी अनुभव है कि जब तक वह दूसरों का मित्र नहीं बनता और दूसरे उसके मित्र नहीं बनते उसका काम नहीं चलता।

प्राय: लोग सोचा करते हैं कि उनको स्वतंत्र होना चाहिये। परतंत्रता बुरी चीज है। एक मंत्र में प्रार्थना है कि "अदीना: स्याम शरद: शतम्" "हम आयुपर्यन्त अदीन रहें।" अर्थात् न कोई हमारा दीन हो और न हम किसी के दीन हों। परन्तु दीनता और परतंत्रता में भेद है। परमात्मा ने हमको न स्वतंत्र उत्पन्न किया और न स्वतंत्र रहने के लिये बनाया। इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि परमात्मा ने हम को न परतंत्र बनाया और न परतन्त्र रहने के लिये बनाया। यदि मैं सर्वथा स्वतन्त्र हो गया और संसार के समस्त प्राणी भी मेरे समान स्वतंत्र हो गये तो न मुझे उनसे कुछ लेना है न उनको मुझ से। फिर मेरा दूसरों का मित्र होना या दूसरों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का मेरा मित्र होना कोई अर्थ नहीं रखता। और यदि मैं दूसरों के तंत्र के आधीन हूं तो मेरी उनकी मित्रता कैसी ? कोई दास किसी स्वामी का मित्र नहीं होता, न स्वामी दास का। इस प्रकार दोनों अवस्थाओं में मित्रता नहीं हो सकती। और मंत्र में प्रतिपादित आकांक्षायें व्यर्थ हो जाती हैं।

तो क्या मित्र होने के स्थान में हम शत्रु बनें ? बनने का यत्न तो करते हैं। शत्रुता की भावना संसार से दूर नहीं है। हर प्राणी किसी न किसी के लिये वैरभाव रखता है। परन्तु रख नहीं पाता। शत्रुता मित्रता से भी कठिन है। शत्रुता दुधारी तलवार है जिससे अपने हाथ के कट जाने का बराबर भय लगा रहता है। शत्रुता रखने वाले का जीवन हर समय कष्टमय होता है। शत्रुता की आग पहले तुमको जलायेगी। फिर तुम्हारे शत्रु को। तुमको तो अवश्य जलायेगी। तुम्हारे शत्रु को जलाने में कभी-कभी संदेह भी हो सकता है।

तो क्या न शत्रुता हो और न मित्रता। हम उदासीन रहें ? रहिये, यत्न कीजिए परन्तु रह न सकेंगे। क्योंकि सृष्टि-क्रम यह घोषणा करता है कि हम न स्वतंत्र होने के लिए बनाये गये है और न परतंत्र होने के लिए। सृष्टि का निर्देश है परस्परतन्त्रता (Neither dependence, nor independence, but inter-depence) अर्थात् मैं आपके तंत्र के आधीन रहूं और आप मेरे तंत्र के। मेरा और आपका दोनों का तंत्र एक हो जिसको मैं अपना तंत्र कह सकूं और आप अपना। मेरे और आपके तंत्रों में द्वैधीभाव न हो। इसका नाम है मित्रता।

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थप्रकाश में मित्र शब्द का यह अर्थ किया है— (ञिमिदा स्नेहने) इस धातु से औणादिक क्त्र प्रत्यय के होने से मित्र शब्द सिद्ध होता है। 'मेद्यति स्निह्यति स्निह्यते वा स मित्र:' जो सबसे स्नेह करने और सबको प्रीति करने योग्य है। इससे परमेश्वर का नाम मित्र है।'

और हर जीव को परमेश्वर के गुणों को धारण करना चाहिये, इसलिये हर जीव को भी मित्र होना आवश्यक है। गायत्री मंत्र में प्रार्थना भी है कि हम परमात्मा के गुणों को 'धीमहि' अर्थात् धारण करें। मित्रता परमात्मा का एक महान् गुण है। मित्र में स्नेह अर्थात् चिकनापन होता है। तेल स्नेह है। घी स्नेह है। जल स्नेह है। स्निग्ध पदार्थों में तरलता होती है। उसके कण अलग रहना नहीं चाहते। रह नहीं सकते। पत्थर का टुकड़ा ठोस है। दो पत्थर के टुकड़ों को कहीं रख दीजिए। वहीं ठहरे रहेंगे। एक दूसरे से मिलने के लिए आतुर न होंगे। परन्तु जल या तेल के कणों को आप इस प्रकार अलग नहीं रख सकते। उनकी प्रकृति में है दौड़कर दूसरे सजातीय कणों से मिल जाना। इसलिए यदि आप उनको मिलने से रोकना चाहें तो बोतल आदि किसी ऐसे पात्र में रखना पड़ेगा जिसकी दीवारों को वे तरल कण तोड़ न सकें।

प्राणियों की प्रकृति में भी यह तरलता है। हर प्राणी की प्रकृति में। मेरी प्रकृति में और आपकी प्रकृति में। आप चाहते हैं कि दूसरों से मिलें, दूसरे चाहते हैं कि आपसे मिलें। मिलना हमारे स्वभाव में है। दूर रहना नैमित्तिक है। कारणवश होता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऊपर कहा जा चुका है कि सृष्टि-क्रम के अनुसार प्राणी परस्परतंत्र बनाए गए हैं। हमारे शरीर के सब अंग एक दूसरे के परस्परतंत्र हैं। कोई अकेला काम नहीं कर सकता। आंख पैर की आकांक्षा रखती है और पैर आंख की। पैर के नख और शिर की शिखा दोनों को एक दूसरे की अपेक्षा है। यह अपेक्षा हर मनुष्य को प्रत्यक्ष न होती हो परन्तु शरीर-विज्ञान के वेत्ता इसको भली प्रकार जानते हैं। यह तो हुई शरीर के अंगों की परस्परतंत्रता। अब आप अपने शरीर और दूसरों के शरीरों के सम्बन्धों पर विचार कीजिए। एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के बिना नहीं रह सकता। मनुष्य जाति दूसरे प्राणियों के बिना नहीं रह सकती। क्या कोई ऐसा देश है जहां केवल मनुष्य ही रहते हों। अथवा प्राणियों की केवल एक ही जाति हो। इससे हमें पता लग जाता है कि हमें एक दूसरे की ओर तरल पदार्थों के समान खिंचने की कितनी आवश्यकता है। प्रायः स्वतंत्रता और परतंत्रता के संघर्ष में हम परस्परतंत्रता के आवश्यक तंत्र को सर्वथा भुला देते हैं। यदि हम इस मूल मंत्र को समझलें तो हमें न केवल परहित के लिए अपितु आत्म-हित के लिए भी दूसरों की भलाई का विचार करना होगा। सह-अस्तित्व (Co-existence) का यही विधान है जिसपर सृष्टि की स्थिति है। परन्तु जीव अल्प है अर्थात् अल्पज्ञ है। वह अपनी अल्पज्ञता को भी भूल जाता है। कहावत है कि मनुष्य दूसरों के धन को अपने धन से अधिक और दूसरों की बुद्धि को अपनी बुद्धि से कम समझता है। बच्चा समझता है कि उसमें उसके पिता या गुरु की अपेक्षा अधिक बुद्धि है। पागल समझता है कि संसार में केवल वही बुद्धिमान् है अन्य सब पागल हैं। इसलिए मनुष्य को सबसे पहला पाठ यह पढ़ना चाहिए कि मैं अल्पज्ञ हूं और अल्प-शक्ति भी हूं। मुझे अपनी इस अल्पता की अनुभूति होनी चाहिए तभी मेरी उन्नति संभव हो सकेगी। जब यह अनुभूति नहीं होती तो मनुष्य स्वार्थी होकर दूसरों से स्नेह करना छोड़ देता है। शत्रुता यहीं से आरंभ होती है। इससे बचने के लिए स्थिरता की आवश्यकता होती है।

वेदमंत्र में ईश्वर को 'दृति' कहकर पुकारा गया है। लौकिक भाषा में दृति नाम है चमड़े के थैले का जिसको उर्दू में मशक कहते हैं। दृति में तरल पदार्थ भरा जाता है। दृति चमड़े का वह थैला भी होता है जिसे आधार बनाकर तैराक लोग तैरना सीखते हैं। सायणाचार्य ने ऋग्वेद मंडल ४, सूक्त ४५ के प्रथम मंत्र का भाष्य करते हुए लिखा है—'रस द्रव्याधारः पदार्थश्चर्ममयो दृतिरित्युच्यते।' अर्थात् चमड़े का वह पात्र जिसमें रस द्रव्य रक्खा जाता है। यह दृति का लौकिक अर्थ है। सायण के समय में 'दृति' का केवल यही प्रयोग होगा। मंत्रों को विशेष अवसरों पर विशेष विनियोग में लाने के लिए शब्दों के अर्थों को भी उनकी तरलता कम करने के लिए योगरूढ़ि बनाना पड़ा। इसलिए उव्वट, महीधर आदि भाष्यकारों ने गृह्य या कल्प-सूत्रों के आधार पर 'दृति' आदि शब्द भी विशेष अर्थ में प्रयुक्त किये। यज्ञ की भाषा में 'दृति' एक ग्रह अर्थात् पात्र होता है जिसे महावीर ग्रह बोलते हैं। यहां पाठकों को याद रखना चाहिए कि 'ग्रह' का अर्थ नक्षत्र या तारा नहीं है। यज्ञ में यज्ञ के आवश्यक पदार्थ सोमरस आदि रखने के लिए कई छोटे-बड़े पात्र होते हैं। उनका नाम 'ग्रह' होता है। महावीर भी वैसा ही एक ग्रह है।

मैं समझता हूं कि 'दृति' में मूल भावना आधार की है। इसलिये 'दृति'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का अर्थ है ईश्वर जो सबका मूलाधार है। 'दृंह शब्द का अर्थ है 'हमको दृढ़ बना' आधार पाकर आधेय में दृढ़ता आ जाती है। मनुष्य में भी परमात्मा के आधार होने पर विश्वास करके धैर्य और स्थैर्य के गुण प्राप्त हो जाते हैं। कभी-कभी स्वार्थवश हम दूसरों की मित्रता को तोड़ बैठते हैं। यह अपनी निर्बलता के कारण होता है। दो मित्र परस्पर शत्रु कैसे बनते हैं ? क्या आपने कभी विचार किया है? हर घर में ऐसे उदाहरण मिलेंगे कि आदि में मित्र थे, कुछ दिनों में शत्रु हो गये। जिन स्त्री-पुरुष-युगल ने अत्यन्त प्रेम से विवाह किया था वे एक-दूसरे का मुंह नहीं देखना चाहते। जो जातियां एक-दूसरे की मित्र हैं, कल घोर शत्रु बन जाती हैं। यह परिवर्तन एक क्षण में कभी नहीं होता। इसके लिये समय लगता है, परन्तु मनुष्य को इसकी अनुभूति नहीं होती। अनुभूति का अभाव अनुभूत वस्तु के अभाव का प्रमाण नहीं है। हम एक बालिश्त के शरीर से साढ़े तीन हाथ के हो जाते हैं। बता नहीं सकते कि किस दिन कितने बढ़े। एक क्षण में तो नहीं बढ़ गये। एक और उदाहरण लीजिए। आपने दोपहर को १२ बजे खाना खाया। दो बजे आपसे कोई कहे कि क्या आप भूखे हैं ? आप कहेंगे 'नहीं'। रात को आठ बजे आप कहेंगे 'मुझे बहुत भूख लगी है।' यह 'बहुत भूख' आपके शरीर में एकाएकी कब घुस गई ? वस्तुतः भूख तो खाना समाप्त करने के पश्चात् ही आरम्भ हो गई थी। इतनी भूख लगना कि आप अनुभव कर सकें—इसमें आठ घण्टे लग गये। इसी प्रकार मित्रता का हाल है। पहले एक छोटी-सी बात पैदा होती है। इससे कुछ ठेस-सी लगती है। फिर वह ठेस बढ़ जाती है। मन-मुटाव इसी का नाम है। फिर खींचा-तानी आरंभ होती है और दो मित्र शत्रु बन जाते हैं। यदि हम परस्परतंत्रता के नियम को दृष्टि में रक्खें तो छोटी-छोटी बातों में अपने पैरों को स्थिर रख सकते हैं और मित्रता दृढ़ रह सकती है। मित्र मित्र की हिंसा नहीं करता। शत्रु सदा हिंसा की ही बात सोचता रहता है। गरम युद्ध से पूर्व शीतल युद्ध (Cold war) बना रहता है। इस प्रकार वातावरण सदा द्वेष पूर्ण रहता है।

बहुत से लोग हैं जो मनुष्य के साथ प्यार करने का उपदेश करते हैं। परन्तु मनुष्य से बाहर उनका प्रेम नहीं जाता कभी सोचते ही नहीं कि पशु-पक्षियों में भी जीव है। उनके साथ तो सदा क्रूरता का ही व्यवहार होता है। कुछ लोग अपने देशवासियों तक ही मित्रता के भाव को सीमित रखते हैं। कुछ छोटी-छोटी बिरादरियों तक ही प्रेम करना सिखाते हैं। परन्तु वेद ने 'सर्वाणि भूतानि' अर्थात् प्राणिमात्र के साथ मित्रता का उपदेश दिया है। इस उपदेश पर श्रद्धा रखने वाला मनुष्य मांसाहारी नहीं हो सकता। क्योंकि बिना पीड़ा दिये मांस प्राप्त नहीं हो सकता। वह चोरी नहीं कर सकता, क्योंकि चोरी करने से दूसरों को कष्ट पहुंचता है।

इतना ही नहीं, मित्र को तो मित्र के लाभ की बात भी सोचते रहना चाहिये। इसलिए महात्मा लोग दूसरों को कष्टों से बचाने में भी सदा यत्नशील रहते हैं। "परोपकाराय सतां विभूतयः"। वह संसार कितना अच्छा संसार होगा जिसमें सब मुझे मित्र की दृष्टि से देखें और दूसरे मुझको "मा विद्विषामहै। हममें से कोई किसी के साथ शत्रुता न करे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महेश योगी और उनका भावातीत ध्यान

—सत्यपाल शास्त्री

पिछले दिनों इन पंक्तियों के लेखक को नई दिल्ली के बहादुरशाह ज़फ़र मार्ग स्थित इंडियन एक्सप्रेस की बिल्डिंग में जाने का अवसर मिला, तो उसने देखा कि उक्त समाचारपत्र की बिल्डिंग के साथ जो नई ऐनेक्सी (छोटी बिल्डिंग) बनकर तैयार हुई है, वह किसी समाचारपत्र का कार्यालय न होकर महेश योगी के शिष्यों की लीला स्थली बनी हुई है। मैंने अन्दर जाना चाहा, तो अटेंडेंट ने रोक दिया। मेरा कौतूहल बढ़ा और उसके बाद जो कुछ पत्र-पत्रिकाओं में पढ़ने को मिला, उसी के आधार पर निम्नलिखित पंक्तियां प्रस्तुत की जा रही हैं।

महेश योगी अपने आपको महर्षि कहते हैं। वे महर्षि तो क्या योगी कहलाने के भी अधिकारी नहीं। फिर भी वे इसी नाम से जाने जाते हैं, इसलिए इसी नाम से उनकी चर्चा की जा रही है।

महेश योगी का वास्तविक नाम जे. एन. श्रीवास्तव है। वे इलाहबाद के एक स्कूली अध्यापक के ज्येष्ठ पुत्र हैं। इलाहाबाद के एक स्थानीय कॉलेज में बी.एससी. में पढ़ते रहे हैं। कॉलेज की पढ़ाई में उनका रिकार्ड बहुत अच्छा न था। उन्होंने सन् १९४० के आसपास बी. एससी. की परीक्षा पास की। इस समय उनकी उम्र ६०-६५ वर्ष की है। विश्वविद्यालय में वे फिजिक्स के छात्र थे।

सन् १९४३ के आसपास उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और ऋषिकेश के उत्तर में स्थित ज्योतिर्मठ में चले गये। सन् १९५० में जगद्गुरु शंकराचार्य स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती ने उन्हें अपना सेक्रेटरी बना लिया। सन् १९५४ में स्वामी ब्रह्मानन्द का देहान्त हो गया। तब तक श्रीवास्तव साहब (अब महेश योगी) पर्याप्त धन बटोर चुके थे। उन्होंने मठ छोड़ दिया और सन् १९५७ में महर्षि महेश योगी के रूप में प्रकट हुए। उन्होंने स्पिरिचुअल रिजैनरेशन मूवमेंट चलाई, जो टाँय-टाँय फ़िस्स हो गई। इस पर वे कैलिफोर्निया चले गये। वे अमरीका में अपना धन्धा जमाने में लगे रहे। बीच में दो वर्ष के लिए भारत भी आये। फिर यूरोप में बीटलों पर डोरे डालते रहे। सन् १९६७ के आसपास वे बीटलों के साथ भारत आये। तब वे अपनी भावातीत ध्यान की थ्योरी प्रतिपादित कर चुके थे। ऋषिकेश में उनका एयरकंडीशंड आश्रम भी बन चुका था। सन् १९७० के आसपास कैलिफोर्निया के स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में महेश योगी का "साइंस आफ क्रियेटिव इंटैलिजैन्स कोर्स" प्रारम्भ हुआ। एल. एस. डी. सदृश मादक पदार्थों से भ्रान्त और पीड़ित पाश्चात्य जगत् को महेश योगी की बातों से झूठी सान्त्वना मिली। आशा की किरण दिखाई दी। अनेक विश्वविद्यालयों में छात्र भावातीत ध्यान पर पीएच. डी. करने लगे। आज २५ लाख व्यक्तियों का भावातीत ध्यान की थ्योरी पर विश्वास है। अठारह हजार प्रशिक्षित प्रचारक इस थ्योरी का प्रचार कर रहे हैं।

महेश योगी का दावा है कि उनका भावातीत ध्यान सिद्धि कार्यक्रम महर्षि पतंजलि के योगदर्शन पर आधारित है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आइये, उनकी थ्योरियों पर भी विचार कर लें।

नवम्बर १९८० में महेश योगी के भावातीत ध्यान सिद्धि कार्यक्रम के तीन हजार विशेषज्ञ राजधानी में एकत्र हुए। इन्हें ज्ञानयुग का गवर्नर कहा जाता है। महेश योगी का दावा है कि जब विश्व में पर्याप्त लोग उनके भावातीत ध्यान का अभ्यास करने लगेंगे, तब विश्व की चेतना का स्तर ऊंचा उठेगा और विश्व-भर में ज्ञान, शान्ति और आनन्द का वातावरण छा जायेगा।

महेश योगी के विचारों को विचारधारा या दार्शनिक सिद्धान्त कहना दर्शन का अपमान करना है, क्योंकि वे न केवल किसी सुसंगतिपूर्ण समग्रता से रहित हैं अपितु सामान्य तान्त्रिक संगतियों से भी बेपरवाह हैं। उनकी असली मन्शा है भावातीत ध्यान के व्यापार का अधिकाधिक विस्तार। इसकी सफलता के लिए वे कोई भी कौशल अपनाने में संकोच नहीं करते। हमारे देश में सुसंगतिपूर्ण चिन्तन करने वाले लोगों की संख्या कम है। इसके विपरीत ऐसे लोगों की कमी नहीं, जो किसी विचार को इसलिए प्रस्तुत करते हैं कि उससे उनके किसी वांछित प्रयोजन की पूर्ति होती है। हजारों युवक दहेज प्रथा का विरोध करते हैं लेकिन अवसर आने पर डटकर दहेज लेते हैं। आध्यात्मिक क्षेत्र में भी यही स्थिति है। लोग ऊंची-ऊंची आध्यात्मिक बातें करते हैं, लेकिन उनका आचरण अपने कथन के विपरीत होता है। यदि हम इस बात को समझलें तो महेश योगी की ऊटपटांग बातों की वास्तविकता हमारी समझ में आ जायेगी। वे बातें तो करते हैं योग की—वेदों की, लेकिन उनके आचरण में भोगवाद है—भौतिकता है। योग और भोग साथ-साथ नहीं चल सकते। न केवल उनका आचरण भोगवादी है उनकी शिक्षा भी ऐसी ही है। यहां हमें अष्टावक्र गीता का श्लोक याद आता है — आश्चार्यं मोक्षकामस्य मोक्षादेव विभीषिका (आश्चर्य की बात है कि मोक्ष चाहने वाले मोक्ष से ही डरते हैं। इसीलिए महेश योगी ने मोक्ष की नई व्याख्या कर दी है। पुराना मोक्ष भोगों से विरत करता था—नया मोक्ष पौराणिक स्वर्ग का पर्यायवाची है। मोक्ष का डर समाप्त करके उसे लोकप्रिय बनाया जा रहा है। महेश योगी धीरे-धीरे अपने प्रतिद्वन्द्वी स्वामी करपात्री का प्रभाव घटाने में सफल होते जा रहे हैं, क्योंकि करपात्री जी का शब्दजाल आधुनिक नवधनाढ्य लोगों को नहीं खींच पाता। उसमें योग की छूट एक सीमा तक ही है। नवधनाढ्य वर्ग तो चाहता है कि उसके भोगों पर कोई अंकुश न रहे। वह आधुनिक मुक्ति चाहता है। महेश योगी की थ्योरी ध्यान की थ्योरी नहीं, जड़ता की थ्योरी है। महेश योगी सामाजिक विसंगतियों, विषमताओं, धृष्टता और दम्भ को तर्कयुक्त सिद्ध करने का असफल प्रयास करते हैं।

भावातीत ध्यान का नैतिक पक्ष उपहासास्पद है। महेश योगी का कहना है कि साधकों को तीन चीजें मिलती हैं—बुद्धि, सुख और समृद्धि। साधकों को ये चीजें इसलिए मिलती हैं कि वे औरों को दें। अब स्थिति यह है कि भावातीत ध्यान के हजारों साधक चटपटे आहार, शराब, मधुर ध्वनियों, शारीरिक वासनाओं की पूर्ति, मानसिक मूर्छा और प्रचुर भोग साधनों द्वारा बुद्धि को अभिव्यक्त, सुख को अनुभूत और समृद्धि को प्रमाणित करते हुए सारे संसार में सक्रिय। है इसमें से उन्होंने दूसरों को क्या दिया? यदि नहीं दिया तो अपने ही पैमाने से उनका अस्तित्व निरर्थक है—व्यर्थ है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महेश योगी भाव और विचार के विरोधी हैं। वे ज्ञान के नहीं, भावातीत ध्यान के पक्षधर हैं। वे यान्त्रिक ढंग से परमात्मा की अनुभूति (मैकेनिकल वे आफ गाड रियलाइजेशन) की बात करते हैं। ऐसे ही लोगों के बारे में आदि शंकराचार्य ने चेतावनी दी थी—

वाग्वैखरी शब्दझरी शास्त्रव्याख्यान कौशलम् ।
वैदुष्यं विदुषां तद्वद्भुक्तये न तु मुक्तये ।

अर्थात् धारावाहिक शब्दों के रूप में अभिव्यक्त वाणी कौशल और शास्त्रों की व्याख्या का कौशल (आचरणशून्य) भोगों की प्राप्ति तो करा देता है, लेकिन मुक्ति की नहीं।

सच मानिये, महेश योगी और उनके शिष्यों की सारी उछल-कूद जीवन के अन्तिम क्षण तक भोगों की लालसा तृप्त करने के लिए ही है। लेकिन यह सम्भव नहीं। मनुस्मृति के शब्दों में—

न जातु कामः कामानामुपभोगेन शाम्यति ।
हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्धते ॥

अर्थात् कामनाओं को भोगने से कामना शान्त नहीं होती अपितु उसी तरह बढ़ती है जिस तरह आहुति डालने से आग भड़कती है।

महेश योगी का भावातीत ध्यान मानसिक जड़ता और उसके बाद इन्द्रिय-लोलुपता की अन्धी दौड़ की यशोगाथा है। पहले लोग मुक्ति की पंडागिरी करते थे। अब ये नये योगी मुक्ति के नहीं, धर्म के भी नहीं, अर्थ और काम के पंडे हैं। अर्थ और काम सुलभ कराना ही इनकी पंडागिरी का प्रयोजन है।

हमारे इस कथन का प्रमाण यह है कि भारत के विभिन्न भागों में महेश योगी के शिष्यों ने संगठित रूप से उद्योगों में रुचि ली है और दिल्ली के बाजारों में उनका उत्पादन 'सिद्ध प्रोडक्ट्स' के नाम से बिक रहा है। ऐसा लगता है कि महर्षि का संगठन शीघ्र ही भारत में दो क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर प्रवेश कर रहा है—औद्योगिक उत्पादन और समाचार-पत्र श्रृंखला। समाचार-पत्र श्रृंखला की श्रीगणेश जबलपुर में 'हितवाद' की खरीद से हो गया है, और कुछ पर्यवेक्षकों का तो यहां तक कहना है कि रामनाज गोयनका इण्डियन एक्सप्रेस की पूरी श्रृखंला उन्हें बेचना चाहते हैं, मगर इसमें उनकी पुत्रवधू श्रीमती सरोज जैन बाधक बन रही हैं।

महेश योगी का यह विश्व साम्राज्य अरबों डालर का माना जाता है। बहुत से लोगों के मन में यह सवाल उठता है कि यह धन कहाँ से आता है। आम तौर पर महेश योगी चन्दा नहीं लेते, मगर धन बड़ी मात्रा में आ रहा है। इस धन का एक बड़ा स्रोत तो उनके सोलह हजार शिष्य हैं, जो भावातीत ध्यान सिखाने का भारी शुल्क लेते हैं। विदेशों में यह शुल्क प्रति व्यक्ति दो सौ डालर है तथा भारत में दो सौ रुपया। अब तक पच्चीस लाख विदेशी भावातीत ध्यान सीख चुके हैं। इसका अर्थ यह है कि पचास करोड़ डालर की राशि तो शुल्क के रूप में आ चुकी है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आर्यसमाज भी एक संप्रदाय है ?

—डॉ. सु० ब० काले

जन-ज्ञान के जनवरी (१९८१) अंक में डाक्टर दत्तात्रेय वाव्ले का एक लेख प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत लेख में उक्त लेख में लिखी गई अनेक बातों का खंडन किया गया है।

—सम्पादक

आर्यसमाज का इतिहास देखा जाये तो यह दिखाई देता है कि हमने नाम वेद का लिया, वेद के ठेकेदार बने, लेकिन स्वयं गलत रास्ते पर चले और औरों को भी दुःखसागर में डाल दिया। इसको सुधारने के लिए अनेक अधूरे विचार और उपचार भी नहीं निभा सके। कितने साधु-संत हो गये। लोग उनके नाम लेते रहे और उलटे चलते रहे। सभी धर्म ईश्वर और सत्य ज्ञान की बातें करते हैं, लेकिन चलते हैं विपरीत। इससे ऐसा लगता है कि अनुयायी ही कृतघ्न, मतलवी, स्वार्थी रहते हैं। बड़े लोगों के 'उद्देश्य' की अवहेलना करते हैं। ज्ञानेश्वर को सभी मानते हैं पर उनके तत्त्वज्ञान और उद्देश्य के विपरीत चलते हैं। मानते तो तुकाराम को हैं और चलते हैं उनके बिलकुल विपरीत—और वे भी उनके अनुयायी और उनकी शिक्षा लोगों को देने को निकले हुए अनुयायी। यह धोखा है। कृतघ्नता है। विडंवना है। बाद में दूसरे लोग भी इन महात्माओं के उद्देश्य के विपरीत आचरण करते हैं। महात्मा गांधी जी का स्वप्न था रामराज्य का पर उनके अनुयायी उनका नाम लेकर उनके उद्देश्य और ध्येय के विपरीत चल रहे हैं। जितने भी अमर हुतात्मा—शहीद हुए उनके दिल में देश का कुछ स्वप्न होगा ही, पर आज उनकी याद हम भूल गये।

स्वामी दयानन्द भी ऐसा ही एक महान् संन्यासी इस भूमण्डल पर हुआ। उन्होंने अपने मोक्ष का मार्ग छोड़कर सारी मानव जाति के दुःख निवारण के लिए अपना पूरा जीवन दिया। महान् मेधावी बुद्धि से—योगाभ्यास से उन्होंने एक ऐसे अन्धेरे में भी प्रकाश क्या है यह जाना। अनेक मतमतान्तर क्यों हैं ? सही इलाज क्या है ? यह जाना और पूरी मानव जाति के कल्याण का मार्ग रखा। पूना के व्याख्यान में उन्होंने कहा कि "यदि मैं चाहूं तो वेद के आधार पर विमान बना सकता हूं। पर यह मेरा काम नहीं।" उस समय की स्थिति बहुत विचित्र थी। वे अकेले थे और उनके मुकाबले में कोटि-कोटि हिन्दू (पौराणिक) लोग थे, जो देश के हिसाब से अपने थे। उधर जैन, बौद्ध, इस्लाम, ईसाइयत—इन सभी मतों के लोग थे। उनके हाथ में न राज्य था, न सेना, न आज जितने अनुयायी। इतना होते हुए भी उन्होंने आपने उदात्त ध्येय के लिए असत्य, अज्ञान, अन्धविश्वास, गलत परम्परा आदि पर हमला किया। अंग्रेजों के राज्य में जहाँ सूरज नहीं डूबता था, ऐसे समय पर ईसाई मत का खंडन करना आसान नहीं था। तो भी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस महान् संन्यासी ने यह सब किया। हिन्दुओं के अनेक राजे होते हुए भी उन्होंने हिन्दू मत अर्थात् पौराणिक मत का सबसे पहले खंडन किया। सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में उन्होंने स्पष्ट लिखा कि मानव जाति का कल्याण केवल सत्यज्ञान से होगा और दूसरा कोई इलाज नहीं। इसी लिए उन्होंने सत्यज्ञान की पुस्तकें लिख। सरलार्थ किये। लोगों ने बहुत प्रलोभन दिये। तीसरी तरफ धर्मगुरु, जो समाज के ठेकेदार थे, वे भी नाराज हो रहे थे। उन्होंने राज्य की भी चिन्ता नहीं की, देश की और संख्या की भी चिन्ता नहीं की। ऐसा महान् संन्यासी और उसका प्रचार करने के लिए आर्यसमाज जैसी संस्था। पर समाज कृतघ्न ही सिद्ध हुआ। उन्हें जहर दिया गया। उनके अनुयायी कहलाने वाले लोग आज उनके उद्देश्यों को भूल रहे हैं। यह बहुत बड़ी कृतघ्नता है। स्वातन्त्र्य संग्राम के समय कुछ लोगों ने उन्हें समाज सुधारक ही समझा।

आज तो हम आर्यसमाज और वैदिक धर्म में ही भ्रम खड़े कर रहे हैं। संप्रदाय और धर्म में भेद भी भूल रहे हैं। दयानन्द ने मतमतान्तर को खत्म करके एक मानव समाज का निर्माण करने के लिए यह सब किया। लोग अपनी स्वार्थी दृष्टि से 'आर्यसमाज का भविष्य खतरे में है', यह कहकर उसे एक सम्प्रदाय सिद्ध करना चाहते हैं। आर्यसमाज में जो शिथिलता आई है, वह दो कारणों से। एक हमारे व्यक्तिगत आचरण, तप, श्रद्धा की कमी और दूसरी ओर हमारे नेता लोगों की ठेकेदारी, समझौता मनोवृत्ति, समस्या को समझे बिना—सत्यज्ञान, वेद के उद्देश्य को जाने बिना—संकीर्ण कामचलाऊ इलाज सुझाकर स्वयं डूबना चाहते हैं और आर्यसमाज को भी डुबाना चाहते है। कोई कहता है आज समयानुसार आर्यसमाज की दिशा होनी चाहिए। सत्य की दिशा एक ही रहती है और वह समयानुसार बदलती नहीं। पर आर्यसमाज के ठेकेदार उसे बदलना चाहते हैं।

प्राचार्य वाब्ले जी का जनवरी १९८१ के जन-ज्ञान में प्रकाशित लेख 'आर्यसमाज' पढ़ने में आया। उन्होंने अपनी 'आर्यसमाज का भविष्य' पुस्तक भी, जो १९७५ में प्रकाशित हुई थी, मुझे भेजी। मैंने बहुत सावधानी से लेख और पुस्तक को पढ़ा। बहुत खेद हुआ। आर्यसमाज के जहाज में ५० वर्ष यात्रा करने वाले प्राचार्य महोदय भी ऐसे विचार रखते हैं और वह भी आर्यसमाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए। यह एक बहुत बड़ी गलती है। आपने अपनी पुस्तक में सभी आधार वीर सावरकर, महात्मा गांधी, लोकमान्य तिलक, लाला लाजपतराय और अन्य पौराणिकों के और सरकारी न्यायालय के विचार का आर्यसमाज ही लिया है। वे लोग आर्यसमाज को एक संप्रदाय मानते है—हिंदू धर्म का एक अंग मानते हैं, ऐसा लिखा है।

उन्होंने पहले तो संप्रदाय को ही धर्म माना है और उसी दौड़ में आर्यसमाज को भी एक धर्म बताया है। जैन, हिंदू, बौद्ध, सिख आदि के साथ उसकी भी गिनती की है। पुस्तक में धर्म की आधुनिक व्याख्या देकर—दयानंद को संस्थापक बताकर, धर्मग्रंथ वेद और सत्यार्थ प्रकाश और कुछ सिद्धांत बताकर धर्म (संप्रदाय) बनाने की कोशिश की है जो सर्वथा मिथ्या है। दयानंद ने वेद के आधार पर बताया है कि पूरे विश्व के लिए एक ही धर्म है—वैदिक धर्म। यहां प्राचार्य महोदय ऋषि के उद्देश्य को भूल गये। आर्यसमाज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानवमात्र के कल्याण के लिए है और वह एक संस्था है जो वैदिक धर्म का प्रचार करती है।

प्राचार्य महोदय एक तरफ जहां आर्यसमाज को संप्रदाय बता रहे हैं, वहां आर्यसमाज को हिंदू कहना चाहते हैं। मतलब आर्यसमाज भी हिंदू है, क्योंकि उनको भौगोलिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थ पर आर्यसमाज भी हिंदू लगता है। यह भी एक बहुत बड़ी गलती है। एक तो हिंदू यह गाली है। दूसरी बात यह नाम अगर भौगोलिक भी लिया जाये तो भी आज यह व्याख्या केवल चमड़ी बचाव वे के लिए हिंदू लोगों ने की है। मुसलमान, ईसाई भी इस देश में हैं। सामाजिक और सांस्कृतिक बात पर तो आर्यसमाज और उनका वैदिक धर्म सर्वथा भिन्न है। फिर आर्यसमाज हिंदू कैसे होगा ? तीसरी बात—ऋषि दयानन्द ने हिंदुओं को कहा कि तुम आर्य हो। परकीय आक्रमण के पहिले और बाद में भी हिंदू-हिंदू में लड़ाई हुई। भाई-भाई लड़े, जैन, बौद्ध सभी लड़ते रहे। इसका कारण क्या है ? किसी भी संघटन में उसके अंतर्गत लड़ाइयां नहीं होतीं। नहीं होनी चाहिए। अतः उनका यह विचार गलत है। ऐसा करेंगे तो कृतघ्नता होगी।

तीसरी बात उनकी बहुत ही अजब है। वे कहते हैं कि हम पहिले हिंदू हैं। बाद में आर्यसमाजी हैं। जैसे सिख, जैन, बौद्ध आदि हैं। उस दृष्टि से हम अल्पसंख्यक हैं। अतः संविधान की धारा ३० (६) धारा २४ के अंतर्गत संरक्षण लेना चाहते हैं। वाह रे ऋषि के भक्त ! संविधान को और प्रलोभन को देखकर ऋषि ने कार्य नहीं किया। उन्होंने तो शाश्वत सत्य ज्ञान लोगों के सामने रखा। यह भी विचार गलत और ऋषि दयानंद के उद्देश्य के विपरीत है।

आगे चलकर ऋषि दयानंद के ही कहने का आधार देकर वे हिंदू धर्म से आर्यसमाज धर्म (संप्रदाय) को अलग रखना चाहते हैं। यह भी प्राचार्य वाब्ले की गलती है। देखो, दयानंद ने केवल वैदिक धर्म के लिए कहा और हिंदू से अलग रखने को कहा। क्योंकि हिंदू धर्म विकृत है। उसके साथ चलोगे तो आप भी बिगड़ जाओगे।

प्राचार्य महोदय आर्यसमाज को भी गंदी संप्रदायवादी नाली में बहाना चाहते है। वही अल्पसंख्यक बहुसंख्यक की बातें, अधिक अधिकार और कम अधिकार की बातें करते हैं। जहां वर्णाश्रम व्यवस्था और धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष का वैदिक मार्ग दयानंद ने दुनिया के मानवों को बताया वहां ये विचार कैसे निभेंगे ?

वे कहते हैं कि आर्यसमाज के वेद अलग और हिंदू पौराणिकों के वेद अलग। दयानंद ने तो वेद सभी के एक ही बताये। फिर से सही अर्थ बताया। अर्थों में अन्तर है।

आर्यसमाज हिंदू का रक्षक रहा है, रहेगा, रहना चाहिए, ऐसा उनका मत है। यह भी गलत है। आर्यसमाज केवल सत्यज्ञान का—मानव कल्याण के मार्ग का रक्षक रहे, ऐसी दयानंद की इच्छा थी। पर आप जैसे महानुभव वह भी नहीं याद कर रहे।

हिंदू को वे सनातन मानते हैं। वास्तविक सनातन धर्म तो वैदिक धर्म ही है। ऐसी एक नहीं, अनेक बातें श्री वाब्ले जी ने लोगों को भ्रम में डालने वाली लिखी हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दयानंद ने स्वयं कहा है कि 'अगर उन्नति चाहते हो तो आर्यसमाज के साथ मिलकर चलो अन्यथा कुछ हाथ नहीं लगेगा।' आपसी फूट और अज्ञान ही दुःखों का कारण है और आप उसे ही मान्यता देना चाहते हैं आर्यसमाज का विराट् स्वरूप छोटा करके विकृत करना चाहते हैं। आर्यसमाज का स्वरूप विराट् है। वह पूरे मानवमात्र के लिए है—विश्व के लिए है। अतः केवल राष्ट्र, केवल कुछ मतावलंबी लोगों की भलाई करना ही मुख्य उद्देश्य नहीं। पर व्यक्ति, कुटुम्ब, समाज, देश और विश्व का कल्याण करने का उसका उद्देश्य है। सत्यज्ञान का प्रसार करना, वैदिक धर्म का प्रसार करना है। कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम् यह उसका नारा है—उद्देश्य है।

वैदिक धर्म और आर्यसमाज निश्चित रूप से अलग हैं। मतों की,—संप्रदाय की तुलना धर्म के साथ नहीं की जा सकती। आर्यसमाज दुनिया में एक ईश्वर, एक धर्म, एक भाषा, एक विचार, एक आचार, एक संस्कृति लाना चाहता है। यही दयानंद का उद्देश्य है। पर हम नहीं कर पा रहे। हम में तप नहीं है। हम भारतीय हैं देश की भी सभी समस्याएं केवल आर्यसमाज हल कर सकता है। वह भी दयानंद के सत्यज्ञान के आधार पर, वेद के आधार पर। वैदिक सिद्धांत शाश्वत हैं। दुनिया सभी मतों को देखकर विज्ञान के आधार पर शाश्वत सत्य की ओर जा रही है। ऐसे समय पर संकीर्ण बन जाना बहुत बड़ी गलती होगी। वेद में विश्वास हो, परमात्मा में विश्वास हो तो उनकी व्यवस्था में भी विश्वास होना चाहिए। आप तो मत-मतांतरों के विचार में विश्वास रख रहे हैं। वेद कहता है "नान्यः पन्थाः" दूसरा कोई रास्ता नहीं। सत्यज्ञान के रास्ते पर ही चलना है। बताना है। यही काम आर्यसमाज को करना चाहिए। सभी यानंद के सेवक इसपर गहराई से सोचें। परमात्मा सभी को सद्बुद्धि और सत्यज्ञान के रास्ते पर चलने की हिम्मत दे।

जनं बिभ्रती बहुधा विवाचसं,

नाना धर्माणं पृथिवी यथौकसम्।

सहस्रं धारा द्रविणस्य मे दुहां

ध्रुवेव धेनु-रनपस्फुरन्ती।

अथर्व० १२/१/४५

विविध वेश भाषाओं से शोभित रहता देश हमारा।
नानाविध धर्मों विश्वासों, की बहती है पावन धारा।
सभी देवता पुण्य भूमि की, गोद सम्पदा से भरते हैं।
सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र गगन के, माता का अर्चन करते हैं।

—सत्यकाम विद्यालंकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नेविनसन : ध्येयनिष्ठ पत्रकार

—धर्मपाल शर्मा

आखिर तुमने इस बार फिर त्यागपत्र दे दिया ? इंग्लैंड के प्रख्यात मानवतावादी पत्रकार एच० डब्ल्यू० नेविनसन से उसके पत्रकार मित्र ने पूछा । उसने व्यग्रतापूर्वक कहा, "क्या जीवनभर तुम अपने सिद्धान्तों के लिये दरदर भटकते ही रहोगे ?" नेविनसन ने मुस्करा कर उत्तर दिया "भई, चुप रहना मेरे लिए मुश्किल है, सिद्धांत के सामने अपनी वाणी को रोकना मेरे लिए मृत्यु के समान है । और हां," नेविनसन ने गम्भीरता से कहा, "मेरा समय हो गया है, मुझे महिला मताधिकार सम्मेलन की मीटिंग में जाना है ।"

सभा स्थल महिलाओं से भरा हुआ था। इसमें विशेष आमंत्रित इंग्लैंड के मन्त्री लायड जार्ज जैसे ही बोलने के लिए खड़े हुए कि महिलाओं के लिए मताधिकार मांगने वाली महिलाएं खड़ी हो गयीं। कहीं से एक स्वर उभरा, "हमें ठोस काम चाहिए, कोरे आश्वासन नहीं।" फिर क्या था, चारों ओर से शोर मच गया । प्रवन्धकों (पुलिस) ने महिलाओं को पकड़-पकड़ कर बाहर फेंकना शुरू किया । भला निर्भय नेविनसन कैसे चुप रह सकते थे । वे उठे खड़े हुए और बोले, "मि० लायड जार्ज, क्या इस बार फिर बेरहमी से कार्रवाई की जायेगी ?" बात यह थी कि इससे पहले भी महिला मताधिकारों की मांग करने वाली महिलाओं को लायड जार्ज ने एक मीटिंग में से जबरदस्ती उठवाकर बाहर फिकवा दिया था। नेविनसन तब तक इस अन्याय के विरुद्ध चिल्लाते रहे जब तक उन्हें मारते-मारते बेहोश करके सड़क पर न फेंक दिया गया। होश आने के बाद घर पहुंचे तो नेविनसन को पत्र के संपादक ए० जी० गार्डिनर द्वारा नौकरी से निलम्बन का आदेश मिला । अगले दिन नेविनसन ने जब अपने पत्र 'डेली न्यूज' में ही महिला मताधिकार के विरुद्ध अग्रलेख देखा तो वे क्षुब्ध हो उठे और तुरन्त त्यागपत्र लिखकर भेज दिया । अब सिद्धांतवादी नेविनसन के सामने फिर भयंकर अनिश्चितता आ खड़ी हुई। आदर्शवादी नेविनसन फिर भूख और अभाव से लड़ते रहे, लेकिन जब एक दिन उन्हें समाचार मिला कि महिलाओं को मताधिकार मिल गया है तो उनकी प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। इसका सबसे बड़ा श्रेय नेविनसन को ही दिया गया, महिलाओं के द्वारा विशाल सम्मेलन में उन्हें हार्दिक धन्यवाद के साथ ही २८० पौंड की थैली भेंट की गयी ।

उस दिन नेविनसन ने अपनी डायरी में लिखा था, "अन्याय के विरुद्ध सफलता के चन्द क्षणों की प्रसन्नता कितना बड़ा पुरस्कार होती है । क्या ही अच्छा होता कि सफलता के महोत्सव के इन क्षणों में मेरे जीवन का अवसान हो जाता । मैं एक विजयी योद्धा के रूप में इस धरती से चला जाता । काश, मृत्यु के लिए व्यक्ति उचित अवसर चुन सकने में समर्थ हो पाता ।" नेविनसन की यह आकांक्षा ध्येय के साथ एकाकार होने की ही परिचायक थी । वह आदर्शों के लिए जिया, लेकिन उसकी कामना थी कि वह मृत्यु का आलिंगन भी विजयी योद्धा की भांति ही करे—जीवन और मृत्यु के बीच अकर्मण्यता का कोई क्षण उसे स्वीकार न था ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हम मुरादाबाद व देश भर में मुस्लिम विश्वविद्यालय नहीं बनने देंगे

प्रधानमंत्री अपने अधिकार का प्रयोग कर साम्प्रदायिकता के विषवृक्ष जमने से पहले ही रोकें

भारत के हिन्दुओं को संगठित करने के लिए राजधानी में विशाल हिन्दू सम्मेलन आयोजित किया जाएगा ।

सभी देशभक्तों का सहयोग व आशीर्वाद अपेक्षित है ।

(प्रो०) रामसिंह — संरक्षक

वेदभिक्षुः — अध्यक्ष

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ओमप्रकाश त्यागी

....और पादरी भाग गया !

छोटा नागपुर के सघन जंगल में स्थित एक छोटे-से गांव में एक दिन एक विदेशी ईसाई मिशनरी (पादरी) अपनी मोटर लेकर पहुंचा। मोटर और गोरी चमड़ी वाले पादरी को देखकर बेचारे निर्धन, अपढ़ तथा भोले वनवासी घबरा गये और डर कर इधर-उधर भागने लगे। स्त्रियां तो इतनी भयभीत हो गईं कि वे अपने बच्चों को लेकर अपने झोंपड़ों में घुस गईं या झाड़ियों में जा छिपीं। परन्तु उस गांव में बिरसा और रोहन नामक दो ऐसे नवयुवक भी थे जो पादरियों को पहिचानते और रांची में बहुत दिन तक नौकरी करने के कारण इनकी गतिविधियों से भी परिचित थे और साथ ही उन्हें अपने आर्य (हिन्दू) धर्म का भी ज्ञान था। ईसाइयों के धर्म-ग्रंथ बाइबिल को भी उन्होंने पढ़ा था, क्योंकि प्रारम्भ में वे ईसाइयों के चक्कर में आकर कई वर्ष तक ईसाई रह चुके थे और उस बीच में उन्हें बाइबिल पढ़ने का अवसर मिला था।

पादरी के मोटर से उतरते ही दोनों नवयुवक उनके पास गये और अपने गाँव के निवासियों को भी उनसे न डरने को कहा। दोनों नवयुवकों को पादरियों के पास प्रेमपूर्वक बातें करते देख गांव वालों का भी डर दूर हो गया और वे धीरे-धीरे उनके पास आकर जमा हो गये। गाँव वालों के पास आ जाने पर पादरी ने सर्वप्रथम छोटे बच्चों को लेमनजूस की गोलियाँ दी, जिन्हें पाकर वे बड़े ही प्रसन्न हुए। तत्पश्चात् उसने गांव वालों को घी और दूध के डिब्बे और कपड़े दिए। इन्हें पाकर गांव के स्त्री-पुरुष बड़े ही प्रसन्न हुए और पादरी की सराहना करने लगे।

गाँव वालों को प्रसन्न देखकर पादरी ने कहा—हम तुम्हारी मदद करने अमरीका से आया है। हम तुम्हारे गाँव में स्कूल बनायेगा, अस्पताल बनायेगा और तुम्हारी सहायता करेगा। तुम को धर्म की बात बतायेगा। हम जो कुछ तुमको देता है वह सब 'प्रभु ईसा' की कृपा से देता है। उसी का तुमको जय मनाना चाहिए और उसी की शरण में आना चाहिए।

पादरी की चालाकी भरी बातों को सुनकर बिरसा और रोहन से न रहा गया और उन्होंने पादरी से बहस करना प्रारम्भ कर दिया जो निम्न प्रकार है—

बिरसा—पादरी साहब ! यह तो बतलाइये कि आप हम निर्धनों की सेवा करने आये हैं या हमारा धर्म छीनने आए हैं ? किसी को धोखा, लालच या भय दिखला कर उसका धर्म छीनना हमारी दृष्टि में महापाप है। धोखा देने वाले को हम जंगल वासी बड़ी घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

पादरी—हम तुमको धोखा नहीं देता। हम तुम्हारा कल्याण चाहता है। ईसा की शरण में आने से तुम्हारा कल्याण हो जायेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिरसा—यह 'ईसा' कौन है जिसकी शरण में आने को आप हमसे बोलते हैं ?

पादरी—'प्रभु ईसा' खुदा का इकलौता बेटा है जिसे उसने हमारी भलाई के लिए दुनियां में भेजा।

रोहन—ईसा खुदा का इकलौता बेटा था, इसका आपके पास क्या सबूत है ?

पादरी—वह बिना इन्सानी बाप क्वारी मरियम के पेट से पैदा हुआ था। यही सबसे बड़ा सबूत है।

रोहन—क्वारी लड़कियों के पेट से तो आज भी बहुत से बच्चे पैदा होते हैं। क्या वे भी सब खुदा के बेटे होते हैं ? हम वनवासी लोग तो ऐसी क्वारी लड़की और उसके बच्चे को बड़ी घृणा की दृष्टि से देखते हैं। इसलिए 'ईसा' की शरण में हम कदापि नहीं आ सकते।

पादरी—भाई, दूसरी क्वारी लड़कियों के पेट से पैदा होने वाले बच्चों का कोई न कोई इन्सानी बाप जरूर होता है, परन्तु ईसा का कोई इन्सानी बाप नहीं था।

बिरसा—ईसा का कोई इन्सानी बाप नहीं था, इसका आपके पास क्या प्रमाण है ?

पादरी—ऐसा बाइबिल में लिखा है।

बिरसा—बाइबिल में लिखा है इसलिए ईसा खुदा का बेटा हो गया, यह बात कोई बुद्धिमान् व्यक्ति नहीं मान सकता। परन्तु आपकी बाइबिल में तो कहीं भी यह नहीं लिखा कि मरियम खुदा से गर्भवती हुई। उसमें तो यह लिखा है कि 'पवित्र आत्मा' से गर्भवती हुई। अब आप यह बतलाएँ कि यह पवित्र आत्मा कौन था ?

(पादरी सिर खुजलाने लगा।)

रोहन—पादरी साहब ! ईसा मरियम के पेट में आने से खुदा का बेटा बना या उससे पहले भी था ?

पादरी—वह पहले भी था।

रोहन—पहले किस मां के पेट से ईश्वर ने उसे पैदा किया था और केवल बेटा ही क्यों पैदा किया, लड़की क्यों नहीं पैदा की ? क्या खुदा लड़की पैदा नहीं कर सका या उसे स्त्री जाति से घृणा थी ?

पादरी—भाई 'ईसा' रूहानी तौर पर हमेशा से खुदा के साथ है। वह कभी पैदा नहीं हुआ। दुनियां में आने के लिए ही उसे मरियम के पेट में आना पड़ा।

रोहन—जब पहले 'ईसा' कभी पैदा ही नहीं हुआ तो फिर वह खुदा का बेटा कैसे हुआ ? और जब खुदा ने केवल मिट्टी से ही आदम को पैदा कर दिया था तो क्या इसी प्रकार अपने बेटे को पैदा नहीं कर सकता था ?

(पादरी सिर खुजलाने लगा और चुप हो गया।)

बिरसा—पादरी साहब ! क्या आपका खुदा हम जैसे साधारण गृहस्थियों की भांति शादी करता है और बच्चे पैदा करता है ? दूसरों की क्वारी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कन्याओं के साथ बिना विवाह गर्भधारण कराना तो भले गृहस्थियों से भी अधिक पतित है ?

पादरी—भाई, खुदा की बातों को हम कैसे बता सकता है ?

रोहन—पादरी साहब ! खुदा ने 'ईसा' को सब की भलाई करने भेजा था या किसी एक देश व जाति की ?

पादरी—सबकी भलाई के लिए भेजा था।

रोहन—सबकी भलाई के लिए भेजा था तो फिर वह इस्राईल के कुछ मुट्ठी भर लोगों में ही प्रचार करके क्यों चला गया ? उसने खुदा की आज्ञा नहीं मानी या वह विरोधियों द्वारा फांसी पर चढ़ाए जाने से डर गया ?

(पादरी चुप हो गया और सिर खुजलाने लगा। गांव के स्त्री-पुरुष खिल-खिलाकर हँस पड़े।)

बिरसा—पादरी साहब ! ईसा का बाप खुदा जिन्दा है या मर गया ?

पादरी—खुदा कभी नहीं मरता इसलिए वह जिन्दा है।

बिरसा—तब तो पादरी साहब, हमारे लिए 'ईसा' को मानने का प्रश्न ही उपस्थित नहीं होता। क्योंकि हम ग्राम निवासी जब तक बाप जिन्दा रहता है तब तक उसके बेटे को मान्यता नहीं देते। इसलिए हम खुदा को मान सकते हैं, ईसा को नहीं।

पादरी—ईसा को नहीं मानोगे तो तुमको स्वर्ग का राज्य नहीं मिलेगा और तुम नरक में जाओगे।

बिरसा—ईसा के स्थान पर खुदा को मानने से हम नरक में कैसे जायेंगे ?

पादरी—देखो, हम सब पापी हैं। शैतान हम सबसे पाप कराता है। इसलिए जब तक ईसा प्रभु हमारे पापों को अपने ऊपर नहीं लेगा तब तक हमको स्वर्ग कैसे मिलेगा ?

रोहन—पादरी साहब ! यह शैतान कौन है जो हम से पाप कराता है और इसे किसने पदा किया है ?

पादरी—शैतान बुरी रूह है। उसे खुदा ने ही पैदा किया है।

रोहन—शतान को खुदा ने जान बूझकर हमसे पाप कराने के लिए पैदा किया है या वह भूल से पैदा हो गया ?

(पादरी इधर-उधर बगलें झांकने लगा।)

रोहन—तब तो आपका खुदा ही सब पापों को हमसे कराता है। यदि वह ऐसा नहीं चाहता तो वह शैतान को मार क्यों नहीं देता ? क्या पैदा होने के बाद शैतान अपने बाप खुदा से भी ज्यादा ताकतवर बन गया है जो उससे अब मरता नहीं है ?

पादरी—तुम फिजूल व बेकार सवाल करता है।

बिरसा—अच्छा पादरी साहब ! यदि आपके पास रोहन के प्रश्नों के उत्तर नहीं हैं तो इस बात का उत्तर दो कि ईसा की शरण में आने से हम अपने पापों से किस प्रकार मुक्त हो जायेंगे ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पादरी—ईसा हम सबके पापों के लिए सूली पर चढ़ा। उसने हमारे पापों की सजा अपने ऊपर ले ली। वह जब अपने भक्तों के पाप अपने ऊपर ले लेगा तो वे पापों से मुक्त होकर स्वर्ग प्राप्त कर लेंगे।

बिरसा—पादरी साहब ! पाप कोई करे और सजा कोई और भुगते। यह कहां का न्याय है ?

पादरी—खुदा के न्याय को तुम नहीं समझ सकता।

रोहन—पादरी साहब ! यदि हम ईश्वर पर विश्वास कर के अच्छे शुभ काम करें और ईसा को न मानें तो हम स्वर्ग में जायेंगे या नरक में ?

पादरी—तुम नरक में जाओगे।

रोहन—यदि कोई ईसा को मानने वाला नित्य पाप करे तो वह कहां जायेगा ?

पादरी—वह स्वर्ग में जायेगा, क्योंकि उसके पाप ईसा अपने ऊपर ले लेगा।

रोहन—तब तो ईसा को मानने का अर्थ पापों का लाइसैन्स लेना है। इस लाइसैन्स को प्राप्त करने के बाद जब ईसा के भक्तों को पाप करने में डर नहीं रहेगा तो क्या वे अपने पापों से इस दुनियाँ को नरक नहीं बना देंगे ? ऐसे लोग क्या स्वर्ग को भी नरक नहीं बना देंगे ?

पादरी—तुम बहुत बोलता है और हमको चुप करना माँगता है। हम तुम्हारा भला चाहता है।

बिरसा—पादरी साहब ! हम आपकी बात मानें या ईसा मसीह की।

पादरी—हम सब को ईसा प्रभु की ही बात माननी चाहिए।

बिरसा—आप कहते हैं कि ईसा हमारे पापों को अपने ऊपर ले लेगा और हमें स्वर्ग का राज्य दिला देगा, परन्तु ईसा ने कहा है कि सब अपने कर्मों के अनुसार ही फल पावेंगे।

पादरी—ईसा ने ऐसा कभी नहीं कहा, यदि ऐसा कहा है तो आप हमें उसका सबूत दीजिए।

बिरसा—आपकी बाइबिल में ही ऐसा लिखा है कि—

(क) "तुम धोखे में न पड़ो। ईश्वर ठट्ठे में नहीं उड़ाया जाता, क्योंकि मनुष्य जो बोयेगा वही काटेगा।" (गलेतों)

(२) "तू अपनी बातों ही के कारण निर्दोष और अपनी बातों ही के कारण दोषी ठहराया जायेगा।" (मत्ती अ० १२ आ० ३६-३७)

(३) "जो मुझे ऐ खुदावन्द, ऐ खुदावन्द कहते हैं उनमें से हर एक आकाश के साम्राज्य में न पहुंचेगा किन्तु वही जो मेरे आसमानी बाप की इच्छा पर चलता होगा।" "उस दिन बहुतेरे मुझसे कहेंगे, हे प्रभु ! हे प्रभु !! क्या हमने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की और तेरे नाम से दुष्ट आत्माओं को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काम नहीं किये । तब मैं उनसे खुलकर कह दूँगा कि मैंने तुमको कभी नहीं जाना, हे कुकर्म करने वाले ! मेरे पास से चले जाओ ।"

(मत्ती अ० ७ आ० २१-२४)

(४) "क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गीय पिता की इच्छा पर चले वही मेरा भाई, बहिन और माता है।" (मत्ती प० १२ आ० ५०)

(५) "बस, तुमने देख लिया कि मनुष्य केवल ईमान से नहीं अपितु शुभ कर्मों से रास्ताबाज बनता है।" (याकूब प० आ० २४)

(६) "इस प्रकार ईमान भी, यदि उसके साथ शुभ कर्म न हों तो वह अपनी सत्ता से मुर्दा है।" (याकूब प० २ आ० २६)

(७) "मुझे विश्वास है कि एक ही परमेश्वर है, तू अच्छा करता है, दुष्टात्मा भी विश्वास रखते और थरथराते हैं, किन्तु ऐ निकम्मे आदमी ! क्या तू यह भी नहीं जानता कि कर्म बिना विश्वास व्यर्थ है?"

(याकूब प० २ आ० १८-२०)

(८) "कि हाकिम धर्मात्माओं के नहीं पापियों के भय का कारण है। बस, यदि तू चाहे कि हकूमत से डरे तो नेक कर।" (रोमियो)

(९) "वह हर एक को उसके कामों के अनुसार बदला देगा।"

(रोमियो प० २ आ० ११-१२)

(१०) "क्योंकि परमेश्वर किसी का पक्ष नहीं करता। इसलिए कि जिन्होंने बिना व्यवस्था पाये पाप किया, वे बिना व्यवस्था के नाश भी होंगे और जिन्होंने व्यवस्था पाकर पाप किया उसका दण्ड व्यवस्था के अनुसार होगा।" (रोमियों प० २ आ० ११-१२)

रोहन—पादरी साहब ! बाइबिल में लिखित ईसा के इन उपदेशों के अनुसार तो आपकी यह बात बिल्कुल झूठ और धोखा है कि इस पर विश्वास लाने से हमारे पाप दूर हो जायेंगे और हमें मुक्ति मिल जायेगी।

(पादरी उत्तर न देकर इधर-उधर झांकने लगता है।)

बिरसा—पादरी साहब ! आपकी इन बातों से तो ऐसा मालूम पड़ता है कि आप खुदा और ईसा दोनों ही के शत्रु हैं और उन्हें बदनाम करते फिरते हैं।

पादरी—तुम लोग बाइबिल की बात को नहीं समझ सकता; हम ईसा के शत्रु नहीं भक्त हैं।

रोहन—पादरी साहब ! हमारे बहुत से लोग ऐसा मानते हैं कि भगवान् ने राम और कृष्ण के रूप में अवतार लिया और अपने ईश्वरीय धर्म का प्रचार किया तो फिर हम बाप के धर्म को मानें या बेटे के धर्म को ?

पादरी—तुम्हारा राम और कृष्ण भगवान् का अवतार नहीं था, तुम झूठ बोलता है। वो इन्सानी माँ बाप से पैदा हुआ और मर गया, फिर जिन्दा नहीं हुआ।

इसके विपरीत ईसा बिना इन्सानी बाप के पैदा हुआ और मर कर जी उठा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रोहन—जो ईसा अपने विरोधियों का सामना न कर सका और उनके द्वारा फांसी पर चढ़ा दिया गया और जो फांसी पर चढ़कर साधारण व्यक्तियों की तरह रोया, उसे हम खुदा का बेटा कैसे मानें ? इसके विपरीत भगवान् राम और कृष्ण ने अपने समस्त शत्रुओं पर विजय प्राप्त की। इसलिए इनका ही मानना हमारे लिये श्रेयस्कर है।

पादरी—देखो भाई ! ईसा प्रभु बिना इन्सानी बाप के पैदा हुआ, उसने मुर्दों को जिन्दा किया, अन्धों को आंखें दीं, लंगड़ों को टांगें दीं, बीमारों को अच्छा किया। तुम्हारे राम और कृष्ण ने क्या किया ?

रोहन—पादरी जी ! ये सब गप्पें हैं जो ईसा के नाम पर उनके आप जैसे स्वार्थान्ध चेलों ने बना ली हैं।

पादरी सिर खुजलाते हुए बोला—भाई ! अगर तुम ईसा को नहीं मानोगे तो हम तुम्हारी मदद नहीं करेगा।

बिरसा—पादरी जी ! आप घी दूध के डिब्बे देकर हम पर जबरदस्ती ईसा को लादना चाहते हो या हमें ईसा की अच्छाइयां बतला कर उसे हमसे मनवाना चाहते हो ?

पादरी—हम कहते हैं कि ईसा बहुत अच्छा था। तुम्हारा राम और कृष्ण भी अच्छा होगा लेकिन ईसा के समान अच्छा नहीं था। ईसा सबको सुखी बनाने आया था। वह राम और कृष्ण की तरह लड़ाई का हामी नहीं था।

बिरसा—आपकी बात सत्य मानें या बाइबिल की ?

पादरी—बाइबिल की बात ही सत्य माननी चाहिये।

बिरसा—बाइबिल में ईसा ने अपने लिए स्वयं इस प्रकार लिखा है—

"मैं पृथ्वी पर आग लगाने आया हूँ, और क्या चाहता हूँ केवल यह कि अभी सुलग जाती। मुझे तो एक बपतिस्मा लेना है और जब तक वह न हो ले तब तक मैं कैसी सकेती में रहूँगा ? क्या तुम समझते हो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं। मैं तुमसे कहता हूं, नहीं, वरन् अलग कराने आया हूं। क्योंकि अब से एक घर में पांच जन आपस में विरोध रखेंगे, तीन दो से और दो तीन से। पिता पुत्र से और पुत्र पिता से विरोध रखेगा। मां बेटी से और बेटी मां से, सास बहू से और बहू सास से विरोध रखेगी।

(लूका प० १२ आ० ४९ से ५३)

"यह न समझो कि मैं पृथ्वी पर मिलाप कराने आया हूं, मैं मिलाप कराने को नहीं, पर तलवार चलवाने आया हूँ। मैं तो आया हूं कि मनुष्य को उसके पिता से, बेटी को उसकी मां से और बहू को उसकी सास से अलग करा दूं।"

(मत्ती प० १० आ० ३४-३५)

बिरसा की बात सुनकर पादरी भौचक्का-सा रह गया और अपनी झेंप मिटाने के लिए बोला—देखो भाई ! यदि तुम लोग ईसा की शरण में आ जायगा तो तुमको फिर भूत-प्रेत नहीं पकड़ेगा।

बिरसा—आप जैसे पढ़े लिखे आदमी भी भूत प्रेत जैसी निराधार एवं मूर्खतापूर्ण बातों में विश्वास करते हैं ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पादरी—हम क्या सभी वनवासी भूत-प्रेत मानते हैं और भूत-प्रेत के कारण नाना प्रकार की बीमारियों में फंसे रहते हैं।

बिरसा—पादरी साहब ! बीमारियों के कारण भूत-प्रेत होते हैं ऐसा किसी डाक्टर के सामने मत कह दीजियेगा अन्यथा वह आपको पागल घोषित कर देगा।

पादरी—गांव के अनपढ़ लोगों की ओर इशारा करते हुए पादरी ने कहा—आप लोग बतलाओ कि भूत-प्रेत से बीमारी होती है या नहीं ?

गांव के लोग—हां, होती है।

बिरसा—यदि भूत-प्रेत से बीमारी होती है और ईसा की शरण में आने से भूत-प्रेत भाग जाता है तब तो पादरी साहब ईसाई लोग तो कभी बीमार नहीं होते होंगे।

(बिरसा की बात सुनकर पादरी सिर खुजलाने लगा और उसकी हालत देखकर गांव के लोग कहकहा लगाकर हँस पड़े।

बिरसा—पादरी जी ! जब ईसा की शरण में आने से ही भूत-प्रेत भाग जाते हैं और बीमारी दूर हो जाती है तो फिर आप लोग अस्पताल क्यों खोलते हैं और क्यों करोड़ों रुपया दवाइयों पर व्यय करते हैं।

(पादरी फिर सिर खुजलाने लगा और हँसी का कारण बना।)

बिरसा—पादरी जी ! क्या आप बतला सकते हैं कि ये भूत-प्रेत कैसे उत्पन्न होते है और कहां रहते हैं ?

पादरी—हम नहीं जानता।

रोहन—पादरी जी ! ईसाई लोग ही मरने के बाद भूत-प्रेत बनते होंगे। जब कब्र में पड़े-पड़े ये परेशान हो जाते होंगे या उनकी कब्र में वर्षा के दिनों में पानी भर जाता होगा तो ये वहां से निकल कर गाँवों में चले आते होंगे और लोगों को तंग करते होंगे। पादरी साहब—सुनो ! भूत-प्रेत कुछ नहीं, यह आपका पाखण्ड है। इस पाखण्ड से बचने के लिए संसार भर के ईसाइयों को आर्य (हिन्दू) बन जाना चाहिये। यही मुक्ति का मार्ग है।

पादरी—मरने पर ईसाई भूत-प्रेत बनता है, आर्य (हिन्दू) नहीं, इसका क्या प्रमाण है ?

रोहन—पादरी जी ! हमारा आर्य (हिन्दू) धर्म पुनर्जन्म में विश्वास रखता है। मरने के पश्चात् मनुष्य तुरन्त दूसरा जन्म धारण कर लेता है, परन्तु आप के धर्मानुसार ईसाई मर कर न्याय के दिन तक कब्र में सोता रहता है। इससे सिद्ध होता है कि ईसाई लोग ही भूत-प्रेत बन सकते हैं।

पादरी—तुम दोनों शैतान हो, हमारा सब बात काट देता है।

बिरसा—पादरी जी ! हमने यह सुना है कि आप लोग दूध और घी के डिब्बे का लालच देकर हम गरीब और अनपढ़ लोगों को जब ईसाई बना लेते हो तो फिर मिशन के नाम पर उनसे चन्दा लेते हो, उनसे गिरजा में बेगार लेते हो, उनके रीति-रिवाज, पर्व और त्यौहार बदलते हो, उनकी लड़कियों को शादी करवाने के नाम पर अपने यहाँ बुलाते हो, उनको प्रति रविवार गिरजाघर आने को विवश करते हो और न आने वाले को दण्डित करते हो और जाति बिरादरी का ध्यान किए बिना उनके नवयुवक-नवयुवतियों की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शादियां कराते हो। यदि ये बात सत्य हैं तो आप सेवा नहीं अपितु बड़ा भारी पाप कर रहे हो। आजादी की प्राप्ति के पश्चात् हमारे कन्धों पर से राजा-महाराजाओं की गुलामी का जुआ अभी उतरा नहीं कि आपने अपनी दासता की तलवार हमारे गले पर रख दी।

आपको विदित होना चाहिए कि हम वनवासी देखने में भले ही काले, निर्धन तथा अनपढ़ हैं, परन्तु हम चरित्रवान् और स्वतन्त्रताप्रिय हैं। हम किसी की दासता में रहना पाप समझते हैं। हमें अपना आर्य (हिन्दू) धर्म इसीलिए प्यारा है कि इसमें हमारे ऊपर किसी भी प्रकार की दासता नहीं है। हम अपने धर्म को अपनी इच्छानुसार मानने में पूर्ण स्वतंत्र हैं। हम चाहें तो मन्दिर में जा सकते हैं और चाहें तो घर में रहकर भी अपने भगवान् को याद कर सकते हैं। हमारा भगवान् ईसा की भांति केवल गिरजा में नहीं रहता अपितु वह सर्वत्र है।

पादरी जी ! हम आपके धर्म को बुरा नहीं कहते, परन्तु हमारे देश, काल, अवस्था के अनुसार हमारा देशीय धर्म और सभ्यता ही हमारे अनुकूल है। कोई भी विदेशी धर्म और सभ्यता हमारे अनुकूल नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त जब हमारे धर्म में ही संसार की समस्त श्रेष्ठ बातों का समावेश है तो फिर हम अन्य विदेशी धर्म को क्यों अपनायें।

पादरी—यदि आप ईसा की शरण में नहीं आवेंगे तो आप को हम दूध-घी का डिब्बा नहीं देगा, आपको अपने बैंकों से उधार धान और पैसा नहीं देगा और अपने स्कूलों तथा अस्पतालों से आपको लाभ नहीं पहुँचायेगा।

बिरसा—पादरी जी ! आपने हम आर्यों (हिन्दुओं) को पहचानने में भूल की है। हम लोग सोने, चांदी, मकान और दूकान को धर्म के सामने कुछ नहीं समझते। हम क्षत्रिय लोग हैं। महाराणा प्रताप के साथ मिलकर हमारे पूर्वज घर बार छोड़ कर जंगलों में मारे-मारे फिरे और घास की रोटियां खाईं परन्तु अकबर के प्रलोभनों और तलवारों के सम्मुख सिर नहीं झुकाया और अपने पूर्वजों के धर्म को नहीं छोड़ा।

पादरी—देखो ! तुम्हारे धर्म में छूतछात के नाम पर तुम लोगों को अछूत माना जाता है। तुम्हारे हाथ का कोई पानी नहीं पीता व खाना भी नहीं खाता। ऐसे धर्म में रहने से क्या लाभ है ? अगर तुम ईसाई बन जाओगे तो तुम्हें कोई अछूत नहीं मानेगा और तुम सबके समान हो जाओगे।

बिरसा—पादरी जी ! ये सामाजिक कुरीतियां सभी धर्मों में हैं परन्तु हमारी सरकार ने अब छूतछात को कानूनन बन्द कर दिया है और जो छूत-छात को मानेगा उसे दण्ड दिया जायेगा। इसके अतिरिक्त हमारे देश में आर्य-समाज जैसी संस्था गत १०० वर्षों से इस सामाजिक कुरीति को समाप्त करने का प्रयत्न कर रही है परन्तु जरा आप अपनी आस्तीन में तो मुँह डालिये। आपके ईसामसीह के शिष्य यूरोप, अमरीका और अफ्रीका में काले लोगों के साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं ?क्य यह बत सखे ।नहीं है कि वहां गोरे ईसाई काले लोगों के साथ बैठने, उठने, चलने, पढ़ने और शादी-विवाह आदि करने तक में घृणा करते हैं और काले लोग ईसाइयों के इस अत्याचार का लगातार विरोध करने पर मौत के घाट उतरते रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(बिरसा की बात सुनकर पादरी भौचक्का रह गया।)

रोहन—पादरी जी ! क्या यह सच नहीं है कि अपना धर्म और संस्कृति छोड़ ईसाई बनने पर हमें हमारे बच्चों को सरकार द्वारा दी जा रही विशेष सुविधायें व सहायता प्राप्त न हो सकेगी। यह सच है तो फिर इन दो चार घी-दूध के डिब्बों पर हम अपना इतना बड़ा लाभ क्यों छोड़ें ?

पादरी—तुम्हारी सरकार मालूम नहीं कब मदद करेगी, हम तो तुम्हारी अभी मदद करता है।

रोहन—पादरी जी ! हम हजारों वर्षों से इन जंगलों में नंगे और भूखे भी मस्त रहते आए हैं और हम अब इस जीवन के आदी भी हो गए हैं। इा लिए हमें यदि कुछ दिन और अपनी रक्षा करते हुए इसी प्रकार रहना पड़े तब हम सहर्ष रहेंगे परन्तु इस थोड़े से प्रलोभन के लिए हम आना और अपने परिवार का धर्म नहीं बिगाड़ेंगे।

पादरी—तुम हमारी बात समझता नहीं, हम तुमको पढ़ा-लिखा कर इन्सान बना देगा।

बिरसा—पादरी जी ! आपको विदित होना चाहिये कि हमारी सरकार ने हमें शिक्षा प्राप्त करना अनिवार्य कर दिया है। ऐसी स्थिति में हमारी सरकार ही हमारे लिए स्कूल खोल रही है। इसलिए इस प्रलोभन में भी हम नहीं फँसेंगे।

पादरी—ईसाई हो जाने से तुम्हारा कल्याण हो जायेगा।

रोहन—हमारा कल्याण हो या विनाश। जब आप हमारा धर्म, संस्कृति और सभ्यता छीन लेंगे और हमें बहुसंख्यक आर्य जाति में से निकालकर विदेशी धर्म, संस्कृति और सभ्यता को मानने वाले अल्पसंख्यक वर्ग में खड़ा कर देंगे तो फिर हमारा कल्याण कैसे होगा ?

पादरी—भाई, प्रतीत होता है कि आर्यसमाजियों ने तुम्हारा दिमाग खराब कर दिया है और वे तुम्हारा भला नहीं होने देंगे।

बिरसा—पादरी जी ! सौभाग्य से आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द की विचारधारा ने हमारी आँखें खोल दी हैं और अब आप इन जंगलों में हमारे निर्धन, भोले तथा अनपढ़ भाइयों को लोभ-लालच देकर उनका धर्म न छीन सकोगे और हमारे ही देश के विरुद्ध यहां विदेशों के पंचमांगी दस्ते पैदा न कर सकोगे। आप भारत में सेवा करने नहीं आए, अपितु इंग्लैंड, अमरीका आदि देशों से प्राप्त करोड़ों रुपयों के बल पर हमें खरीदने आए हो और पाकिस्तान की भांति ईसास्थान बनाने आए हो। आप द्वारा बनाये गये ईसाइयों की स्वतन्त्र नागालैंड और झारखण्ड प्रांत की मांग इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि आप हमारे सेवक नहीं—भक्षक हैं।

पादरी—हम समझ गया कि अब हमारी दाल यहां नहीं गलेगी।

ऐसा कहकर विदेशी ईसाई मिशनरी वहां से भाग गया और वह गांव उसके चंगुल में आने से बच गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप ही के पत्र

अग्निवेश उत्तर दें !

महोदय,

पिछले दिनों एक पुस्तिका मेरे देखने में आई। नाम है 'आर्य समाज क्या करे ? किधर जाये ? लेखक हैं स्वामी अग्निवेश जी। इस पुस्तिका के माध्यम से अग्निवेश जी ने आर्यसमाज को नई दिशा देने का प्रयत्न किया है। उन्होंने आर्यसमाज से नया मार्ग अपनाने को कहा है। 'जन-ज्ञान' के पाठक स्वामी जी से परिचित हैं। युवावस्था में उन्होंने जो त्याग किया, उसे सब जानते हैं। कुछ वर्ष पूर्व उन्होंने आर्यसभा की स्थापना करके यह आन्दोलन चलाया था कि आर्यसमाज खुलकर राजनैतिक हलचलों में भाग ले, चुनाव में अपने उम्मीदवार खड़े करे और आर्य राष्ट्र स्थापित करने का प्रयत्न करे। उन्होंने अपना यह प्रयोग हरियाणा से प्रारम्भ किया था। आर्य वीर दल पहले से विद्यमान था, फिर भी उन्होंने आर्य युवक परिषद् स्थापित की। मराठ-वाड़ा में भी उनका काफी बोलबाला था। यहां से उन्हें अनेक जीवनदानी युवक मिले। लाखों रुपये मिले। रुपयों की गड्डियों की गड्डियां उन्हें अर्पित की गईं। इस सब धन का क्या हुआ, हमें पता नहीं। इतना पता है कि बात बनी नहीं। हां, आर्यसमाज में फूट अवश्य पड़ी—भेदभाव अवश्य बढ़ा। फलस्वरूप उनकी आवाज क्षीण होती गई।

पिछले दिनों उन्होंने मराठवाड़ा का दौरा किया। अब वे एक बार फिर राजनैतिक हलचलों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहते हैं। वे वोटों की राज-नीति चलाना और उसके लिए आर्यसमाज का इस्तेमाल करना चाहते हैं। इसी संदर्भ में उन्होंने उक्त पुस्तिका लिखी है। उनकी सलाह है कि आर्य-समाज नये सिरे से चिन्तन करे और नई दिशा अपनाये। सिद्धान्तों की युगा-नुकूल नई व्याख्या करे। वे आर्यसमाज को उन उद्देश्यों के प्रतिकूल मार्ग पर ले जाना चाहते हैं, जिनके लिए महान् मेधावी संन्यासी दयानन्द ने इसकी स्थापना की थी। वे वैदिक सिद्धान्तों को तोड़-मरोड़कर जनता के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहते हैं। वे चाहते हैं कि आज के भौतिकतावादी संसार में वैदिक धर्म और आर्यसमाज का रुख भी भौतिकतावादी हो। दूसरे शब्दों में वे प्रेम, दया और सहिष्णुता के स्थान पर वर्ग संघर्ष और वर्ग विद्वेष का प्रचार करना चाहते हैं।

वैदिक धर्म आत्मप्रधान है। अग्निवेश जी का विचार है कि आत्मा की प्रधानता के कारण आम लोग वैदिक धर्म की ओर आकृष्ट नहीं होते, इसलिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाश्चात्य सिद्धान्तों का अनुकरण करते हुए हमें वैदिक धर्म को अर्थप्रधान बनाना चाहिए। वे वैदिक सिद्धान्तों में से भी सोशलिज्म और कम्युनिज्म ढूंढ़ निकालते हैं। यह पश्चिम का अन्धानुकरण है। संसार भोगवाद और भौतिकता से ऊबकर त्यागवाद और अध्यात्मवाद की ओर आ रहा है। लेकिन अग्निवेश जी वैदिक सिद्धान्तों को तोड़-मरोड़कर जनता के सामने रखते हैं, ताकि वोट बटोरे जा सकें। क्या इससे लोगों का कल्याण होगा? कदापि नहीं।

उन्होंने अपनी पुस्तक में नये चिन्तन और नई दिशा की बात की है। हमारा निवेदन यह है कि शाश्वत सिद्धान्तों के पालन में दिशापरिवर्तन नहीं होता। अग्निवेश जी केवल राष्ट्र के बारे में सोचते हैं, जब कि आर्य समाज का ध्येय है कृण्वन्तो विश्वमार्यम्। वे चाहते हैं कि आर्यसमाज आर्य समाजवाद (वैदिक समाजवाद) की युगानुकूल व्याख्या करे। लेकिन वैदिक सिद्धान्त तो शाश्वत हैं—सब युगों के लिए हैं। उनमें परिवर्तन की आवश्यकता नहीं। हमारा विश्वास समाजवाद में नहीं, प्रत्येक व्यक्ति के विकास में है। हम सोशलिज्म और कम्युनिज्म को गलत थ्योरी मानते हैं। आर्यसमाज उन्हें क्यों अपनाये? स्वामी जी का विचार है कि आर्यसमाज अपने नियमों में परिवर्तन करके सच्चे और ईमानदार राष्ट्रसेवी मुसलमानों को भी अपने संगठन में शामिल करे और उन्हें सम्मानित करे। हमारे विचार में आर्यसमाज की स्थापना उन विचारों के प्रचार के लिए हुई है, जिनसे मानवमात्र का कल्याण हो। इसलिए आर्यसमाज का सदस्य बनने के लिए केवल राष्ट्रसेवी होना काफी नहीं, वैदिक धर्म और वैदिक सिद्धान्तों पर विश्वास करना भी आवश्यक है। सदाचार आर्यसमाज की सदस्यता की आवश्यक शर्त है। इसके विपरीत अग्निवेश जी चाहते हैं कि राष्ट्रसेवी अपने-अपने सम्प्रदायों के विश्वास को कायम रखते हुए भी आर्यसमाज में प्रवेश पा सकें। राष्ट्र की सेवा तो सब करना चाहते हैं, किन्तु यदि वे आर्यसमाज के सिद्धान्तों को नहीं मानते, तो आर्यसमाज में प्रवेश के अधिकारी नहीं। जहां तक ईमानदार होने की बात है, इसका फैसला कौन करेगा? अग्निवेश जी चाहते हैं कि आर्यसमाज की सदस्यता की कसौटी यह हो कि सम्बन्धित व्यक्ति आर्य समाज में आये-जाये और उसके प्रचार-प्रसार के लिए कार्य करे। मतलब यह कि अग्निवेश जी के लिए सदाचार का कोई मूल्य नहीं। सिद्धांतों की कोई आवश्यकता नहीं। वे केवल संगठन चाहते हैं। संगठन तो झूठे और चरित्रहीन लोगों का भी हो सकता है। लेकिन उससे कल्याण सम्भव नहीं। आज की राजनीति तो संगठन को ही प्रधानता देती है। आज के राजनैतिक नेताओं को जनता की चिन्ता नहीं, उन्हें तो वोट बटोरने की चिन्ता है। अग्निवेश जी ऐसी ही राजनीति चलाना चाहते हैं। इससे किसी का भी कल्याण नहीं होगा। आर्यसमाज को वोट नहीं चाहिये; वह सन्मार्ग पर चलेगा। अग्निवेश जी की आर्य संस्कृति में भी श्रद्धा नहीं। वे लिखते हैं कि "उन्हें शुद्ध करने की, नाम बदलने की और चोटी-जनेऊ देने की प्रथा बन्द करनी चाहिए।" इस पर विद्वान् ही विचार करके सही फैसला दे सकते हैं। सारे सिद्धान्त और चिह्न मानव का संस्कार करने के लिए हैं। अग्निवेश जी इन सबको समाप्त करना चाहते हैं। वे तो आर्यसमाज को ही समाप्त करना चाहते हैं। इससे वोट तो मिल सकते हैं, लेकिन मानव जाति का कल्याण नहीं होगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अग्निवेश जी कहते हैं कि स्कूल, कॉलेज, संस्था छोड़कर पत्रिका संचालन को सबसे अधिक व्यापक बनाना चाहिए। मानवमात्र का चारित्र्य बनता है संस्कार और शिक्षा से। इतना ठोस कार्य छोड़कर पत्रिका चलाना चाहते हैं। यह भी वोट राजनीति है।

उनकी दृष्टि में आर्यसमाज को आर्थिक समस्या हल करने का भी प्रयत्न करना चाहिए। कैसे ? भूखे, नंगे, शोषित को संघटित करके शोषक वर्ग के विरोध में आन्दोलन करने में लगाना चाहते हैं। यह भी साम्यवाद की नकल है और वोट राजनीति है।

ऋषि दयानन्द, वेदशास्त्र सभी कहते हैं कि समस्या तभी मिटेगी, जब उसकी जड़ को उखाड़ दिया जाये। पर अग्निवेश जी सभी कुछ छोड़कर केवल वोट राजनीति चलाना चाहते हैं। आर्यसमाज प्रेम और सद्भावना बढ़ाना चाहता है। गरीब और अमीर में प्रेम, दया, स्नेह देखना चाहता है। यह होगा कब ? जब सभी ज्ञानी, त्यागी, मानवतावादी और आध्यात्मिक बनेंगे।

उनका कहना है कि अब गुरुकुल या स्कूल बंद करके आर्यसमाज केवल प्रशिक्षण केन्द्र चलाए और उसमें कार्यकर्ता तैयार करे। यह भी वोट राजनीति है। इसमें लोगों को हित का सवाल ही नहीं।

शिक्षा ही एक साधन है, जिससे कुछ लोगों का कल्याण हो सकता है। उसके लिए अच्छे शिक्षक, साधु, संन्यासी, उपदेशक होने चाहिए, न कि कार्यकर्ता। लेकिन अग्निवेश जी कहते हैं कि कार्यकर्ता और आर्यसमाज—ये सभी उत्पादक बनें। कार्यकर्ता कुछ शिल्पकला जाने ओर उत्पादन करे। उसके विक्रय का प्रबन्ध संगठन आर्यसमाज करे। वे ज्ञानदान का, उपदेश का काम छोड़कर व्यापार करने की प्रेरणा देते हैं। यह ऋषि दयानन्द के उद्देश्य, सिद्धान्त और नियम के विपरीत है। इससे भी मानव का कल्याण नहीं होगा। आर्यसमाज को सामूहिक सहकारी संघ (संघटन) बनाना चाहते हैं और उस पर तेल, घी आदि बेचने का उत्तरदायित्व डालना चाहते हैं।

वाह रे अग्निवेश जी ! वाह रे युवक हृदय सम्राट् !

धन्य हैं आपके विचार। मेहरबानी कर के ऋषि दयानन्द का उद्देश्य तो याद करो। मानव समस्या का हल क्या है ? यह तो देखो। आप केवल वोटों के लिए लोगों को क्यों बहकाना चाहते हैं ? क्यों सभी को खड्डे में डालना चाहते हो ?

आर्यसमाज अब आपके विचार से चलेगा तब उसके सदस्य शोषण नहीं करेंगे क्या ? फिर उसका क्या इलाज होगा ? गलत हैं ये सभी विचार। आर्यसमाज को तो केवल सत्यज्ञान और सदाचार, सत्याचरण दुनिया के सामने रखना है। उसमें ही दुनिया का—मानवमात्र का कल्याण है।

अग्निवेश जी के दिमाग में साम्यवाद और समाजवाद भरा है, जो केवल भौतिकवादी है। जड़वादी है। वैदिक सिद्धान्त चेतन और जड़ दोनों को मानते हैं पर चेतन को अधिक महत्त्व देते हैं। क्योंकि जड़ किसी पर अन्याय, शोषण, विषमता नहीं लाता। कुछ नहीं करता। करने वाला तो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चेतन है। उसे सुशिक्षित, सुसंस्कृत करे तो वही चेतन द्वेष के बदले प्रेम, शोषण के बदले दान, सहायता, विषमता के बदले सद्भाव रखता है। यह छोड़कर केवल कपोल कल्पनाएँ रखकर लोगों को, पीड़ितों को अपनी तरफ आकृष्ट करना चाहते हैं। अच्छे, बुरे, चारित्र्यवान्, चारित्र्यहीन, विद्वान्, मूर्ख—ये भेद तो रहेंगे। कर्मफल के सिद्धान्त के अनुसार फल मिलेगा। आज गरीब रहते हुए शराब पीते हैं। बीड़ी पीते हैं तो बीड़ी का, शराब का कारखाना समृद्ध नहीं होगा तो क्या होगा ? गरीबों को भड़काना—यह वोट राजनीति है। हाँ, गरीबों को व्यसनों से छुड़ाना, ज्ञान देना, यह उनके कल्याण का मार्ग है। वैदिक सिद्धांत वर्ग संघर्ष का नहीं। वर्ग तो जरूर रहेंगे पर उनमें प्रेम, समन्वय और समन्वय रहेगा। स्वामी अग्निवेश जी नौकर-मालिक में भेद आन्दोलन से नष्ट करना चाहते हैं, जो कोरी कल्पना-मात्र है।

कम्युनिस्ट को समूहनिष्ठ का पर्यायवाची मानने की सलाह देते हैं। यह नहीं किया, इसका आरोप भी लगाते हैं। इससे मालूम होता है। कि इनको वह बहुत पसन्द है। पर वैदिक सिद्धान्त के सामने सभी अधूरे हैं। यह सच है तो पूर्ण छोड़कर अपूर्ण के पीछे क्यों लगें ?

अग्निवेश जी को वैदिक सिद्धान्त का वैयक्तिक कल्याण में और उस से कुटुम्ब कल्याण, समाज कल्याण, राष्ट्र कल्याण और बाद में विश्व कल्याण का सूत्र मन्जूर नहीं। वे कहते हैं कि सहकारी होना चाहिए। इस देश में (Public Sector) और (Co-Operative) दोनों बदनाम हैं तो भी वे उसे प्राधान्य देना चाहते हैं। यह अन्धानुकरण है।

संपत्ति के बारे में भी वे यही कहते हैं कि बच्चे का अधिकार सम्पत्ति पर नहीं होना चाहिए। संपत्ति पर अधिकार राष्ट्र का होना चाहिए। यह वैदिक सिद्धातों के विपरीत है। इसमें कम्युनिज़्म की बू आती है।

आर्यसमाज के संध्या, हवन, सत्संग, उत्सव, प्रवचन आदि सभी से उनकी नाराजगी है। वे उपहास से लिखते हैं कि "लच्छेदार प्रवचनों", मनों घी और टनों लकड़ी फूंक देने का क्या लाभ ? आखिर आप आत्मोन्नति के लिए मार्ग तो बताते ?

वे कहते हैं कि साहित्य नहीं है। संकीर्णता छोड़कर साहित्य तैयार होना चाहिए। पर धार्मिक क्षेत्र में—मानव कल्याण के क्षेत्र में आर्यसमाज जितना प्रामाणिक सत्साहित्य किसी के भी पास नहीं। हाँ, लाभ उठाने का साहित्य आर्यसमाज के पास नही।

संन्यासी होते हुए भी विषय को और उसकी गहराई को न समझना—यह एक निन्दनीय बात है। पातंजल योग दर्शन पर तीन तीन घंटे के प्रवचन उनको तुच्छ लगते हैं। किसके मुकाबले ? ग्राम के रास्ते साफ करने के मुकाबले।

उनके शब्दों में "गांव का कूड़ा-कर्कट आर्यसमाज को निकालना चाहिए। पातंजल योग दर्शन के यम-नियमों में प्रथम नियम शौच की इससे अधिक प्रभावशाली व्याख्या तीन दिन योग पर भाषण देने से नहीं होगी।"

वाह रे संन्यासी ! पातंजल योग दर्शन के यम-नियम मानव शरीर की और उसके अंतःकरण की शुद्धता रखने के लिए हैं। वह शुद्ध-स्वच्छ हो गया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो बेड़ा पार हो गया। गांव का कचरा निकाल देने से अंतःकरण का कचरा कैसे निकलेगा ? ये सभी सस्ता माल दुनिया को देना चाहते हैं।

आर्यसमाज के प्रचार में वह मनोरंजन को—नाटक आदि को प्राधान्य देना चाहते हैं। ऋषि दयानन्द ने नाटक, नाच आदि का घोर विरोध किया। ये कहते हैं कि नाटक करो। आर्यसमाज को नाटक कम्पनी बनाना चाहते हैं। सबसे बड़ा मनोरंजन परमात्मा के ध्यान का है। यह भूलकर लोगों को बहिर्मुखी बनाना चाहते हैं। वे लोगों को आकृष्ट करने के लिए ऐसी सीख देते हैं। मैं समझता हूं कि इससे भी अधिक लोग आकर्षित होंगे यदि नाचने वाली औरतों और वेश्याओं के माध्यम से प्रचार हो। वाह रे संन्यासी ! वाह रे नेता !

आर्यसमाज को हर एक सम्प्रदाय के त्यौहार में शामिल होना—भाग लेना चाहिए। ऐसा उनका कहना है। यही उनकी नई दिशा है। आर्यसमाज संप्रदायों को खत्म कर के एक स्वस्थ मानव समाज की रचना चाहता है—यह भूल गये स्वामी जी। यह सिद्धान्त की बात नहीं, वोटों की राजनीति है।

ऐसी एक नहीं, अनेक बातें उन्होंने लिखी हैं।

आर्यसमाज की स्थापना तो महान् मेधावी संन्यासी ने की है। अपने मोक्ष का रास्ता छोड़कर मानवमात्र के कल्याण के लिए सोचें और यह समझ लें कि बीमारी, दुःख, शोषण, अन्याय आदि का अन्त और मानवमात्र का कल्याण सत्यज्ञान से ही होगा। इस सत्यज्ञान का स्रोत वेद है। पर वेद के नाम पर ऐसी ही विकृत मान्यताएं कर के आर्य लोगों के आचरण में दोष लाया गया उन्हें फिर से दूर करने के लिए ऋषि दयानन्द ने प्रयत्न किया। सिद्धान्तों पर पुस्तकें लिखीं। सत्यार्थ प्रकाश जैसा ग्रन्थ लिखा। आर्यसमाज जैसी संस्था की स्थापना की। सत्यज्ञान का प्रचार करने का और आचरण में लाने का काम आर्यसमाज करता है। हमें संसार का उपकार करना है। पर व्यक्तिगत उन्नति कर के कुटुंब, समाज, राष्ट्र—फिर संसार। यह है रास्ता।

आज आर्यसमाज में शिथिलता जरूर आई है पर सिद्धान्तों के कारण नहीं। हमारे आचरण, तप, त्याग की कमी से आई है। धर्म का श्रेष्ठ मार्ग योगाभ्यास है। हमने उस पर चलने का प्रयत्न कम किया। हमारे नेताओं ने राजनीति में प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष भाग लिया। सरकार हमारी हैं, यह समझकर चुप बैठे, विश्वास रखा। ये हैं उसके कारण।

तो आज आर्यसमाज को कमजोर से ताकतवर बनाना है, तो पहले आर्यसमाजी अपना सुधार करे और फिर प्रचार करे। दुनिया सत्य की ओर जा रही है। विज्ञान सत्य की खोज में काम कर रहा है और पाश्चात्य देश आज आध्यात्मिकता को, योग विद्या को, यज्ञ को मानने को विवश हो गये हैं। तड़प रहे है। अमेरिका में अग्निहोत्र विद्यापीठ की स्थापना हुई। आनंद के रास्ते के लिए मानवता तड़प रही है। ऐसे समय में हमारे स्वामी अग्निवेश सत्य का प्रचार करना छोड़कर व्यापार करने की प्रेरणा देते हैं। यह एक बहुत बड़ी भूल है। इसमें आर्यसमाज का श्रेष्ठत्व खत्म होगा। मानव कल्याण तो दूर रहा, वह स्वयं भी नहीं टिकेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी धर्म प्रेमी लोगों से मेरी नम्र प्रार्थना है कि ऋषि के विचार में परिवर्तन करने का प्रयास न करें। उन पर चलने का प्रयास करें। उनकी बुद्धिमत्ता कुछ और थी। हम समझेंगे नहीं और जो सत्यज्ञान सामने आया उसे भी विकृत करके रख देंगे और फिर से दुःख के सागर में गिरेंगे। परमात्मा सबको सद्बुद्धि दे। जिन को आर्यसमाज की दिशा मान्य नहीं, वे आर्यसमाज छोड़ दें। इसे विकृत न करें।

परली-वैजनाथ

(डाक्टर) सु. व. काले
वैद्यनाथ कालेज

अ. भा. हिन्दू रक्षा समिति की मांगें

१. मजहब के आधार पर पुलिस सेना व सरकारी विभागों में आरक्षण की मांग को किसी भी स्थिति में स्वीकार न किया जाये।

२. कश्मीर, असम व देश के सभी भागों से पाकिस्तानी घुसपैठियों व सेवा की आड़ में राजनैतिक देशद्रोहपूर्ण षड्यन्त्रों में लगे सभी विदेशी पादरियों को तुरन्त भारत से निकाला जाये।

३. अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाये।

४. भारत के किसी भी भाग में मुस्लिम विश्वविद्यालय खोलने की अनुमति न दी जाये और अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान किया जाये।

५. अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द हो और तुष्टीकरण की नीति समाप्त की जाये।

६. भारत के सभी नागरिकों के लिये समान सिविल कानून, नियम और अधिकार बनाये जायें।

७. कश्मीर से धारा ३७० तुरन्त हटायी जाये और वहां भारत के नागरिकों को बसाने की व्यवस्था हो।

८. जो भारत को अपना देश नहीं मानते उन को वोट देने का अधिकार न दिया जाये। प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथपत्र भरने का नियम बनाया जाये जिस में वह स्वीकार करे कि मैं भारत को अपनी मातृभूमि स्वीकार करता हूँ और मेरी प्रथम निष्ठा भारत राष्ट्र के प्रति रहेगी।

९. मजहब के नाम पर अधिकार मांगने व दंगा करने वालों को पूरी शक्ति से कुचल दिया जाये।

१०. गोहत्या का कलंक तुरन्त समाप्त किया जाये।

आप भी अपने नगर में हिन्दू रक्षा समिति स्थापित कर इन मांगों को भारत सरकार को भेजें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति

प्रधान कार्यालय : १५६७, हरध्यान सिंह मार्ग,
नई दिल्ली-११०००५

सदस्यता पत्र

मैंने हिन्दू रक्षा समिति के उद्देश्यों को भली भांति समझ लिया है। मैं इसके लक्ष्य से सहमत होकर इसका सदस्य बनना स्वीकार करता हूं।

सदस्यता शुल्क रु० दे रहा हूं। मुझसे इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए जो भी संभव होगा, करता रहूँगा।

हस्ताक्षर..........................

नाम व पूरा पता..

....

हिन्दू रक्षा समिति के उद्देश्य

१. भारत राष्ट्र की स्वतन्त्रता, सुरक्षा, एकता और संस्कृति को हानि पहुंचाने वाले तत्त्वों का —

२. मजहब के आधार पर आरक्षण, विशेष अधिकार व विधि-नियम मांगने की विघटनकारी प्रवृत्ति का —

३. विदेशी और देशद्रोही शक्तियों के राष्ट्रघातक षड्यंत्रों का —

४. भारत के नागरिकों के लिए पृथक्-पृथक् राज्य, नियम और अधिकारों का—

५. सांप्रदायिकता, जातीयता, प्रान्तीयता व चरित्र भ्रष्ट करने वाली विदेशी विचार धाराओं का

संगठित विरोध कर भारत की रक्षा करना हिन्दू रक्षा समिति का उद्देश्य है।

सदस्यता :

१. ५००१) वार्षिक देने वाले "संचालक सदस्य" होंगे।
२. १००१) वार्षिक देने वाले "संरक्षक सदस्य" होंगे।
३. ५०१) वार्षिक देने वाले "सहायक सदस्य" होंगे।
४. २५१) वार्षिक देने वाले "दाता सदस्य" होंगे।
५. १०१) वार्षिक देने वाले "पोषक सदस्य" होंगे।
६. ५१) वार्षिक देने वाले "विशिष्ट सदस्य" होंगे।
७. २५) वार्षिक देने वाले "सहयोगी सदस्य" होंगे।
८. १२) वार्षिक देने वाले "प्राथमिक सदस्य" होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अगले पृष्ठों पर पढ़ें

अगस्त १९४७ में
लिखा एक अमर लेख

जिसे हिन्दी मिलाप के संपादक व ट्रिब्यून के पत्रकार

श्री पं० आत्मस्वरूप शर्मा ने अपनें
हृदय की उभरती पीड़ा से लिखा था

● ● ●

कांग्रेस अब अपने को हिन्दू संस्था घोषित करे

● ● ●

यह आज के सन्दर्भ में भी उतना ही
जावन्त है जितना ३४ वर्ष पहले था

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सोचते हैं —यह क्या हो गया ? हम कहां से चले थे, किधर के लिए रवाना हुए थे और आ पहुंचे हैं—कहां। किसी की कल्पना में भी नहीं था कि हालात इतनी तेजी से बदल जाएंगे और अन्त में हम वही मूल आधार खो बैठेंगे, जिसके लिए हमने इतने भीषण तप किए, इतने भारी संग्राम का मार्ग काटा और संसार के किसी त्याग और बलिदान को अधिक न जाना। हमारा सारा श्रम बेकार रहा। हम अपने आपको तो "एक" क्या रख सकते थे—अपने प्यारे देश को भी एक न रख सके।

जब इस दशा का ध्यान आता है—तो तड़पा देने वाली वेदना होती है। पर, आज हालत उस सीमा तक आ पहुंची है कि जब हम चाहकर भी द्वार पर आई मुसीबत को टाल नहीं सकते। अब हमें संयुक्त भारत से हाथ धोना और भाई को भाई से जुदा देखना है ही — — चाहे हम इसे पसन्द करते हों या न।

वन्देमातरम् का वह गीत जो कभी हमारे हृदयों में विशेष प्रकार का उल्लास उत्पन्न करता था और जिसकी ध्वनि हमारी झुकी हुई गर्दनों को उंचा कर देती थी—आज काटने को आता है। यह गीत आज हम किसके लिए गाएं और किसे सुनाएं ? वह मां की मूर्ति ही अङ्गभंग दशा में दीख रही है, जिसकी अर्चना हम इतनी श्रद्धा और भक्ति से—देश प्रेम के अश्रु बहाते हुए करते थे। इकबाल का भले समयों में गाया हुआ कौमी तराना भी अब किसे आनन्द देगा ? "हिन्दुस्तान हमारा" कहां है और उसे किस मुंह से अब "सारे जहां से अच्छा" कहा जा सकता है ? देश-भक्ति के सारे सुपने हवा हो गए और हम अंग्रेज के हाथ का खिलौना बनकर अपना अस्तित्व खो बैठे।

हम जिस शोचनीय और प्रायः सर्वनाशकारी दशा को प्राप्त हो रहे हैं—उसका दायित्व किस पर है ? यह समय है कि सच्ची बातों को आज मुंह पर कह सुनाया जाए। हमें गर्व था कि कांग्रेस हमें राजनीतिक होड़ में बहुत आगे ले गई। उसने हमारे बच्चे बच्चे के भीतर स्वतन्त्र होने की लगन उत्पन्न कर दी। हमें दासत्व से निकालकर स्वतन्त्रता और आत्माभिमान का मार्ग दिखाया। गांधी जी के अहिंसा और सत्य के उपदेश ने हमें आध्यात्मिक शिक्षा में बहुत ऊंचा कर दिया और इसी कारण दूसरे देश भी हमारा सम्मान और आदर करने लगे। पर इस सारे लाभ का थोड़े से वर्षों में अन्त हो गया। देखें, तो चार करोड़ देशवासियों ने शेष ३६ करोड़ मनुष्यों की आवाज को दबाकर अपनी मनमानी करवा ली और हम असहाय खड़े निर्बलों की तरह झुकने के लिए विवश हो गए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कांग्रेस बड़ी शक्तिशालिनी है। उसमें बड़े बड़े कर्मवीर हैं, जो देश के लिए कष्ट उठाना साधारण सी बात समझते हैं और जिन्होंने अपनी आयु का बड़ा भाग देश प्रेम के निमित्त कारावास में व्यतीत किया है। उसके कर्णधार गांधी जी जैसे तपस्वी ही नहीं, पटेल और जवाहरलाल नेहरू जैसे नीतिज्ञ भी हैं। यह सब सत्य होते हुए भी हमें सारी स्थिति को "अन्तिम परिणाम" से जांचना है चाहे वह हमारे अनुकूल हो अथवा प्रतिकूल। क्या यह सच्चाई नहीं कि कांग्रेस अपने इतने वर्षों के दीर्घ संग्राम को केवल एक "जिद्द" की ओट में खो बैठी है कि वह चालीस करोड़ भारतीयों की संयुक्त संस्था है।

हमारे नेता कितने भी बड़े क्यों न हों और लोकमत की प्रस्तुति में सत्य बात कहना आज कितना भी कठिन क्यों न हो— हमें सत्य कहने से चूकना नहीं चाहिए। हमें जिस रसातल में पहुंचना था वहां तो हम पहुंच ही गए हैं—अब झूठी बातों से दिल बहलाना अनुचित ही नहीं अपितु महापाप है।

यह सत्य है कि अंग्रेजों का अपना लाभ इसी में था कि वे देश को बारूद से फाड़कर इसके टुकड़े-टुकड़े कर डालते, पर शासकों की इस कूटनीति के सम्मुख जिसका हमें भली प्रकार ज्ञान था, हमारी अपनी राजनीतिज्ञता, समझ-बूझ और चतुराई किस काम आई? हमारा आत्मिक बल भी हमारे किसी काम न आ सका। अंग्रेजी साम्राज्यवाद का गत इतिहास हमें भूला नहीं। हम जानते हैं ये लोग जहां-जहां भी रहे, इन्होंने बाँट और बंटवारों ही से अपना कार्य सिद्ध किया। वह कौन सा देश है, जिसमें अंग्रेज गया और उसे टुकड़े-टुकड़े नहीं किया? आयरलैंड, मिस्र और फिलिस्तीन का इतिहास हमारे सामने है। पर यह इतिहास भी अंग्रेज की चाल समझने में हमारी सहायता न कर पाया। हम अंग्रेज की नीति से तो हारे ही, उन देशवासियों की नीति से भी हार गए, जो दो जातियों की झूठी रट लगाकर एक काल्पनिक बात को मनवाने में सफल हो गए।

देशभक्ति के मार्ग में हमारी यह पराजय क्यों हुई? मैं कहता हूं—इसलिए कि हमने "एक सत्य" का आश्रय नहीं लिया। हम बराबर पैंतरे पर पैंतरा बदलते रहे केवल इस लोभ में कि सम्भवतः हम अपने उन भाइयों को साथ रख सकेंगे, जिन्हें आज हमारा भाई होने से भी इनकार है। हमारे विरोधियों को, जो देश बांटना चाहते थे, सफलता इस कारण हुई कि वे अपनी एक ही रट पर आरूढ़ रहे— चाहे वह झूठी रट थी और चाहे सच्ची। सन् १९४० में जब मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए पृथक् शासन का प्रस्ताव पास किया तो उस समय उनके प्रस्तावित राज की कोई रूप-रेखा नहीं थी और रूप-रेखा तो आज सात वर्ष के पश्चात् भी नहीं। पर बिना रूप-रेखा बनाए मुसलमानों ने अपना पृथक् राज स्थापित करने का स्वप्न साकार कर लिया।

हम जानते हैं सब मुसलमान पृथक् मुस्लिम-राज (जिसे हम पाकिस्तान कह रहे हैं) के पक्षपाती नहीं और इस मांग मे मुख्यतः और केवल वे चार पांच करोड़ मुसलमान ही शामिल हैं, जो प्रान्तीय बहु-संख्या रखते हैं। अल्प-संख्या वाले प्रान्तों के मुसलमानों की एक बहुत बड़ी संख्या निश्चित रूप से बंटवारे के पक्ष में नहीं। "दो जाति" का सिद्धान्त तो वहां ही चकनाचूर हो जाता है। पर "जिद्द" के सामने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन लोगों की, जिनमें मुसलमानों की एक भारी संख्या भी थी, कोई युक्ति न चल सकी। यह इसीलिए कि इन चार करोड़ लोगों का, जो अपने आपको जिन्ना साहब के हाथ में देकर निश्चिन्त हो गए थे, दृढ़ता से नेतृत्व किया गया। इन सात वर्षों में जिनमें मुसलमानों की पृथक् राज की मांग का खूब उपहास किया गया और सभी युक्तियों से यह सिद्ध करने का यत्न हुआ कि ऐसा पृथक्करण हो जाने पर भी टिकाऊ नहीं होगा, मुस्लिम लीग को अपने मूल प्रस्ताव में एक अक्षर भी इधर-उधर करने की आवश्यकता नहीं हुई। इसकी तुलना में कांग्रेस अपने मतों में आए दिन परिवर्तन करती रही।

उसने कभी आत्म-निर्णय के सिद्धान्त का आश्रय लेकर मुसलमानों को एक गलत मार्ग पर चलने के लिए प्रोत्साहित किया और कभी एक साम्प्रदायिक संस्था के साथ बात-चीत का मार्ग खोलकर राष्ट्रीयता की मिट्टी खराब की। यदि जवाहरलाल नेहरू, पटेल और राजेन्द्रप्रसाद आदि महान् नेता गांधी जी के अन्ध-विश्वासी भक्त न होते, तो बहुत सम्भव था कि उसकी ओर से मुसलमानों की एक मिथ्या मांग का दृढ़ता से विरोध किया जाता। पर हमारे नेताओं ने तो अपनी बाग-डोर पूर्ण रूप से गांधी जी के हाथ में दे डाली। इसलिए वे स्वतंत्र विचार रखते हुए भी, स्वतंत्र विचार रखने और उनके अनुसार क्रिया करने में असमर्थ रहे। यह मूल बोदा था कि मुसलमानों को "आत्म-निर्णय" का—देश को बरबाद कर आत्म-हत्या करने की सीमा तक भी पूर्ण अधिकार है।

आठ-नौ करोड़ मुसलमानों को ऐसा अधिकार है तो तीस करोड़ हिन्दुओं को कोई अधिकार क्यों नहीं यह साधारण सूझ की ऐसी अटल बात थी, जिससे कभी इनकार नहीं हो सकता था। पर कांग्रेस ने इस मोटी बात पर बल देना भी आवश्यक न समझा, केवल इस भय से कि कहीं उसका हिन्दू-संस्था होना सिद्ध न हो जाए। इसी भय ने सारा खेल चौपट कर दिया और देश की ऐसी बरबादी करवा दी, जिसकी पूर्ति आज प्रायः असम्भव है।

कांग्रेस जिस बात से भयभीत रही, वही बात करवाने वालों ने एक नहीं अनेक पहलुओं में प्रमाण को पहुंचा दी। आरम्भ इस प्रकार हुआ कि गान्धी जी मुस्लिम सम्प्रदायवादियों के सरदार जिन्ना के साथ इस भाव में बातचीत करने के लिए राजी हुए कि शायद प्रेम-प्रदर्शन से उनका मन पसीज सकेगा। गांधी जी प्रत्येक बार जिन्ना के मकान पर स्वयं पहुंचकर उनसे वार्तालाप करते रहे। उन्होंने इस प्रकार अपने हृदय की उच्चता प्रदर्शित की और यह मानने की बात है कि वे ऐसा कर संसार की दृष्टि में ऊंचा उठ गए। पर मित्र-भाव के इस प्रदर्शन को धीरे-धीरे राजनीतिक बातचीत का खुला मार्ग बना लिया गया और पीछे कांग्रेस और मुस्लिम लीग के मध्य समझौते की सब बातचीत बिना झिझक केवल इसी आधार पर होती रही कि कांग्रेस वाले हिन्दुओं के और मुस्लिम लीग वाले मुसलमानों के प्रतिनिधि हैं।

बनजाने से अथवा जाने से—यह तो परमात्मा ही जान सकता है—पर जिन्ना साहब बड़ी चालाकी से कांग्रेस को जो विशुद्ध राष्ट्रवादी होने की दावेदार थी, मुस्लिम लीग जैसी खुल्लम-खुल्ला सम्प्रदायवादी संस्था के साथ बातचीत करने के लिए अपने जाल में खींच ही लाए। क्या कांग्रेस ने कभी एक बार भी इनकार किया कि वह एक सम्प्रदायवादी संस्था के साथ बातचीत में पड़ने को तैयार नहीं?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसे ऐसा इनकार उचित था—यदि वह अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ होती। वह एक बार क्या फिसली, फिर फिसलती ही चली गई। यह एक मोटी प्रत्यक्ष बात है, जिसका औचित्य कांग्रेस आज किसी युक्ति से भी सिद्ध नहीं कर सकती। हमें कांग्रस वालों की उदारता यहां बहुत महंगी पड़ी और इसी क्रम में तीस करोड़ हिन्दू न केवल अपना अस्तित्व खो बैठे, वल्कि आज उनका अपना देश भी उनके हाथ से निकल गया।

हम यही तो बताना चाहते हैं कि मुस्लिम लीग अपने ध्येय में इसलिए सफल हुई कि वह एक—झूठी या सच्ची—बात पर आरूढ़ रहकर सात साल तक एक ही मार्ग पर चलती गई और अंत में उसकी अभिलाषा पूर्ण हुई। कांग्रस, हिन्दुओं की संस्था सिद्ध हो जाने पर भी इनकार करती गई, यहां तक कि उसने हिन्दुओं को मुसलमानों के हाथ वेच डाला—उनके प्रतिनिधि और ठेकेदार बनकर, पर इस चरम सीमा को पहुंच जाने पर भी उसे यह इकरार थोड़े ही हुआ कि वह हिन्दू वोटों की शक्ति से राजनीतिक क्षेत्र में लाई गई है और अब उसका धर्म है कि वह सर्व प्रथम अपने मतदाताओं के लाभों और हितों की रक्षा करे—कम-से-कम एक ऐसे मार्ग में, जिसमें साम्प्रदायिकता का नाम तक नहीं। कांग्रेस यदि अपने राष्ट्रीयता के सिद्धान्त से विचलित हुई और उसने फिरकापरस्तों के दल से साथ माथा जोड़ा, तो कम-से-कम उसे देश को एक रखने के विषय में तो दृढ़ रहना चाहिए था। वह डटी रहती कि उसे देश को टुकड़े-टुकड़े करना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं।

वर्तमान स्थिति को प्राप्त होने का मूल कारण यही है कि कांग्रेस की करनी और कहनी में भेद रहा। उसने राजनीति में प्रवेश किया और बल पकड़ा हिन्दुओं के सहारे, और शक्ति प्राप्त कर लेने के पश्चात् कहना शुरू कर दिया कि यह सबकी सांझी संस्था है। इसी का फल आज हिन्दू-मात्र को भुगतना पड़ा। कांग्रेस इतने बड़े साम्राज्य को तो नीचा दिखा सकी और उसने ऐसी परिस्थितियां उत्पन्न कर दीं जिनसे अंग्रेजों को देश छोड़ जाना पड़ा, पर कुछ ही करोड़ मुसलमानों को संभालने में वह बिलकुल असमर्थ रही और वस्तुतः उनके उपद्रवों ने ही उन्हें पाकिस्तान दिला दिया।

कांग्रेस की मुसलमानों को मनाने और उन्हें खुश रखने की नीति ने 'न्याय' का पल्ला थामे रखने की भी कभी परवा नहीं की, जिसका स्वतः परिणाम यह है कि मुसलमानों की हिन्दुओं को अधिक से अधिक निचोड़ने की आशा बराबर बढ़ती गई है। प्रान्तीय कांग्रेस सरकारों ने भी इस सम्बन्ध में कभी किसी दृढ़ नीति का प्रदर्शन नहीं किया। वल्कि सच्चाई यह है कि इन सरकारों ने अपने मार्ग से बाहर निकलकर भी संसार पर यह प्रभाव डालने का यत्न किया कि वे हिन्दुओं को केवल इसलिए दबाती रही हैं कि मुसलमानों को किसी प्रकार यह सोचने का अवसर न मिले कि वे हिन्दू बहुसंख्यक प्रान्तों में दुःखी हैं संयुक्त प्रान्तीय कांग्रेस सरकार का मुसलमानों को नौकरियों में उनकी जन-संख्या के अनुपात से कहीं अधिक भाग दे डालना भला क्या बताता है? क्या कोई उसे न्याय कह सकता है?

हम अन्तःकालीन केन्द्रीय सरकार पर ही इतना अभिमान करते हैं, जिसमें पं० जवाहरलाल नेहरू और सरदार पटेल जैसे चोटी के भारतीय नेता कार्य कर रहे हैं। इन महानुभावों की, इतनी बड़ी सरकार का इतना आवश्यक अङ्ग बन जाने पर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भी, कमाई क्या है ? देश में सब उपद्रव और अत्याचार इनकी आंखों के सामने हुए हैं। विदेशी विषयों में, एशिया के देशों का सम्मेलन बुलाकर तथा कुछ भारतीय राजदूत अन्य देशों को भेजकर, थोड़ा बहुत कार्य अवश्य हुआ है। पर हम घरेलू लड़ाइयों से विदेशियों के सम्मुख अपना मुख काला कर, देशदूत बाहर भेजकर उसे उज्ज्वल नहीं कर पाए। और तो और पं० जवाहरलाल नेहरू अपने साथी मंत्रियों पर अपना उचित अनुशासन नहीं रख सके।

मुस्लिम लीग के उनके साथियों की ढाई ईंट की मसजिद बराबर अलग है। उन्होंने सहयोग की कभी परवा तक नहीं की। ये लोग अपने सहधर्मियों को प्रत्येक प्रकार की सहायता दे सके हैं। उन्हें उत्तेजनाजनक भाषण देने में भी संकोच नहीं है। हमारे कांग्रेस के मंत्रियों ने दुःखी हिंदुओं की हिंदू रूप में कभी सहायता नहीं की। वे हिंदुओं के प्रतिनिधि होने और प्रत्येक अवसर पर ऐसा गिने जाने पर भी सांझे ही बने रहे। पं० जवाहरलाल नेहरू जैसे धुआंधार व्यक्ति केन्द्रीय सरकार का अङ्ग बनकर न जाने क्या हो गए। उनके भीतर की दृढ़ता मानो उनके पद ने खींच ली।

इस कथन की सच्चाई उस भाषण से ही परखी जा सकी है, जो उन्होंने माउंटबेटन- योजना के घोषित होने पर रेडियो पर किया था। उस भाषण में तनिक गर्मी नहीं थी। उनके भाषण की अपेक्षा सरदार बलदेवसिंह का भाषण अधिक मार्मिक था। कारण यह कि अपने सिक्ख भाइयों पर हुए घोर अत्याचारों से उनका मन अत्यन्त व्यथित था। हमारे कांग्रेस-नेताओं के सम्बन्ध में बड़ी कठिनाई यह है कि वे वास्तव में किसी के प्रतिनिधि नहीं। प्रतिनिधि वास्तव में हैं वे हिंदुओं के, पर उनके प्रतिनिधि कहलाने से उन्हें इनकार है, और अन्य भारतीय जातियों के लोग उन्हें अपना प्रतिनिधि स्वीकार नहीं करते।

परिणाम यह है कि जो लोग इन्हें स्वीकार नहीं करते, उन्हें अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए ये अनुचित बातें भी कर गुजरते हैं। अन्तरिम सरकार के एक उच्चतम अधिकारी ने बिहार के दंगाई हिंदुओं पर गोली चलवाई। यह कार्य ठीक ही था। चर्चिल ने भी पार्लमेंट में इसकी प्रशंसा की। पर जब पंजाब के दुःखी लोग उसी के पास रक्षा प्राप्त करने के लिए पहुंचे तो उनसे कहा गया कि हमारे अधिकार सीमित हैं और इस लिए हम कुछ करने में असमर्थ हैं। यह बात गवर्नमेंट का अङ्ग न रहने की अवस्था में कभी न कही जाती। स्पष्ट है कि हिंदुओं की तो नेहरू जी और सरदार पटेल आदि नेताओं के पदग्रहण करने से भी उल्टी हानि ही हुई।

ये लोग गवर्नमेंट से बाहर रहने की दशा में दुःखी और पीड़ित लोगों की अधिक सहायता कर सकते थे। हमें इन लोगों के केन्द्रीय सरकार में जाने से मिला क्या ? हमारे कष्ट तो वैसे ही रहे। औपनिवेशिक स्वराज्य जो आज दिया गया है, वह अब से कई वर्ष पहले मिल रहा था। उस समय देश विभाजन के दुःखदायी दृश्य को देखे बिना ही हम यह दर्जा प्राप्त कर सकते थे। आज वही कुछ मिला है देश के सब प्रकार बरबाद हो जाने के पश्चात्। कांग्रेस इस समय के लाभ पर किसी भी प्रकार गर्व अनुभव नहीं कर सकती।

इसकी तुलना में मुस्लिम लीग ने जो कुछ प्राप्त किया है, वह उसकी अपनी कमाई है, जो उसने गुण्डेशाही के बल पर की है। पंजाब में जो कुछ हुआ, उसके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सम्बन्ध में नेहरू जी स्वयं कह रहे हैं कि वह पहले से सोचे हुए कार्यक्रम का फल है। कांग्रेस हमें यह कहने के लिए क्षमा करें कि राजनीतिक हिंसा का मार्ग भी उसी का बताया है। सन् १९४२ के राजनीतिक उपद्रवों में जो हिंसात्मक क्रियाएं हुई, उनकी उचित सीमाएं त्याग प्रशंसा करने में भारी भूल हुई और इसके पश्चात् श्री सुभाषचन्द्र बोस के सिद्धान्तों को, जिनमें हिंसा वर्जित नहीं थी, कुछ ऐसे ढंग से देशवासियों के सामने लाया गया, जिससे अहिंसा के मार्ग के लिए जनता में निश्चित अश्रद्धा उत्पन्न हुई। गांधी जी के अहिंसात्मक संग्राम के साथ उन उद्देश्यों का कोई मेल नहीं था।

श्री बोस की चलाई लहर से कांग्रेस ने चुनावों में भारी लाभ उठाया। पर ऐसा लाभ उठाने के समय दूरदर्शिता ने यह न सुझाया कि इस मार्ग का अनुसरण अंत में हमें ही हानि पहुंचाएगा। मुस्लिम लीग ने आतंक और उपद्रव उत्पन्न करने के अपने कार्यक्रम के लिए हम ही से सामग्री प्राप्त की और हमारी भूल उनके काम आ गई। लीग ने छ: सात वर्ष के अल्प समय में जो कुछ प्राप्त किया, वह आश्चर्यजनक है। उसके कार्यक्रम में मानवता का नाम तक नहीं और न उसके नेताओं ने सभी मानवी भावों के पक्षपाती होने का ढोंग रचा है। ये लोग अपने सहधर्मियों को उपद्रवों और मारधाड़ के लिए उभारते रहे हैं और इनमें से किसी ने कभी उपद्रवियों की निंदा नहीं की।

हां, उन्होंने उपद्रवियों की प्रशंसा करने का कोई अवसर हाथ से नहीं जाने दिया। ऐसी नीति का मुस्लिम लीग को निश्चित लाभ रहा है। अपने गुंडों की श्रेणी में उसने इसी प्रकार गहरा प्रभाव उत्पन्न किया है। जिन्ना आज इन लोगों के पूज्यदेव हैं। गांधी जी के साथ मिलकर जिन्ना ने शांति के लिए जो अपील जारी की थी, वह वास्तव में शांति के लिए नहीं थी। होती, तो इस अपील के बाद गुंडेशाही का बाजार और गरम न हो जाता। उस अपील के द्वारा जिन्ना केवल अपना मतलब सिद्ध किया चाहते थे, सो वह उन्होंने गांधी जी की सरलता और भोलेपन से लाभ उठा भली भांति कर लिया। जिन्ना एक बार फिर संसार को यह दरसाने में सफल रहे कि गांधी जी यदि हिंदुओं के प्रतिनिधि हैं तो मुसलमानों का एकमात्र प्रतिनिधि होने का मुकुट केवल वही पहन सकते हैं, कोई अन्य नहीं। गुण्डेशाही का चक्कर बराबर चल रहा है और पाकिस्तान शुद्ध रूप से उसी की देन है। ब्रिटिश सरकार और उसके कर्मचारियों तथा पुलिस का इसमें सहायता प्रदान करना अलग बात है।

गांधी जी चौथाई शताब्दी से भी अधिक के अहिंसात्मक संग्राम में जो प्राप्त नहीं कर पाए, वह जिन्ना साहब ने ६-७ वर्ष में प्राप्त कर लिया। यह अपने तौर पर अहिंसा और हिंसा के मध्य एक विचारणीय तुलना है। मुस्लिम लीग अनैतिकता से ाप्त ध्येय को कब तक सुरक्षित रख सकेगी और कब तब नहीं—यह तो समय बताएगा, पर इस समय उसकी विजय हुई है, इतना हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं। जिन्ना और लीग कांग्रेस की उपज हैं। इन्हें बनाने और शक्ति देने में शुद्ध रूप से कांग्रेस और उसके नेताओं का हाथ है। गांधी जी अपनी असीम कुर्बानियों से भी अपने देशवासियों में उतना प्रभाव प्राप्त नहीं कर सके, जितना जिन्ना—कोई भी त्याग किए बिना —अपने सहधर्मियों और विशेषत: उस अनुत्तरदायी श्रेणी में लाभ कर सके हैं जिन्हें साधारण भाषा में गुंडा कहा जाता है। आज जिन्ना इसी श्रेणी के बल-बूते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर जो चाहे कर और करवा सकते हैं। उनके सम्मुख किसी भी विरोधी को दम मारने का साहस नहीं।

मुस्लिम लीग के सब निर्णय उनकी इच्छा के अनुकूल होते हैं। वे चाहें तो किसी को बोलना मिलता है, वे न चाहें तो कोई ऊंची सांस तक नहीं ले सकता। क्या यह हिंसा और आतंकवाद की प्रत्यक्ष विजय नहीं? आज यहां तक कहा जा रहा है कि जिन्ना का खुलम-खुल्ला विरोध करने वाला कोई व्यक्ति दो घण्टे से अधिक जीवित नहीं रह सकता। उपद्रवियों पर उनके असाधारण प्रभाव के विषय में तो कहने वाले यहां तक कहते हैं कि इस क्षण यदि खुदा स्वयं भूमि पर उतरकर उपद्रवियों को मार धाड़ से रुकने का आदेश करें, तो उपद्रवकारी इस आदेश को मानने से पूर्व शायद जिन्ना साहब से पूछना आवश्यक समझेंगे।

यह सच है कि पंजाब और बंगाल के विभाजन के अनन्तर पाकिस्तान की योजना की तीव्रता वैसी नहीं रही जैसी कि ब्रिटिश मंत्रियों की पहली योजना के अधीन हो सकती थी। पर वह कौन सी बात है, जो मुस्लिम लीग के इच्छानुकूल नहीं हुई? पाकिस्तान तो उसे मिला ही, अपनी पृथक् विधान परिषद् भी उसने प्राप्त कर ली। इस विषय में लीग की जिद्द वर्तमान विधान परिषद के अपना बहुत सा कार्य कर लेने के पश्चात् पूर्ण हुई है। ब्रिटेन के प्रधान मंत्री ने पार्लमेंट में घोषित तो यह किया था कि मुस्लिम लीग को 'मन मर्जी करने', अर्थात् 'वीटो' के अधिकार नहीं होंगे, पर क्रियात्मक रूप में उसे ये अधिकार दिए ही गए और वह प्रत्येक उस बात को मनवाने में सफल हुई, जिस पर अड़ने का उसने निश्चय किया था। ब्रिटेन का मुस्लिम लीग को उठाने में निजी स्वार्थ हो सकता है और है। पर कांग्रेस ने भी हिंदुओं के बहुमत के साथ न्याय करवाने का यत्न कहां किया?

चार-पांच करोड़ मुसलमानों की जिद्द के सामने सिर झुकाने को तो वह तैयार हुई, पर उसने इस बात की परवा नहीं की कि भारत के तीस करोड़ हिंदुओं की मांग क्या है। कांग्रेस ने अपने अमल से हिंदुओं की बहुसंख्या को अल्पसंख्या में और मुस्लिम अल्प सख्या को बहुसंख्या में परिवर्तित होने दिया। उसने इस अनहोनी बात का विरोध तो क्या करना था उल्टा उसे साकार होने में सहायता दी। कांग्रेस की यह एक ऐसी भूल है, जिसके लिए उसे कभी क्षमा नहीं किया जा सकता।

कांग्रेस हिंदूओं से शक्ति प्राप्त कर इन्हें जितनी भी हानि पहुंचा सकती थी, पहुंचा चुकी। प्रश्न यह है कि क्या आगे को उससे और अधिक हानि होने की संभावना नहीं? लेखक के मत में देश विभाजन के अनन्तर कांग्रेस के अस्तित्व की आवश्यकता ही समाप्त हो चुकी है। अब उसे या तो अपने सांस्थिक रूप का ही अंत कर देना चाहिए — या अगर वह जीवित रहना चाहती है तो उसे खुले तौर पर यह स्वीकार कर लेना चाहिए कि वह हिंदुओं की संस्था है और इनके हितों की रक्षा ही उसका स्वाभाविक धर्म है।

मुस्लिम और हिंदू, देश के दो साम्प्रदायिक टुकड़े हो जाने के पश्चात् वह अब सांझी संस्था कहलाने का दावा नहीं कर सती। कांग्रेस साम्प्रदायिक आधार पर बंटे हुए भारत में अपना राष्ट्रीय अस्तित्व ईमानदारी के साथ नहीं रख सकती और यदि वह रखती है तो वह ईमानदार नहीं कहला सकती।

कांग्रेस के एक सीधी दृढ़ नीति ग्रहण न करने से भविष्य में कहीं अधिक हानि की संभावना है। देश का एका भंग हो जाने के बाद अब यह आशा नहीं हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकेगी - कम-से-कम कुछ काल के लिए—कि ये दोनों भाग मित्रभाव से निर्वाह कर सकेंगे। ऐसी दशा में गांधी जी की सहयोग की नीति हिन्दुस्तान को अधिक हानि पहुंचाने का कारण होगी—इसमें संदेह नहीं। पाकिस्तान आर्थिक दृष्टि से सफल नहीं हो सकेगा - यह एक मूर्ख भी जान सकता और जानता है। भय है—गांधी जी उस दशा में भी हिन्दुस्तान को यही सलाह देंगे कि वे पाकिस्तान से सहयोग कर उसे सफलता देने में सहायक बने। गांधी जी की सहयोग की नीति केवल अंग्रेजों के सम्बन्ध में ही सफल हो सकती थी। पृथक् राष्ट्र स्थापित हो जाने पर भी उन्हें यह स्वीकार न होगा कि हिन्दुस्तान के द्वार पर पाकिस्तान भूखों मरे अथवा मुसलमान (भाई) कष्ट में रहें। ऐसी नीति निश्चित रूप से घातक सिद्ध होगी। पाकिस्तान के साथ अनैतिकता का व्यवहार करने के लिए कोई नहीं कहेगा, पर शिक्षा और सुरक्षा के उद्देश्य से असहयोग करना हमारा अधिकार है। "जान-बूझ कर" पृथक् हुए भाई से मेल-मिलाप रखना—न रखना—हमारी इच्छा पर है। हमें ऐसा करने के लिए कोई बाध्य नहीं कर सकता। पर गांधी जी की नीति यहां भी हमें स्वतंत्र व्यवहार की आज्ञा नहीं देगी।

हिन्दुस्तान पृथक् हो जाने के पश्चात् भी कांग्रेस और उसके नेताओं से कोई आशाएं बंध न सकेंगी। इसके चिह्न कुछ तो अभी दिखाई देने लगे हैं। कांग्रेस "हिन्दू" शब्द तक की रक्षा नहीं कर सकी। "मुस्लिम" और "अमुस्लिम" शब्दों के सरकारी कागजों में अन्यायपूर्ण प्रयोग को भी वह रुकवा नहीं सकी—वह भला और क्या कर सकती थी। केन्द्रीय सरकार में कांग्रेस के पदार्पण के पश्चात् यह पहला कार्य है, जो होना चाहिए था। एक महान् बहुसंख्यक जाति का नाम तक सरकारी प्रयोग में न हो—यह कितना घोर अन्याय है? उस अन्याय को न्याय में परिवर्तित करना तो दूर रहा, वर्तमान अवस्था में कुछ कांग्रेसी नेता—"हिन्दुस्तान" शब्द ही के विरोधी हो रहे हैं। उन्हें यह शब्द केवल इसलिए स्वीकार नहीं कि इसमें 'हिन्दू' का लेश है। कांग्रेस-नेताओं की ऐसी मनोवृत्ति देखकर जहां विस्मय होता है, वहां एक बात बिलकुल स्पष्ट हो जाती है कि भविष्य में कांग्रेस के नेतृत्व से कोई आशा रखना हिन्दुओं के लिए लाभ का सौदा नहीं होगा। इसलिए उन्हें नया विधान लागू होने से पूर्व ही अपने स्थान पर सावधान हो जाना चाहिए।

हमारी पूर्व और वर्तमान की शोचनीय दशा का विश्लेषण हमें यही बता रहा कि कांग्रेस के ढिलमिल, अदृढ़, अनिश्चित और साहसहीन नेतृत्व ने हमें इस अवस्था को पहुंचाया है और यदि हम सावधान होकर स्वयं अपने जातिगत हितों की रक्षा के लिए तैयार नहीं होंगे तो भय है कि हम आने वाले समय में एक इतने भारी संकट को बुलावा देंगे, जिसकी भयङ्करता की आज हम कल्पना भी नहीं कर सकते।

यह एक चेतावनी है, जिसे ग्रहण करना न करना देशवासियों के अपने बस में है। जो बातें कल हमारी कल्पना में भी नहीं थीं, वे आज हुई हैं और जो आज कल्पना में नहीं हैं, वे कल हो सकती हैं। कांग्रेस का नेतृत्व किसी संकट को रोकने में असमर्थ सिद्ध हुआ है। हमारे यही नेता जो अभी कुछ समय पहले तक छाती ठोंक-कर कहते थे कि देश केवल उनकी लाशों ही पर टुकड़े-टुकड़े किया जा सकेगा—आज कहां हैं? देश तो टुकड़े-टुकड़े हो चुका। ●

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश, धर्म और संस्कृति को बचाना हो तो

उदारतापूर्वक
अधिक से अधिक
धन दान दीजिए

१. अखिल भारतीय हिन्दू सम्मेलन के लिए।
२. मुस्लिम-ईसाई सांप्रदायिकता को कुचलने के लिए।
३. भारत से समाजवाद, साम्प्रदायिकता और सैक्युलरवाद समाप्त करने के लिए।

करोड़ों रुपए चाहिएं
आप नहीं देंगे तो कौन देगा ?

—वेदभिक्षुः
अध्यक्ष, अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
१५६७ हरध्यान सिंह मार्ग, करौल बाग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संग्रह योग्य ग्रंथ

१.	ईश्वर वैज्ञानिकों की दृष्टि में	१५)
२.	सरस्वतीन्द्र जीवन चरित्र	३०)
३.	यज्ञ मीमांसा अर्थात् अग्निहोत्र दर्पण	१५)
४.	संस्कार विधि (सजिल्द)	१०)
५.	सामवेद [आध्यात्मिक भाष्य]	४०)
६.	गीता : योगपरक भाष्य	२५)
७.	प्रकृति और सर्ग	६)
८.	सोम सरोवर—चमूपति	१५)
९.	वेदाञ्जलि—३६५ वेद मंत्रों की व्याख्या	२५)
१०.	महर्षि दयानन्द के जीवनपरक हिन्दी के महाकाव्य (सजिल्द)	१०)
११.	श्रीमद्दयानन्दप्रकाश (सजिल्द)	१५)
१२.	वैदिक समाज व्यवस्था (सजिल्द)	१०)

प्रचार के लिए प्रभावशाली साहित्य

१.	हम १०० वर्ष तक कैसे स्वस्थ रहें ? —डा० धर्मवीर आयुर्वेदाचार्य—	६० पैसे
२.	क्या वेदों में गोमांस खाना लिखा है ? —डा० रामनाथ वेदालंकार एम. ए., पीएच. डी.	६० "
३.	प्राणायाम विधि —महात्मा नारायण स्वामी	८० "
४.	ईश्वरीय पुस्तक में क्या होना चाहिए ? —स्व. प. शिवशंकर काव्यतीर्थ	६० "
५.	स्वास्थ्य का महान् शत्रु 'अण्डा' —जगदीश्वरानन्द सरस्वती	४० "
६.	योग का मार्ग	४० "
७.	मां गायत्री	४० "

मंगाएं और बांटें

दयानन्द संस्थान, वेद मन्दिर, पो. अलीपुर दिल्ली-३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किसान रैली

भोगा हुआ यथार्थ

रेलवे का जंक्शन, बड़ा स्टेशन,
सारे ही यात्री हैरान-परेशान, सारे प्लेटफार्म पर
खाने और पीने का कुछ भी नहीं सामान,
पूछने पर पता चला, पहली ट्रेन वाले आये,
लूट ले गये, पैसे जब मांगे तो धक्के दे गये,
व्यवस्था के नाम अस्त-व्यस्तता फैली है, ये किसान रैली है।

'सदर्न' तीन घण्टा लेट, 'जी० टी०' चार घण्टा लेट,
'जनता एक्सप्रेस' से तो हो ही नहीं पाई भेंट,
गुमसुम खड़ी हैं सब 'एक्सप्रेस' और 'मेल',
थू चली आ रही है चालीस डिब्बों की रेल, डिब्बे भी खाली है,
फिर भी आप उनके अन्दर बैठ नहीं सकते हैं,
क्योंकि उन डिब्बों में जो भी हैं बबाली है,
पुलिस के सिपाही ने यात्री को समझाया,
माना आप इनके साथ बैठ भी जाओगे, कोई गारन्टी नहीं,
सकुशल अपने घर पहुंच भी पाओगे !
देखते नहीं हो इन्हें ? सूरत ही मैली नहीं, सीरत भी मैली है,
ये किसान रैली है।

ये किसान रैली में दिल्ली जा रहे हैं जी,
देश के कोने-कोने से आ रहे हैं जी,
आन-बान-शान, किसी का भी अनुमान नहीं,
भीड़ तो बहुत है पर कोई भी किसान नहीं !
भीड़ का भी कारण है, कोई टिकट नहीं, कोई किराया नहीं,
कहाँ क्या करना है ? किसी ने बताया नहीं,
दिल्ली चलो, भीड़ भरो, नहीं डरो, कुछ भी करो,
पढ़ा-लिखा नौजवान बिल्कुल बेकार है, सारा देश भूखा है
प्राणी लाचार है, यही सोच आये हैं, हफ्ते दो हफ्ते लूट-लूटकर खायेंगे
घण्टे दो घण्टे जय के नारे लगायेंगे, दिल्ली देख आयेंगे,
इनके साथ सत्ता है; धनिकों की थैली है, ये किसान रैली है।
बोगी पर बोगी पर बोगी पर बोगी,
सुनते थे दिल्ली में बड़ी भीड़ होगी !
भीड़ के लोग जय के नारे लगायेंगे,
सुनते ही विरोधी लोग कांप-कांप जायेंगे।
बड़े-बड़े फोटो अखबारों में छपायेंगे,
दुनिया के लोगों को दिखायेंगे-बतायेंगे—
देश का विशाल बहुमत साथ में हमारे है।
देश का भविष्य सिर्फ अपने ही सहारे है !
वाह रे समझदारी ! क्या करे लाचारी ?
आतंकित करने की यह भी एक शैली है। ये किसान रैली है।

—'निर्भय हाथरसी"

जन-ज्ञान (मासिक)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्यसमाज : आत्मबोध की आवश्यकता

—डा. रघुवीर वेदालंकार

प्रत्येक धर्म के दो अंग होते हैं —एक उसके सिद्धान्त अर्थात् सत्य, दूसरा उसकी आचार विधि अर्थात् साधना। इन दोनों की रक्षा के लिए ही किसी संगठन की आवश्यकता होती है। संगठन को समुदाय भी कह सकते हैं। वह संगठन लोगों में वैसा अनुशासन स्थापित कर सकता है, जिसके द्वारा कोई भी सिद्धान्त जीवन्त धर्म का रूप ले लेता है।

संगठन का वृक्ष की छाल की भांति रहना चाहिए, जो वृक्ष के भीतर के गर्भ की रक्षा करती है। संगठन यद्यपि प्रारम्भ में किन्हीं सिद्धान्तों एवं आधार विधि की रक्षा के लिए बनते हैं, किन्तु दुर्भाग्य से कुछ समय बाद में संगठन ही उन सिद्धान्तों एवं आधार विधि की अपेक्षा महत्त्वपूर्ण बन जाते हैं। ये दोनों चीजें गौण बन जाती हैं।

किन्हीं सिद्धान्तों एवं आधार विधि की रक्षा के लिए ही आर्यसमाज की स्थापना हुई थी किन्तु आज ये दोनों चीजें गौण बन गयी हैं। केवल महत्त्वपूर्ण रह गया है आर्यसमाज रूपी संगठन। आज संसार के सभी धर्म अथवा सम्प्रदाय सत्य से विमुख होकर ऐसा मानने लगे हैं कि उनका संगठन, उनका संख्या बल अथवा दूसरे शब्दों में कहा जाए तो उनकी सत्ता ही वास्तव में उनका सत्य है। इसीलिए सभी सम्प्रदाय किंवा संगठन अपनी सदस्य संख्या बढ़ाने एवं अपनी शक्ति प्रदर्शित करने को आतुर दिखलाई देते हैं। उनके सिद्धान्त एवं आधार विधि गौण बनने लगे हैं।

आर्यसमाज की भी यही अवस्था हो गयी है। नये-नये आर्यसमाज मन्दिरों की स्थापना करना, उनकी सदस्य संख्या बढ़ाना, समाजों एवं सभाओं के निर्वाचन करना, पद—अधिकार प्राप्त करके उत्सव—आन्दोलन आदि करना हमारा स्थायी कार्यक्रम बन गया है। यही नहीं, अपितु कभी-कभी तो हम पद— अधिकार को प्राप्त करने के लिए एवं प्राप्त करके झगड़े करने-कराने से भी नहीं चूकते। आज फूट हमें ग्रस रही है।

आज हम अपने समाज मन्दिरों एवं उनकी सदस्य संख्या पर गर्व करते हैं तथा सोचते हैं कि आर्यसमाज का प्रचार पहले की अपेक्षा बढ़ा है। किन्तु हम अपने अन्दर झांककर यह जानने की कोशिश नहीं करते कि हम में आर्यत्व कितना है। आर्यसमाज के सिद्धान्तों एवं आधार विधि का हमारे जीवन से सामञ्जस्य कितना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है ? साधारण सदस्यों की तो बात क्या, समाज के अधिकारियों के जीवन पर भी आर्यत्व की छाप नहीं पड़ती।

तभी तो समाज से पृथक् होते ही उनका जीवन आर्यत्व विहीन हो जाता है। वे समाज के सिद्धान्तों को भूल जाते हैं। यहां तक कि समाज मंदिरों से उनका सम्पर्क भी टूट जाता है। इतना ही नहीं, अपितु समाज के सदस्य एवं पदाधिकारी रहते हुए भी यह अवस्था देखी जाती है। यहां मुझे अपने एक परिचित का यह उदाहरण देना अनुपयुक्त नहीं लगता, जो सात वर्ष तक किसी समाज के मन्त्री रहे। स्थान परिवर्तन होने पर उस समाज से सम्बंध छूट जाने पर किसी नये समाज मंदिर से न तो उन्होंने कोई सम्पर्क बनाया तथा न ही आर्यसमाज की कोई छाप अपने ऊपर रखी।

इतना ही नहीं, गोमांस को छोड़ कर अन्य मांसादि का प्रयोग वे सहजभाव से कर लेते हैं। वे मन्दिर में मूर्ति पूजने भी जाने लगे हैं। एक नई कालोनी में आर्यसमाज मन्दिर की स्थापना का विचार चल रहा था। इसके लिए कुछ आर्य बन्धुओं ने मिलकर घरों पर साप्ताहिक संतसग लगाना प्रारम्भ किया। यज्ञ के तुरन्त पश्चात् सड़क पर खड़े होकर बातचीत करते हुए उनमें से दो ने सिगरेट सुलगाली। मेरे द्वारा यह पूछने पर कि क्या ये भी समाज के सदस्य हैं, प्रधान जी ने कहा कि इनमें से एक तो अधिकारी भी हैं।

इनके अतिरिक्त अन्य अधिकारियों में शराबी तथा मांसाहारी भी हैं। यदि इन्हें अधिकारी न बनाया गया तो हमारा संगठन छोटा रह जायेगा। अनेक समाजों में ऐसा ही है। प्रश्न है कि क्या आवश्यकता है आर्यसमाज के नाम से ऐसा संगठन बनाने की, जब जीवन में आर्यत्व न हो। आर्यसमाज के सदस्य अथवा अधिकारी बनाते समय हमने पात्र-कुपात्र का विचार सर्वथा ही छोड़ दिया है।

आर्यसमाज का मुख्य दायित्व धार्मिक, साहित्यिक एवं सामाजिक क्षेत्र में क्रान्ति करना था किन्तु वह अपने लक्ष्य से पिछड़ गया। हमारे देखते-देखते ही अन्य नवीन सम्प्रदायों तथा धर्म गुरुओं का जन्म हुआ। जन्म ही नहीं, उनका प्रचार, उन की सदस्य संख्या आर्यसमाज से कहीं अधिक है। आदिवासियों के धर्मपरिवर्तन द्वारा ईसाई अपना काम पहले से भी अधिक जोरों से कर रहे हैं। यद्यपि इधर आर्यसमाज जागरूक है, किंतु सफलता बहुत कम प्राप्त हुई है गुण, कर्म और स्वभाव के आधार पर वर्णव्यवस्था एवं उसके आधार पर विवाह आदि सम्बन्धों को आर्यसमाज अपने अंदर तो प्रचलित नहीं कर सका; हाँ, उसने घरवालों की सहमति के बिना घर से भागने वाले प्रेमी युवक-युवतियों के विवाह कराने अवश्य प्रारम्भ कर दिये हैं। इस दृष्टि से आर्यसमाज युवक-युवतियों का आकर्षक केन्द्र अवश्य है।

आजकल आर्यसमाजों एवं सभाओं के स्थायी कार्यक्रम उत्सव एवं साप्ताहिक सत्संग रह गये हैं। दोनों प्रभावहीन हैं। साप्ताहिक सत्संगों में न तो वे व्यक्ति आते हैं, जिन्हें हम आर्य बनाना चाहते है तथा न हमारे आर्य परिवारों के युवक आते हैं। उत्सवों, सम्मेलनों का स्थायी प्रभाव नहीं रहता। वह भी उस अवस्था में और कम हो जाता है, जब ऐसे अवसरों पर आर्यत्व विहीन राजनेताओं की पूछ होने लगती है।

अब आवश्यकता है कि हम जनता के बीच में जाकर प्रचार करें। गैर-आर्यसमाजी जनता ने हमारे प्रचार में आना बन्द कर दिया है। हमें उनके अन्दर जाना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होगा। अनेक पार्कों तथा खुले स्थानों में सनातन धर्म आदि की कथाएं होती हैं—सत्संग लगते हैं। आर्यसमाज को भी ऐसा करना चाहिए।

आज युवक किसी भी समाज अथवा संगठन के प्राण होते हैं। उनके ऊपर ही संगठन का भविष्य निर्भर करता है। युवक वर्ग आर्यसमाज से दूर होता जा रहा है। आर्यसमाज उसे संगठित करने तथा संभालने की कोई योजना भी नहीं बना रहा। आर्यसमाज के पास युवकों के लिए कोई प्रोग्राम नहीं है।

आर्य संस्थाओं में गैर-आर्यसमाजी, आर्यत्व विहीन, आर्यसमाज विरोधी व्यक्ति नौकरियां करते हैं तथा आर्य युवक उन पदों के सर्वथा योग्य होने पर भी इधर उधर भटकते हैं। क्या हम इतना भी नहीं कर सकते कि अन्य अर्हताओं का ध्यान रखते हुए हम अपनी संस्थाओं में आर्यसमाजी व्यक्तियों को प्राथमिकता दें। दूसरे संगठन ऐसा करते हैं। आर्यसमाज बेरोजगार तथा रोजगार में लगे युवकों के लिए भी आर्यसमाज के प्रोग्राम बना सकता है कि रोजगार वाले युवकों से वर्ष में एक मास या कुछ दिन निःशुल्क सेवा प्राप्त करे तथा बेरोजगारों को निर्वाहार्थ उचित देकर समाज की सेवा में लगाए।

कहा जाता है कि इस प्रकार की बातें तो आपस में बैठक करनी चाहिएं, सामाजिक रूप में नहीं। किंतु क्या कभी बैठकर ऐसा विचार किया भी जाता है? किसी भी धर्म, सम्प्रदाय अथवा संगठन में न्यूनताए आना समय की देन होती है, किंतु उन न्यूनताओं को आत्मालोचन से ही दूर किया जा सकता है। आइए, हम भी इस प्रकार का आत्मबोध प्राप्त करे। ●

भारी संख्या में मंगाएं

१. हिन्दुओं को चेतावनी	४० पैसे
२. इस्लामी साम्राज्यवाद की चुनौती	८० "
३. पोप की सेना का भारत पर हमला	४० "
४. क्या ईसा खुदा का बेटा था?	४० "
५. ईसाई मत खण्डन	४० "
६. पादरियों को चुनौती	२० "
७. BIBLE IN THE BALANCE	६० "
८. A Challenge to the Christian Faith	२० "
९. और पादरी भाग गया	४० "
१०. मुसलमानों का क्या किया जाए?	४० "
११. बाईबिल को चुनौती	४० "
१२. क्या सारा भारत दारुल इस्लाम बनेगा?	४० "

एक हजार ट्रैक्ट मंगाने पर ५० प्रतिशत की छूट

अ. भा. हिन्दू रक्षा समिति, वेद मन्दिर, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्या आप हिन्दू हैं ?

क्या आप को अपने धर्म, संस्कृति
और परम्पराओं पर अभिमान है ?

क्या आप अपना सभी कुछ बचाने की
भावना रखते हैं ?

यदि आपका उत्तर हां में
हो तो

आज ही

अखिल भारतीय
हिन्दू रक्षा समिति
के स्वयं सदस्य बनें

और

अपने नगर में हिन्दू रक्षा
समिति स्थापित करें

हिन्दू जागें ! देश बचाएं

दूरभाष— ५६२६३६
५६६८६१

मंत्री, अ० भा० हिन्दू रक्षा समिति,
वेद मंदिर, नई दिल्ली-१०००५

मुद्रक : प्रकाशक-सम्पादक पण्डिता राकेशरानी के लिये आर्यधन प्रिंटिंग एजेन्सी
द्वारा सैनी प्रिन्टर्स, पहाड़ी धीरज दिल्ली-६ में छपा ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हिन्दू - रक्षा - समिति
को
उदारता पूर्वक
दान दीजिए।

लक्ष्य पूर्ति के लिए

करोड़ों रुपए चाहिएं।

साहित्य बांटिए : आगे बढ़िए
काम कीजिए : जीवन दीजिए

गौ-गंगा-गायत्री
की रक्षा कीजिए

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति
१५६७ हरध्यानसिंह मार्ग, करौलबाग, नई दिल्ली-५

मुद्रक-प्रकाशक-संपादक पं० राकेशरानी द्वारा
नरेन्द्र प्रेस दिल्ली में छपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक) P. O. अलीपुर दिल्ली-३६	वैशाख २०३६	D-C-201 R.N. 107119/65

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष

महात्मा वेदभिक्षुः

आपका ५३ वां जन्म दिन १४ मार्च को अजमेर में हिन्दू रक्षा सम्मेलन में मौन भाव से संपन्न हुआ। ६ माह में देश में हिन्दू-रक्षा की भावना उत्पन्न कर आप पूरी शक्ति से धर्म रक्षा में लगे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi